इन्दिरा गांधी
राष्ट्रीय मानव संग्रहालय
Indira Gandhi
Rashtriya Manav Sangrahalaya

वार्षिक प्रतिवेदन
Annual Report
2014-15

वार्षिक प्रतिवेदन 2014.15
Annual Report 2014-15

©
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, शामला हिल्स, भोपाल–462013 (म.प्र.) भारत
Indira Gandhi Rashtriya Manav Sangrahalaya, Shamla Hills, Bhopal-462013 (M.P.) India

राष्ट्रीय मानव संग्रहालय समिति
(सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट XXI of 1860 के अंतर्गत पंजीकृत)
के लिए
निदेशक, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय,
शामला हिल्स, भोपाल द्वारा प्रकाशित

Published by
Director, Indira Gandhi Rashtriya Manav Sangrahalaya,
Shamla Hills, Bhopal
for Rashtriya Manav Sangrahalaya Samiti
(Registered under Society Registration Act XXI of 1860)

निःशुल्क वितरण के लिए
For Free Distribution

मुख पृष्ठः **पारम्परिक परिधान में सुसज्जित लद्दाखी महिलाएं।**
Cover Page: **Ladakhi women adorned with traditional attire.**

अंतिम पृष्ठः **डॉ. नील मैकग्रेगर, निदेशक, ब्रिटिश संग्रहालय, लंदन द्वारा संग्रहालय की मुक्ताकाश प्रदर्शनी जनजातीय आवास का भ्रमण।**
Back Page: **Visit to Museum's Open Air Exhibition the Tribal Habitat by Dr. Neil Macgragor, Director, British Museum, London.**

छायाचित्र : छाया अनुभाग
Photographs : Photography Section

सामग्री संकलन एवं अनुवाद : डॉ. सूर्य कुमार पांडे, श्रीमती गरिमा आनंद, श्री सकमाचा सिंह
Text Compilation & Translation : Dr. Surya Kumar Pandey, Smt. Garima Anand & Shri Sakmacha Singh

आकल्पन : के. शेषाद्री, कम्प्यूटर अनुभाग, इंगांरामासं
Designed and composed : K. Seshadri, Computer section, IGRMS

टंकण कार्यः आई. वानखेड़े
Text keying : I. Wankhede

मुद्रण : म. प्र. माध्यम, भोपाल
Printed at : MP Madhyam, Bhopal

सूची / Index

विषय Contents		पृष्ठ क्र. Page No.

निदेशक का संदेश — **05**
Message from Director

सामान्य परिचय — **07**
General Introduction

1. अधो संरचनात्मक विकास : (संग्रहालय संकुल का विकास) — **09**
Infrastructure Development: (Development of Museum Complex)
   - 1.1. प्रदर्शनियाँ / Exhibitions — 09
   - 1.2. आर्काइवल स्त्रोतों में अभिवृद्धि / Strengthening of archival resources — 17

2. शैक्षणिक एवं आउटरीच गतिविधियाँ/ — **19**
Education & Outreach Activities
   - 2.1. 'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम / 'Do and Learn' Museum Education Programme — 19
   - 2.2. कलाकार कार्यशालाएं / Artist Workshops — 23
   - 2.3. संगोष्ठियाँ/परिसम्वाद/कार्यशालाएं Seminars/Conferences/Workshops — 30
   - 2.4. संग्रहालय लोकरूचि व्याख्यान / Museum Popular Lectures — 34
   - 2.5. वार्षिक इंगांरामासं व्याख्यान / Annual IGRMS Lecture — 34
   - 2.6. प्रस्तुतिकारी कलाओं का प्रदर्शन/ Performing Art Presentations — 36
   - 2.7. प्रकाशन /Publications — 44
   - 2.8. अन्य विशेष गतिविधियाँ / Other Special Activities — 45

सूची / Index

विषय Contents			पृष्ठ क्र. Page No.
3.	ऑपरेशन साल्वेज/ Operation Salvage		**57**
	3.1.	संकलन द्वारा साल्वेज / Salvage through Collection	57
	3.2.	क्षेत्रकार्य द्वारा साल्वेज / Salvage through Field Work	57
	3.3.	राष्ट्रीय टैगोर फैलोशिप/स्कॉलरशिप / Tagore National Fellowship /Scholarship	58
4.	दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, मैसूर / Southern Regional Centre, Mysore		**59**
5.	पूर्वोत्तर भारत की गतिविधियाँ / Activities for North-Eastern India		**63**
6.	सुविधा इकाईयाँ / Facility Units		**69**
7.	लेखा परीक्षा प्रतिवेदन एवं लेखे (2014-15) / Audit Report and Annual Accounts (2014-15)		**73**
	7.1.	वर्ष 2014–15 के लेखे पर लेखा परीक्षा प्रतिवेदन एवं प्रमाण पत्र Audit Report and Audit Certificate on the accounts for the year 2014-15	74
	7.2.	वर्ष 2014–15 के लिए वार्षिक लेखा Annual Accounts for the year 2014-15	79
8.	अनुलग्नक / Annexures		**105**
	8.1.	राष्ट्रीय मानव संग्रहालय समिति के सदस्य Members of Rashtriya Manav Sangrahalaya Samiti(RMSS)	107
	8.2.	राष्ट्रीय मानव संग्रहालय समिति की कार्यकारी परिषद के सदस्य Members of the Executive Council of Rashtriya Manav Sangrahalaya Samiti	109
	8.3.	कार्यकारी परिषद की वित्त समिति के सदस्य Members of the Finance Committee of the Executive Council	111

निदेशक का संदेश
Message from Director

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, जो कि विश्व के श्रेष्ठतम मानवशास्त्रीय संग्रहालयों में से एक है, भारत में सांस्कृतिक विविधता को समारोहित करने तथा राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित करने के अपने मूल उद्देश्य के प्रति संकल्पित है। यह संग्रहालय मैसूर में एक केंद्र (दक्षिण क्षेत्रीय केंद्र) के साथ भोपाल में स्थित है, इस संग्रहालय ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में विस्तृत अपनी गतिविधियों का नियोजन अत्यंत सावधानीपूर्वक किया है। यह वार्षिक प्रतिवेदन हमारे द्वारा कलाकार कार्यशालाओं, आउटरीच गतिविधियों, सामयिक तथा विशेष प्रदर्शनियों, वाचिक तथा प्रस्तुतिकारी परम्पराओं के वृहद प्रलेखन के द्वारा अपनी मुक्ताकाश तथा अंतरंग दीर्घाओं के विकास तथा भारतीय सभ्यता के मौलिक सांस्कृतिक मूल्यों के पुनर्जीवीकरण हेतु की गई बहुविधि गतिविधयों के प्रतिबिम्बन का प्रयास है। हमारा विश्वास है कि इन गतिविधियों के जरिये हम देश और रज्य की राजनैतिक सीमाओं से कहीं

Indira Gandhi Rashtriya Manav Sangrahalaya, which is perceived as one of the finest ethnographic museum of the world, is deeply committed to its core mandates: celebration of cultural diversity of India and promoting national integration. Through this national museum is located in Bhopal with a centre in Mysore (Southern Regional Centre), it carefully crafted its various activities spread over different regions of our nation. This annual report is a testimony to reflect on various kinds of activities we did to strengthen our open and indoor galleries and to revitalize various core cultural values of Indian civilization through artist workshops, outreach programmes, periodical as well as special exhibitions, research and extensive documentation of oral and performing traditions. Infact, we intend to build up a circular dialogue with past,

आगे निकल चुकी मानवीय प्रगति की भूत, वर्तमान और भविष्य की यात्रा के बीच एक चक्रीय सम्वाद स्थापित कर सकते हैं।

इंगांरामासं भारत में जहाँ कि हमारे लोक अथवा जनजातीय समुदाय अपने जीवन उपयोगी भविष्य का स्वप्न संजोए हुए हैं, नव संग्रहालय आंदोलन का प्रतीक है । यह संग्रहालय पूर्वोत्तर भारत के लोगों के लिये उनके सृजनात्मक ज्ञान और सौन्दर्य बोध पर आधारित एक झरोखे का सृजन पहले ही कर चुका है। हमारा यथेष्ठ प्रयास है कि डिजिटल व सोशल मीडिया के क्षेत्र में अपने भ्रमणार्थियों, अपने दर्शकों तथा मित्रों की अपेक्षाओं पर अपने प्रयासों से खरे उतरें। हम आशान्वित हैं कि हमारे सम्मिलित प्रयासों और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से हम नव वर्ष में इस सार्वजनिक स्थल को मूल सभ्यतागत मूल्यों के पुनर्जीवीकरण तथा शिक्षा के एक स्थल के रूप में निर्मित करते हुए पहुँचेंगे।

स. चौधुरी

प्रो. सरित कुमार चौधुरी
निदेशक, इंगांरामासं, भोपाल

present and future journey of human progress which is expanded much beyond the political boundaries of a nation-state.

IGRMS symbolises new museum movement in India where our tribal or folk communities nurture their dream for a sustainable future. It has already created a niche for the people of North-East India based on their creative genius and aesthetic sensibilities. We are trying our best to live up to the expectation of our visitors, viewers and friends by strengthing our inputs in digital domain and social media. We are optimistic that through our collective endeavors and support from the Ministry of Culture, Govt. of India, we will excel in New Year by making this public space as space for learning and revitalization of core civilizational values.

Prof. Sarit Kumar Chaudhuri
Director, IGRMS, Bhopal

सामान्य परिचय
General Introduction

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के एक स्वायत्तशासी संस्थान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, (नेशनल म्यूज़ियम ऑफ मेनकाइंड) ने मार्च 1977 में नई दिल्ली में संस्कृति विभाग के एक अधीनस्थ कार्यालय के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया। 1979 के प्रारंभ में मध्यप्रदेश राज्य शासन से 200 एकड़ का परिसर आबंटित होने पर यह संस्थान भोपाल स्थानांतरित किया गया। मार्च 1985 में संग्रहालय का दर्जा एक 'अधीनस्थ कार्यालय' से स्वायत्तशासी संस्थान का किया गया तथा संग्रहालय के कार्यक्रमों और गतिविधियों के पर्यवेक्षण और नियंत्रण का दायित्व 'राष्ट्रीय मानव संग्रहालय समिति' को सौंपा गया। कालक्रम में संग्रहालय के विस्तार केंद्र के रूप मे दक्षिण क्षेत्रीय केंद्र ने कर्नाटक राज्य सरकार द्वारा आबंटित धरोहर भवन 'वेलिंगटन हाउस' से मैसूर में अक्तूबर 2001 से कार्य करना प्रारंभ किया।

संग्रहालय के उद्देश्यों में सम्मिलित हैः भारत के सांस्कृतिक प्रतिमानों की विविधता और समृध्दता तथा उसमें अंतर्निहित एकता को प्रकाशित करते हुए अपनी मुक्ताकाश तथा अंतरंग प्रदर्शनियों के माध्यम से मानव जाति के जैव–सांस्कृतिक उद्‌विकास की समेकित गाथा का प्रस्तुतिकरण, संग्रहालय विज्ञान में शोध और प्रशिक्षण के केन्द्र के रूप में कार्य करना तथा भारत में नव संग्रहालय आन्दोलन की शुरूआत करना एवम् सांस्कृतिक जीवन की विविधता को संरक्षित और प्रस्तुत करना। इंगांरामासं राष्ट्रीय एकता तथा विलुप्त प्राय किन्तु बहुमूल्य सांस्कृतिक परम्पराओं के संरक्षण व पुनर्जीवीकरण हेतु अंतर्संगठनात्मक नेटवर्किंग तथा शोध व प्रशिक्षण को बढावा देने हेतु भी कार्यरत है।

विभिन्न समुदायों से विशेषज्ञों तथा पारम्परिक कलाकारों की सक्रिय सहभागिता से निर्मित मुक्ताकाश तथा अंतरंग प्रदर्शनियॉं तथा देश के विभिन्न भागों में शैक्षणिक एवं आउटरीच गतिविधियॉं संस्थान के अभिनव पक्ष हैं। अपनी प्रदर्शनियों, शैक्षणिक कार्यक्रमों तथा साल्वेज गतिविधियों के माध्यम से इंगांरामासं भारत की पारंपरिक जीवन शैली की सौन्दर्यात्मक विशेषताओं, लोगों के स्थानीय पारंपरिक ज्ञान एवं नैतिक मूल्यों की आधुनिक समाज के साथ सतत प्रासंगिकता को प्रदर्शित करने के साथ ही लोगों को पारिस्थितिकी तथा पर्यावरण, स्थानीय मूल्यों और परंपराओं के अभूतपूर्व विनाश के प्रति सचेत कर रहा है।

संग्रहालय के कार्यक्रम एवं गतिविधियां तीन प्रमुख उपयोजनाओं के अंतर्गत संचालित होती हैः

1. **अधो संरचनात्मक विकास :**
   (संग्रहालय संकुल का विकास),
2. **शैक्षणिक एवं आउटरीच कार्यक्रम, तथा**
3. **ऑपरेशन साल्वेज ।**

संग्रहालय द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में असम के कलाकारों द्वारा सत्रीय नृत्य की प्रस्तुति।
Performance of Satriya dance by the artists from Assam in a programme organised by the Museum.

Indira Gandhi Rashtriya Manav Sangrahalaya (IGRMS)/ (National Museum of Mankind), an autonomous organization of the Ministry of Culture, Government of India, began functioning since March, 1977 as a 'Subordinate Office' of the Department of Culture, at New Delhi. By early 1979, the establishment was shifted to Bhopal on allotment of a 200 acre campus by the State Government of Madhya Pradesh. The status of the Museum was converted from the 'Subordinate Office' into an Áutonomous Organisation in March 1985, and the 'Rashtriya Manav Sangrahalaya Samiti' was entrusted to control and supervise the programmes and activities of the Sangrahalaya. Subsequently as an extention of the Sangrahalaya, Southern Regional Centre at Mysore started functioning since October, 2001 from a heritage building 'Wellington House' allotted by the Government of Karnataka.

The mandate of the Sangrahalaya include: presentation of an integrated story of bio-cultural evolution of humankind through outdoor and indoor exhibitions by highlighting the richness and diversity of cultural patterns of India and its underlying unity; to act as a centre of research and training in museology and generate a new museum movement in India and to present and preserve variety of cultural life. IGRMS is also working for national integration, and promote research & training and inter-organizational networking for salvage and revitalization of vanishing, but valuable cultural traditions.

The innovative aspects of the organisation are its open-air and indoor exhibitions, built with active involvement of traditional artisans and experts drawn from different community groups, and the education, outreach & salvage activities in different parts of the country. Through its exhibitions, education programmes and salvage activities, IGRMS demonstrates the aesthetic qualities of India's traditional life styles, and the continued relevance of local traditional knowledge and mores of people to the modern society and cautions the people against unprecedented destruction of ecology and environment, local values and customs.

The programmes and activities of the organisation are carried out under three sub-schemes namely:

1. **Infrastructure Development :**
   (Development of Museum Complex),
2. **Education and Outreach Programme and**
3. **Operation Salvage.**

संग्रहालय द्वारा आयोजित एक कलाकार कार्यशाला में भील कलाकार द्वारा 'हाथ की छाप' के रूप में प्रतिनिधित्व।
Representation by Bhil artists with hand prints in an artist workshop organised by the Museum.

1

अधो संरचनात्मक विकास :
संग्रहालय संकुल का विकास

Infrastructure Development :
(Development of Museum Complex)

वर्ष 2014 – 2015 के दौरान क्रियान्वित गतिविधियों पर प्रतिवेदन निम्नांकित हैं :

1.1. **प्रदर्शनियाँः** क्यूरेटोरियल विंग के सदस्य विभिन्न मुक्ताकाश प्रदर्शनियों जैसे *जनजातीय आवास, हिमालय ग्राम, तटीय गांव, मरू ग्राम, नदी घाटी संस्कृतियाँ, विश्व बोध एवं कथा पथ, शैलकला धरोहर, पारंपरिक तकनीक, तथा पुनीत वन* के संधारण एवं उन्नयन कार्य तथा अंतरंग संग्रहालय *वीथि संकुल* में नवीन प्रदर्शनी स्थलों के विकास में संलग्न रहे।

1.1.1. **मुक्ताकाश प्रदर्शनियाँः**

1.1.1.1. **नवीन प्रादर्शों की अभिवृद्धिः** संग्रहालय भोपाल स्थित अपनी मुक्ताकाश प्रदर्शनियों में सांस्कृतिक विविधता के भाग के रूप में भारत की स्थापत्य विविधता को प्रदर्शित करने का योजनाबद्ध प्रयास कर रहा है।

अवधि के दौरान संग्रहालय परिसर में निम्नांकित छः प्रादर्श स्थापित किये गये।

वनदेवीर थान : 'पश्चिम बंगाल के सुन्दर वन डेल्टा से वनदेवी के पारंपरिक देवस्थान को संग्रहालय की मुक्ताकाश प्रदर्शनी मिथक पथ में प्रादर्श के रूप में स्थापित किया गया। (अप्रेल, 2014)

इन्न–की : मणीपुर की मारिंग जनजाति के संस्कार गृह को मणीपुर के मारिंग कलाकारों के समूह द्वारा संग्रहालय की मुक्ताकाश प्रदर्शनी जनजातीय आवास में सफलतापूर्वक जोड़ा गया। 'इन्न–की' मारिंग लोगों द्वारा यायाओं पर्व मनाते समय बनाये जाने वाले अनुष्ठान गृह का पारम्परिक नाम है। (सितम्बर, 2014)

समादि : असम के तिवा समुदाय का युवागृह जनजातीय आवास मुक्ताकाश प्रदर्शनी में स्थापित किया गया। (नवम्बर, 2014)

नो–बारो : असम के तिवा समुदाय का आवास प्रकार जनजातीय आवास मुक्ताकाश प्रदर्शनी में स्थापित किया गया। (नवम्बर, 2014)

चान्सा : लेह, लद्दाख से कलाकारों के एक दल ने संग्रहालय की मुक्ताकाश प्रदर्शनी हिमालय ग्राम में लद्दाख के पारंपरिक रसोई घर का निर्माण किया। (जनवरी, 2015)

माने : लेह, लद्दाख के कलाकारों द्वारा हिमालय ग्राम मुक्ताकाश प्रदर्शनी में एक विशालकाय बौद्ध प्रार्थना चक्र प्रादर्श स्वरूप स्थापित किया गया। (जनवरी, 2015)

The report of activities carried out during the year 2014 -15 is given below:

1.1. **Exhibitions:** Members of the Curatorial Wing were engaged in updating and maintenance of different open-air exhibitions entitled *Tribal Habitat, Himalayan Village, Coastal Village, Desert Village, River-valley Cultures, Cosmology and Narrative Trail, Rock Art Heritage, Traditional Technology and Sacred Groves,* and also in developing new display spaces in the *Veethi Sankul* – the Indoor Museum.

1.1.1. **Open Air Exhibitions:**

1.1.1.1. **Addition of New Exhibits:**

The museum is making systematic efforts to showcase the architectural diversity of India as part of cultural diversity in its open air exhibitions at Bhopal.

During the period following Six exhibits were installed at Museum premises.

Van Devir Than: Traditional Shrine of forest deity from Sunderban Delta, West Bengal was installed as an exhibit in Mythological trail open air exhibition of the Museum.(April,2014)

Inn-ki: A Ceremonial house of the Maring tribe of Manipur was succesffuly added in the Tribal Habitat open air exhibition of the Museum by a group of Maring artists from Manipur. Inn-ki is the traditional term for the ceremonial house prepared by Maring people at the time of celebrating Yayao festival.(September,2014)

Samadi: A Youth dormitory of the Tiwa community of Assam was installed at the Tribal Habitat open air exhibition.(November, 2014)

No-baro: House type of Tiwa community of Assam was installed at Tribal Habitat open air exhibition.(November, 2014)

Chansa: A team of artists from Leh, Ladakh constructed a traditional Kitchen of Ladakh as an exhibit at Himalayan village open air exhibition of the Museum.(January, 2015)

Mane: A huge size Buddhist prayer wheel was installed in the Himalyan village open air exhibition by the artists from Leh, Ladakh. (January, 2015)

संग्रहालय में प्रादर्श स्वरूप इन्न–की का निर्माण और उद्घाटन।
Installation and inauguration of Inn-ki as an exhibit in museum.

ढोकरा कलाकारों द्वारा संग्रहालय की मुक्ताकाश प्रदर्शनी पारम्परिक तकनीक में धातु प्रगलन तकनीक का प्रदर्शन व संबंधित प्रादर्श की स्थापना।
Demonstration of metal casting teachnique and installation of related exhibit by Dhokara artists in Museums open air exhibition Traditonal Technology.

मणीपुर के मारिंग समुदाय के कलाकारों द्वारा इन्न–की का अनुष्ठानिक उद्घाटन।
Ceremonial inauguration of Inn-ki by artists of Maring community of Manipur.

तिवा जनजाति के कलाकारों द्वारा संग्रहालय में नोबारो निर्माण के पूर्व अनुष्ठान।
Ritual before the construction of 'Nobaro' by Tiwa artists in the Museum.

चांसा– मुक्ताकाश प्रदर्शनी हिमालय ग्राम में लेह, लद्दाख की पारम्परिक रसोई का बाहरी एवं भीतरी दृश्य।
Chansa- external view & inner view of traditional Kitchen from Leh, Ladakh in the open air exhibition Himalayan Village.

माने–मुक्ताकाश प्रदर्शनी हिमालय ग्राम में प्रादर्श स्वरुप बौद्ध प्रार्थना चक्र।
Mane-Buddhist Prayer wheel as an exihibit in the open air exhibition Himalayan Village

मिथक पथ मुक्ताकश प्रदर्शनी में वनदेवीर थान का उद्घाटन दृश्य। *Inaugural view of Vandeveer Than in the Mythological trail open air exhibition.*

ढोकरा कलाकारों द्वारा संग्रहालय परिसर में प्रदर्शन के दौरान निर्मित स्थानीय देवी की मूर्ति।
An image of local deity produced by the Dhokara artists during demonstration in Museum premises.

मुरिया कलाकारों द्वारा संग्रहालय परिसर में बस्तर के दशहरा रथ का रिस्टोरेशन कार्य।
Restoration work of the Dussehra Rath of Bastar by the Muria artists in the Museum premises.

1.1.2. **वीथि संकुल – अंतरंग प्रदर्शनी भवन**

1.1.2.1. **डीएनए डबल हैलिक्स :** वीथि संकुल की दीर्घा क्रमांक 1 में एक प्रादर्श स्थापित किया गया। यह अंतर्क्रियात्मक प्रादर्श राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, कोलकाता के सहयोग से विकसित किया गया है। (जुलाई, 2014)

1.1.2.2. **दर्शक सुविधाएँ :** अपनी प्रदर्शनियों को समाज के प्रत्येक वर्ग हेतु सुगम तथा दर्शकों के अनुकूल बनाने के प्रयासों के क्रम में संग्रहालय की मुक्ताकाश प्रदर्शनी पारम्परिक तकनीक में ऑडियो गाइड सुविधा की शुरूआत की गई। इस प्रदर्शनी में द्विभाषी ब्रोशर, सभी प्रादर्शों पर द्विभाषी सूचना पट्टिकाएँ, संकेतक तथा पेयजल सुविधाएँ भी उपलब्ध करायी गई। संग्रहालय की मुक्ताकाश प्रदर्शनी मिथक पथ में नवीन अभिवृद्धियों तथा परिष्कृत संकेतकों के साथ मार्गदर्शी मानचित्र उपलब्ध कराया गया।

1.1.2.3. **ममत्व :** अंतरंग संग्रहालय भवन वीथि संकुल में शिशुओं के साथ आने वाली महिला दर्शकों हेतु मूलभूत सुविधाओं के साथ मदर्स कॉर्नर का विकास किया गया ।

1.1.3. **अस्थायी एवं घुमन्तु प्रदर्शनियाँ :** समीक्षावधि के दौरान निम्नलिखित चौबीस सामयिक एवं घुमन्तु प्रदर्शनियाँ भोपाल तथा भारत के अन्य स्थानों पर विकसित एवं प्रदर्शित की गईं।

1.1.3.1. **झरोखा :** पश्चिम मध्य रेल्वे, जबलपुर के सहयोग से एक छायाचित्र प्रदर्शनी का संयोजन जबलपुर में किया गया। (अप्रेल, 2014)

1.1.3.2. **सहजोग यात्रा :** इंगांरामासं तथा भारतीय रेल के सहयोगी प्रयासों स्वरूप एक छायाचित्र प्रदर्शनी की गोंडवाना तथा रेवांचल एक्सप्रेस में सफलतापूर्वक शुरूआत की गई। (अप्रेल, 2014)

1.1.3.3. **सोहांग :** अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर महाराष्ट्र की कोंकणा जनजाति के विशेष संदर्भ में मुखौटों पर एक विशेष प्रदर्शनी आयोजित की गई। (मई, 2014)

1.1.3.4. **पुनीत वन :** इंगांरामासं द्वारा ऊर्जा तथा पर्यावरण अध्ययन विभाग, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर में भारत के पुनीत वनों पर एक छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर किया गया। प्रदर्शनी भारत के विभिन्न समुदायों द्वारा पर्यावरण संरक्षण हेतु अपनाये गये पारम्परिक विश्वासों और अभिक्रियाओं पर केंद्रित थी। (जून, 2014)

1.1.3.5. **कविता रचते छायाचित्र :** संग्रहालय अभिलेखागार से चयनित छायाचित्रों की एक प्रदर्शनी संग्रहालय में सम्पन्न हुई। प्रदर्शनी का आयोजन श्री रवि श्रीवास जो इंगांरामासं से सहायक क्यूरेटर (डिस्प्ले) के रूप में सेवानिवृत हुए हैं के द्वारा खींचे गये चित्रों की स्मृतियों को संजोने हेतु किया गया। (जुलाई, 2014)

1.1.3.6. **धरोहर झरोखा :** भारत में लोक व जनजातीय जीवन को दर्शाती एक छायाचित्र प्रदर्शनी शिक्षक दिवस के अवसर ग्लोबल इन्टर नैशनल पब्लिक स्कूल, डबरा, ग्वालियर में संयोजित की गई। (सितम्बर, 2014)

1.1.3.7. **देशाटन :** भारत की अल्पज्ञात क्षेत्रीय संस्कृतियों को उजागर करती एक विशेष प्रदर्शनी का उद्घाटन डॉ. पी.जे. सुधाकर, अतिरिक्त महानिदेशक, पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार द्वारा विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर किया गया। (सितम्बर, 2014)

1.1.3.8. **अरघ :** संग्रहालय द्वारा छठ पर्व पर केंद्रित 46 छाया चित्रों की एक विशेष प्रदर्शनी भारत भवन, संस्कृति संचालनालय, मध्यप्रदेश शासन द्वारा आयोजित बिहार महोत्सव के अवसर पर भारत भवन, भोपाल में संयोजित की गई। (अक्टूबर, 2014)

1.1.3.9. मधुबनी चित्रांकन शैली में छठ पूजा से संबंधित प्रतिमानों को दर्शाती पारम्परिक मधुबनी चित्रों की एक विशेष प्रदर्शनी भारत भवन, संस्कृति संचालनालय, मध्यप्रदेश शासन द्वारा आयोजित **बिहार महोत्सव** के अवसर पर भारत भवन, भोपाल में संयोजित की गई। (अक्टूबर, 2014)

1.1.3.10. **लोकलिखि :** भारत में लोक व जनजातीय चित्र कला की विभिन्न शैलियों को उजागर करती एक विशेष प्रदर्शनी संग्रहालय के आवृत्ति भवन में संयोजित की गई। प्रदर्शनी का औपचारिक उद्घाटन श्री प्रमोद जैन, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया गया। (अक्टूबर, 2014)

1.1.3.11. **धरोहर झरोखा :** देश की सांस्कृतिक धरोहर को प्रदर्शित करते छायाचित्र प्रादर्श युक्त दो धरोहर झरोखे क्रमशः नवोदय विद्यालय, रातीबड़, भोपाल तथा पश्चिम मध्य रेल्वे सीनियर सैकेंड्री स्कूल, इटारसी में खोले गये। (नवम्बर, 2014)

1.1.3.12. इंगांरामासं की गतिविधि केंद्रित पोस्टर्स सहित प्रकाशनों की एक प्रदर्शनी तथा इंगांरामासं की परिचयात्मक फिल्म के प्रदर्शन का आयोजन इण्डियन आर्ट हिस्ट्री कांग्रेस की प्लेटिनम जुबली के अवसर पर जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में किया गया। (दिसम्बर, 2014)

1.1.3.13. इंगांरामासं की गतिविधियों पर केंद्रित एक धरोहर झरोखा पश्चिम मध्य रेल्वे सीनियर सैकेंड्री स्कूल, न्यू कटनी जंक्शन, कटनी में किया गया। (दिसम्बर, 2014)

1.1.3.14. **गाता पखना :** मुरिया जनजाति के मृत्यु अनुष्ठानों पर आधारित एक विशेष प्रदर्शनी मानवशास्त्र विभाग, बस्तर विश्वविद्यालय, जगदलपुर में संयोजित की गई। यह प्रदर्शनी धरोहर झरोखे के रूप में विश्वविद्यालय को स्थायी रूप से सौंप दी गई। (दिसम्बर, 2014)

अंतरंग दीर्घा में डीएनए डबल हैलिक्स अंतर्क्रियात्मक मॉडल।
DNA double Helix interactive model in the indoor gallery.

ग्लोबल इंटरनैशनल स्कूल, डबरा में संयोजित धरोहर झरोखा में विशेष आमंत्रित अतिथि।
Special invitees in the Heritage Corner mounted at Global International School, Dabara.

ग्लोबल इंटरनैशनल स्कूल डबरा में संयोजित धरोहर झरोखा का एक दृश्य।
A view of heritage corner mounted at Global International School, Dabara.

विशेष सामयिक प्रदर्शनी देशाटन का एक दृश्य।
A view of special periodical exhibition Deshatan.

वीथि संकुल अंतरंग संग्रहालय में मदर्स कॉर्नर का सुश्री जार्जुम ऐते द्वारा लोकार्पण।
Dedication of the Mothers corner by Ms. Jrjum Ete in the Veethi Sankul indoor museum.

संग्रहालय द्वारा बस्तर विश्वविद्यालय, जगदलपुर में आयोजित धुमंतु प्रदर्शनी 'गाता पखना' में आमंत्रित अध्येतागण।
Invited scholars in 'Gata Pakhna' travelling exhibition organised by the Museum in Bastar University, Jagadalpur.

ग्लोबल इंटरनैशनल स्कूल डबरा में विकसित 'धरोहर झरोखा' का उद्घाटन दृश्य।
Inaugural view of 'heritage corner' developed at the Global international School Dabara.

इंगारामासं द्वारा गुरुसदाय संग्रहालय, कोलकाता में संयोजित घुमंतु प्रदर्शनी 'ईशानी' का एक दृश्य।
A view of travelling exhibition 'Ishanee' mounted by IGRMS at Gurusadai Museum, Kolkata.

संग्रहालय द्वारा आयोजित विशेष सामयिक प्रदर्शनी 'हिमलोक' में श्री रवीन्द्र सिंह, सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार
Shri Ravindra Singh, Secretary, Ministry of Culture, Govt. of India in 'Himlok' special periodical exhibition organised by the Museum.

1.1. 2. **Veethi Sankul indoor museum building:**

1.1. 2.1. **DNA Double Helix:** An exhibit had been installed in the gallery no.1 of Veethi Sankul. This interactive exhibit had been developed in collaboration with National Council of Science Museum, Kolkata.(July,2014)

1.1. 2.2. **Visitors facilities:** In continuation of efforts to make its exhibitions more accessible to every segment of society and visitor friendly, audio guide facility has been introduced in the Traditional Technology open air exhibition. A bilingual brochure, bilingual information plates of all the exhibits, signages and drinking water facilities are also made available in this exhibition. A guide map with new additions and improved signages are facilitated in Mythological Trail open air exhibition of the Museum.

1.1. 2.3. **Mamatva:** Mother's Corner with basic facilities for women visitors with infants had been developed in the indoor Museum building-Veethi Sankul

1.1.3. **Temporary and Travelling Exhibitions:** During the period under review the following twenty four periodical and travelling exhibitions were developed and exhibited in Bhopal and other places of India:

1.1.3.1. **Jharokha** : A photo exhibition was mounted at Jabalpur in collaboration with West Central Railway, Jabalpur. (April,2014)

1.1.3.2. **Sahjog Yatra-** Photo exhibitions in Gondwana and Rewanchal express trains were successfully launched as collaborative venture of IGRMS and the Indian Railway. (April,2014)

1.1.3.3. **Sohang:** A special exhibition of Masks with special reference to the Konkana tribals of Maharashtra was organised on the occasion of International Museum Day.(May,2014)

1.1.3.4. **Sacred Groves:** A photographic exhibition on "Sacred Groves of India" was organised by IGRMS at Department of Energy and Environmental Studies, Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore on the occasion of World Environment Day. The exhibition focused on traditional belief and practices of environment conservation adopted by various communities of India. (June,2014)

1.1.3.5. **Kavita Rachte Chhaya Chitra:** An exhibition on selected photographs from Museum archive was held in the museum. The exhibition was organised to recollect the memories of photographs clicked by Shri Ravi Srivas who retired from IGRMS as Assistant Curator (Display).(July, 2014)

1.1.3.6. **Heritage Corner :** A photographic exhibition portraying the folk and tribal life in India was mounted at Global International Public School, Dabra, Gwalior on the occasion of Teachers Day. (September,2014)

1.1.3.7. **Deshatan -:** A special exhibition highlighting lesser known regional cultures of India was inaugurated by Dr. P.J. Sudhakar, Additional Director General, Press Information Bureau, Government of India on the occasion of World Tourism day. (September, 2014)

1.1.3.8. **Aragh:** A special exhibition containing 46 photographs focussing Chhath Parv was mounted by the Museum on the occasion of "Bihar Mahotsav" organised by Bharat Bhawan, Department of Culture, Government of Madhya Pradesh at Bharat Bhawan, Bhopal.(October,2014)

1.1.3.9. A special exhibition on traditional Madhubani paintings depicting motives related with Chhath Puja in Madhubani painting style was mounted on the occasion of **Bihar Mahotsav** organised by Bharat Bhawan, Department of Culture, Government of Madhya Pradesh at Bharat Bhawan, Bhopal(October,2014).

1.1.3.10. **Loklikhi :** A special exhibition highlighting the various styles of folk and tribal paintings in India was mounted by the Museum at Avritti Bhawan. The exhibition was formally inaugurated by Shri Pramod Jain, Joint Secretary, Ministry of Culture, Government of India.(October, 2014)

1.1.3.11. **Heritage Corner:** Two Heritage Corners comprising of photographic exhibits depicting the cultural heritage of country were opened at Jawahar Navodaya Vidyalaya, Ratibad, Bhopal and West Central Railway Senior Secondary School, Itarsi respectively.(November,2014)

1.1.3.12. An exhibition of publications including activity based posters and screening of introductory film of IGRMS was displayed at New Delhi on the occasion of Platinum Jubilee Session of Indian Art History Congress organised at Jawahar Lal Nehru University, New Delhi.(December, 2014)

1.1.3.13. A Heritage Corner focussing the activities of IGRMS was mounted at West Central Railway Senior Secondary School, New Katni Junction, Katni.(December, 2014)

1.1.3.14. **Gata Pakhna :** A special exhibition based on the death rituals of Muria was mounted at Department of Anthropology, Bastar University, Jagdalpur. This exhibition had been endorsed permanently to the university as Heritage Corner. (December,2014)

1.1.3.15. **एक प्रार्थना :** प्रसिद्ध कवि एवं लेखक गुलज़ार द्वारा लिखित कविताओं के साथ विकलांगता पर पोस्टर्स की एक विशेष प्रदर्शनी विश्व विकलांग दिवस के अवसर पर वीथि संकुल में संयोजित की गई। (दिसम्बर, 2014)

1.1.3.16. **धरोहर झरोखा :** दर्शाती एक छायाचित्र प्रदर्शनी का संयोजन पश्चिम मध्य रेल्वे सीनियर सैकेंन्ड्री स्कूल, भोपाल में धरोहर झरोखा श्रंखला के अंतर्गत किया गया। (जनवरी, 2015)

1.1.3.17. **भारत के पुनीत वन :** भारत के पुनीत वन शीर्षक से एक छाया चित्र प्रदर्शनी का संयोजन आई.जी.एन.सी.ए., नई दिल्ली में राष्ट्रीय जनजातीय उत्सव के अवसर पर किया गया। (फरवरी, 2015)

1.1.3.18. **भारत के देशज जन :** भारत में जनजातीय जीवन और संस्कृति के विविध पक्षों को दर्शाती एक छायाचित्र प्रदर्शनी का संयोजन राष्ट्रीय जनजातीय उत्सव के दौरान आई.जी. एन.सी.ए., नई दिल्ली में किया गया। (फरवरी, 2015)

1.1.3.19. **पूर्वोत्तर भारत की झलकियॉं :** पूर्वोत्तर भारत में बेंत और बांस संस्कृति को दर्शाती एक छाया चित्र प्रदर्शनी का संयोजन अरोविल बैम्बू सेन्टर, पांण्डिचेरी में किया गया। (फरवरी, 2015)

1.1.3.20. **हिमलोक :** भारतीय हिमालय के लोगों और संस्कृति को दर्शाती एक विशेष प्रदर्शनी का संयोजन भोपाल स्थित संग्रहालय परिसर में किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन डा. रवीन्द्र सिंह, सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया गया। (फरवरी, 2015)

1.1.3.21. **ईशानी :** पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति पर एक छाया चित्र प्रदर्शनी गुरूसदाय संग्रहालय, कोलकाता के सहयोग से कोलकाता में आयोजित की गई। (मार्च, 2015)

1.1.3.22. **विरासत :** इंगांरामासं के संकलन में से 'एए' तथा 'ए' श्रेणी प्रादर्शो को दर्शाती एक सामायिक प्रदर्शनी वीथि संकुल अंतरंग संग्रहालय भवन में आयोजित की गई। प्रदर्शनी 'राष्ट्रीय महत्व के प्रादर्श' के रूप में चिन्हित इन संकलनों के सांस्कृतिक महत्व, प्रकार्यात्मकता तथा देशज कारीगरी के प्रति एक सूक्ष्म दृष्टि उपलब्ध कराती है। (मार्च, 2015)

1.1.3.23. **अरूणाचल परिदृष्य :** अरूणाचल प्रदेश के लोगों और संस्कृति पर केंद्रित एक सामयिक प्रदर्शनी का सफल आयोजन भोपाल स्थित संग्रहालय के आवृत्ति भवन में संग्रहालय के स्थापना दिवस के अवसर पर अरूणाचल प्रदेश सांस्कृतिक उत्सव के दौरान किया गया। (मार्च, 2015)

1.1.3.24. **अरूणाचल एक झलक :** अरूणाचल प्रदेश के विविध सांस्कृतिक पक्षों को दर्शाती एक छायाचित्र प्रदर्शनी भी अरूणाचल प्रदेश सांस्कृतिक उत्सव के अवसर पर संयोजित की गई। (मार्च, 2015)

1.1.3.15. **Ek Prarthna:** A special exhibition containing posters on disability with poems written by noted poet and writer Gulzar was mounted on the occasion of World Disabled Day at Veethi Sankul. (December, 2014)

1.1.3.16. **Heritage Corner:** Sangrahalaya mounted a photo exhibition depicting diverse cultures of India in West Central Railway Senior Secondary School, Bhopal under the series of Heritage Corner. (January, 2015)

1.1.3.17. **Sacred Groves of India:** A photographic exhibition was mounted at IGNCA, New Delhi on the occasion of National Tribal festival.(February, 2015).

1.1.3.18. **Indigenous People of India:** A photographic exhibition showcasing various aspects of tribal life and culture in India was mounted at IGNCA, New Delhi on the occasion of National Tribal festival. (February, 2015).

1.1.3.19. **Glimpses of Northeast India:** A photographic exhibition depicting cane and bamboo cultures in North-East India was mounted at Auroville Bamboo Centre, Pondicherry.(February, 2015).

1.1.3.20. **Himlok:** A special exhibition showcasing the people and culture of Indian Himalaya was mounted at Museum premises at Bhopal. This exhibition was inaugurated by Dr Ravindra Singh, Secretary, Ministry of Culture, Govt of India.(February, 2015).

1.1.3.21. **Ishani :** A photographic exhibition on North Eastern Cultures of India was mounted in collaboration with Gurusaday Museum, Kolkata at Kolkata.(March, 2015)

1.1.3.22. **Virasat:** A periodical gallery showcasing the 'AA' & 'A' categories objects from the collection of IGRMS was organised in the Veethi Sankul-the indoor museum building. Designated as the 'objects of National Importance', the exhibition provides an insight into the cultural values, functionalities and indigenous craftsmanship of these collections. (March, 2015)

1.1.3.23. **Arunachal Paridrishya:** A periodical exhibition focussing the People, life and Culture in Arunachal Pradesh was successfully organised at Bhopal during the Arunachal Pradesh Cultural festival celebrated on the eve of the Museum Foundation Day.(March, 2015)

1.1.3.24. **Arunachal Ek Jhalak:** A photographic exhibition showcasing vivid cultural aspects of Arunachal Pradesh was also mounted on the occasion of Arunachal Pradesh Cultural festival. (March, 2015)

संग्रहालय द्वारा संयोजित सामयिक प्रदर्शनी 'कविता रचते छायाचित्र' का एक दृश्य।
A view of periodical exhibition 'Kavita Rachatya Chayachitra' mounted by the museum.

संग्रहालय द्वारा संयोजित सामयिक प्रदर्शनी 'लोकलिखि' का अवलोकन करते श्री प्रमोद जैन, संयुक्त सचिव।
Shri Pramod Jain, Joint Secretary observing the 'Lok Likhi' periodical exhibition mounted by the museum.

1.1.4. **माह का प्रादर्श :**

प्रदर्शनी श्रृंखला 'माह का प्रादर्श' दर्शकों को संग्रहालय के अनूठे संकलन से परिचित कराने को उद्देशित है। इसका उद्देश्य एक प्रादर्श के बारे में प्रत्यक्ष सूचना उपलब्ध कराना है। इस श्रृंखला के अंतर्गत संग्रहालय के संरक्षित संकलन में से प्रति माह एक चयनित प्रादर्श प्रदर्शित किया जाता है। समीक्षावधि के दौरान विभिन्न लोक एवं जनजातीय जनसमूहों से सम्बद्ध निम्नलिखित प्रादर्श प्रदर्शित किये गये।

1.1.4.1. रिंगा – ओडिशा की हिलबोंडो/बोंडा जनजाति से सम्बद्ध एक प्रादर्श। (अप्रैल, 2014)

1.1.4.2. वांगाम्बा चेन्खांग – लकड़ी की एक कुर्सी, नागा मुखिया के गौरव, अधिकार, सर्वोच्चता तथा स्तर को सूचित करता एक बेहतरीन प्रादर्श। (मई, 2014)

1.1.4.3. कपाला – तिब्बती बौद्ध विहार से एक अनुष्ठानिक पात्र। (जून, 2014)

1.1.4.4. ताड़पा – थाणे, महाराष्ट्र की वारली जनजाति का एक सुषिर वाद्ययंत्र । (जुलाई, 2014)

1.1.4.5. तलवार – सिक्ख धर्म से सम्बद्ध एक प्रादर्श उसके ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भों सहित प्रदर्शित किया गया। (अगस्त, 2014)

1.1.4.6. शिलाम्बु – तमिल साहित्य से सम्बद्ध, तमिलनाडु के श्रीगंगा जिले से प्राप्त एक पग अभूषण, जो 'कन्नगी के प्रतिशोध' की कथा को याद दिलाता है। शिलाम्बू की मान्यता एक विवाहित महिला के गौरव और सम्मान के प्रतीक स्वरूप तथा कन्नगी की मान्यता न्याय की देवी के रूप में है। (सितम्बर, 2014)

1.1.4.7. शामी लामी फी – नागालैण्ड के नागा समुदाय का एक शानदार अंगवस्त्र । (अक्टूबर,2014)

1.1.4.8. चांगू : ओडिशा की जुआंग जनजाति का एक डफ। (नवम्बर, 2014)

1.1.4.9. बलुआ – झारखण्ड के उरांव समुदाय का एक फरसा। (दिसम्बर, 2014)

1.1.4.10. दामण – लद्दाख में हिमालय पर्वत की बीहड़ तराइयों में रहने वाले मॉन और बेड़ा लोगों के नगाड़े की एक जोड़ी। (जनवरी, 2015)

1.1.4.11. कोहक – बस्तर, छत्तीसगढ़ की बायसन हॉर्न माड़िया जनजाति का एक शिरोभूषण। (फरवरी, 2015)

1.1.4.12. टोपेरी – ओडिशा की देसिया कोंध जनजाति की वधु का शिरोभूषण। (मार्च, 2015)

1.2. **आर्काइवल स्रोतो में वृद्धि:**

समीक्षावधि के दौरान संग्रहालय ने अपने संकलन में 958 मानवशास्त्रीय प्रादर्शों, विभिन्न आकार के 23250 पारदर्शियों/फोटो प्रिंटस, 354 घण्टों से अधिक की ऑडियो–वीडियो रिकॉर्डिंग, भारतीय/विदेशी पत्रिकाओं के 439 अंक तथा 172 ग्रंथालयीन पुस्तकों की अभिवृद्धि की।

1.1.4. **Exhibit of the month :**

Exhibition series "Exhibit of the month" intends to make visitors introduced with unique collection of the Museum. It aims to provide first hand information about an object. In this series, selected object from Museum's reserve collection is displayed every month. During the period under review, following objects belonging to various folk and tribal communities were displayed:

1.1.4.1. Ringa- an exhibit belonging to Hill Bondo/Bonda tribe of Odisha .(April, 2014)

1.1.4.2. Wangamba Chenkhong- a wooden chair, one of the finest specimen that denotes the pride, power, supremacy and status of a Naga chief(May, 2014)

1.1.4.3. Kapala- a ritual bowl from the Tibetan monastery (June, 2014)

1.1.4.4. Tarpa- a blowing instrument of Warli tribe of Thane, Maharashtra(July, 2014)

1.1.4.5. Talwar- an object related to the Sikhism was displayed with its historical and social references. (August, 2014)

1.1.4.6. Shilambu- a foot ornament from Shriganga district of Tamilnadu having relevance in Tamil literature that recalls the story of " the revenge of Kannagi". Shilambu is considered as the symbol of pride and honour of a married woman and Kannagi as the goddess of justice(September, 2014)

1.1.4.7. Shami Lanmi Phi- a Noble shawl of the Naga community of Nagaland.(October, 2014)

1.1.4.8. Changu- a single membrane drum of the Juang tribe of Odisha. (November, 2014)

1.1.4.9. Balua- a battle axe of Oraon community of Jharkhand. (December, 2014)

1.1.4.10. Daman- a pair of drums of the Mon and Beda people who live in the rugged terrain of the Himalayan Mountain in Ladakh. (January, 2015)

1.1.4.11. Kohk-a head dress of Bison horn Maria tribe of Bastar, Chhattisgarh (February, 2015)

1.1.4.12. Toperi: The bridal headgear of Desia Kondh tribe of Odisha (March, 2015)

1.2. **Strengthening of Archival Resources:**

During the period under review, the Museum added nearly 958 Ethnographic specimens, 23250 slides/photo prints of various sizes, over 354 hrs. of audio-video recordings, 439 volumes of Indian/ Foreign Journals and 172 library books to its collection.

माह का प्रादर्श 'रिंगा' का उद्घाटन दृश्य।
Inaugural view of 'Ringa' the exhibit of the month.

माह का प्रादर्श 'दामण' का उद्घाटन दृश्य।
Inaugural view of 'Daman' the exhibit of the month.

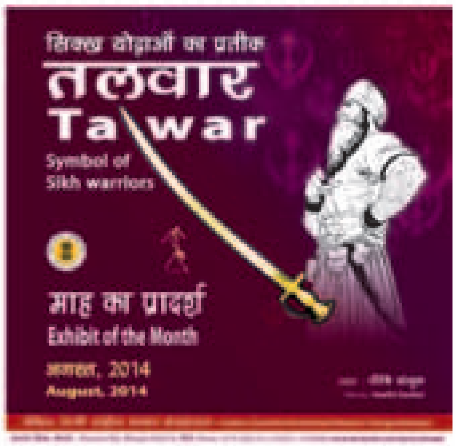

माह का प्रादर्श श्रंखला के अंतर्गत प्रदर्शित प्रादर्श
Exhibits displayed under the series of exhibit of the month.

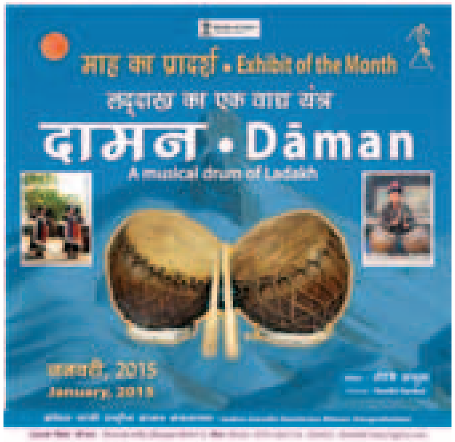

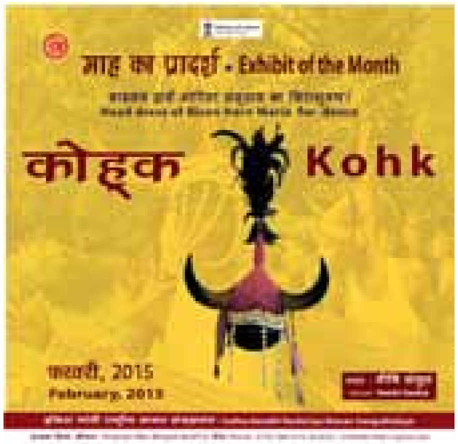

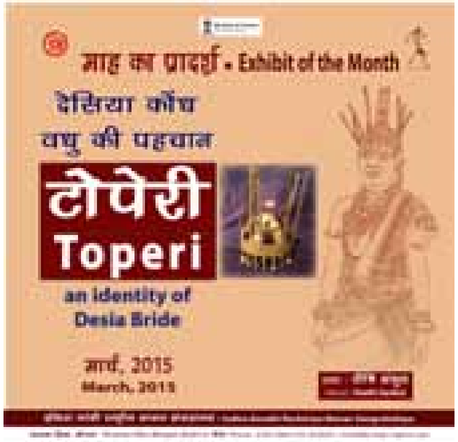

2

शैक्षणिक एवं आउटरीच गतिविधियाँ
Education & Outreach Activities

शैक्षणिक एवं आउटरीच गतिविधियाँ, चूँकि लोगों को सीधे संग्रहालय से जोड़ती हैं अतः संग्रहालय का अभिन्न भाग हैं । संग्रहालय तथा दर्शकों के मध्य संबंधो की निरन्तरता बनाये रखने हेतु स्कूली बच्चों, युवा, वयस्कों, शिक्षकों, गृहणियों इत्यादि वृहद वर्गीय दर्शकों की संतुष्टि हेतु इंगांरामासं विविध शैक्षणिक एवं आउटरीच गतिविधियाँ आयोजित करता है।

संग्रहालय की शैक्षणिक तथा आउटरीच गतिविधियों में सम्मिलित हैं 'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम, कलाकार कार्यशाला, संगोष्ठी/सम्मेलन/अकादमिक कार्यशालाएँ, संग्रहालय लोकरूचि व्याख्यान, वार्षिक इंगांरामासं व्याख्यान, विशेष उत्सव तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दिवस समारोह साथ ही मूर्त और अमूर्त संस्कृति से संबंधित विभिन्न अवसर और मुद्दे इत्यादि।

वर्ष 2014–15 के दौरान संग्रहालय द्वारा निम्नलिखित शैक्षणिक एवं आउटरीच गतिविधियॉ संचालित की गयी।

2.1. **'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रमः** संग्रहालय पंजीकृत प्रतिभागियों हेतु प्रदर्शन व प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है। इस गतिविधि के अंतर्गत विभिन्न सृजनात्मक देशज ज्ञान पद्धतियों के लोक व जनजातीय कलाकार व शिल्पकार उनके संबंधित शिल्प का प्रशिक्षण देने हेतु आमंत्रित किये जाते हैं। समीक्षा अंतर्गत अवधि के दौरान भोपाल स्थित संग्रहालय परिसर व अन्य स्थानों पर निम्नलिखित नौ कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

2.1.1. **गुजरात की मुतवा कारीगरी :** दस दिवसीय 'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन 7 से 16 मई, 2014 तक किया गया, जिसमें कच्छ, गुजरात के एक पारंपरिक शिल्पकार श्री लुतुफ अली मुतवा ने 53 पंजीकृत प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदान किया।

2.1.2. **मधुबनी चित्र कला :** 18 से 27 मई, 2014 तक दस दिवसीय 'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें श्रीमती उर्मिला देवी तथा उनके सहायक ने 63 पंजीकृत प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदान किया।

2.1.3. **छाउ :** पूर्वी भारत के लोकनृत्य पर एक 'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन 18 मई, 2014 से किया गया जिसमें सराइकेला, मयूरभंज तथा पुरूलिया से कलाकारों के एक दल ने बैले निर्देशक श्री चंद्र माधव बारीक, श्री तारा दत्त तथा गणेश चन्द्र महतो के सहयोग से स्थानीय प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदान किया।

2.1.4. **लाइधी शाबा :** मणीपुर की पारम्परिक गुड़िया निर्माण कला पर एक दस दिवसीय 'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन 5 से 14 जून, 2014 तक किया गया, जिसमें श्री युम्नाम श्याम सिंह तथा श्री नील कमल ने 40 पंजीकृत प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदान किया।

Educational and Outreach activities had been an integral part of the museum as it directly associates masses with the Museum. In order to maintain the Museum visitor alliance, IGRMS organises various education programmes and outreach activities catering to a wide-range of audience such as school children, youth, adults, teachers, housewife etc.

The Museum education and outreach activities include 'Do & Learn' Museum Education Programme, Artists Workshop, Seminar/Conference/academic workshop, Museum Popular Lectures, Annual IGRMS Lecture, particular festivals and celebration of national and international days as also the occasion and issues related to tangible and intangible heritage etc.

During the year 2014-15, following education and outreach activities were carried out by the Museum:

2.1. **'Do and Learn' Museum Education Programme:** The Museum organises demonstration and training programmes for registered participants. Folk and tribal artisans of various creative indigenous knowledge systems are invited to impart the training of their respective craft. During the period under review the following nine programmes were organised in the Museum campus at Bhopal and other places.

2.1.1. **Muthwa Karigari of Gujarat:** Ten day long 'Do and Learn' Museum Education Programme was organised from 7th to 16th May, 2014 in which Shri Lutuf Ali Muthwa a traditional craft person from Kutch, Gujarat imparted training to 53 registered participants.

2.1.2. **Madhubani Painting:** Ten day long 'Do and Learn' Museum Education Programme was organised from 18th to 27th May, 2014 in which Smt. Urmila Devi and her assistant imparted training to 63 registered participants.

2.1.3. **Chhow:** A 'Do and Learn' Museum Education Programme on Traditional Chhow folk dance of Eastern India was organised from 18th May, 2014 in which a group of artists from Saraikela, Mayurbhanj and Purulia with support of Shri Chandra Madhav Barik, a ballet director, Shri Tara Dutt and Shri Ganeshchandra Mehto imparted training to local participants

2.1.4. **Laidhee Shaba:** A ten day long 'Do and Learn' Museum Education Programme on "Traditional Doll making art of Manipur" was organised from 5th to 14th June, 2014 in which Shri Yumnam Shyam Singh and Shri Nilkamal imparted training to 40 registered participants

2.1.5. **गुजरात का बीडवर्क :** कच्छ, गुजरात के पारम्परिक बीडवर्क पर एक दस दिवसीय 'करो और सीखो' शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन 10 से 19 जून, 2014 तक जबलपुर में पश्चिम मध्य रेल मंडल, जबलपुर के सहयोग से किया गया जिसमें सुश्री दक्षा धनजी भाई खत्री तथा उनके सहायक ने 26 पंजीकृत प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदान किया।

2.1.6. **वारली चित्रकला :** महाराष्ट्र की वारली चित्रकला पर एक दस दिवसीय 'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन 10 से 19 जून, 2014 तक जबलपुर में पश्चिम मध्य रेल मंडल, जबलपुर के सहयोग से किया गया जिसमें श्री दिलीप बाहोथा तथा उनके सहायक ने 47 पंजीकृत प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदान किया।

2.1.7. **लाइधी ग्राबा :** मणीपुर की पारम्परिक गुड़िया निर्माण कला पर एक अन्य दस दिवसीय 'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन 16 से 25 जून, 2014 तक नर्मदा रेल्वे आफीसर्स क्लब, भोपाल में किया गया जिसमें श्री युम्नाम श्याम सिंह तथा श्री नीलकमल ओइनाम ने 15 पंजीकृत प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदान किया।

2.1.8. **भोपाल की ज़रदोज़ी :** सीमा सुरक्षा बल प्रहरी संगिनी कल्याण समिति, जैसलमेर, राजस्थान के सहयोग से भोपाल की ज़रदोज़ी कला पर एक दस दिवसीय 'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन 15 से 24 जुलाई, 2014 तक 57 पंजीकृत प्रतिभागियों की प्रतिभागिता में किया गया। श्रीमती जुलेखा खान ने ज़रदोज़ी कला का प्रशिक्षण दिया।

2.1.9. **गुजरात का बीडवर्क :** सीमा सुरक्षा बल प्रहरी संगिनी कल्याण समिति, जैसलमेर, राजस्थान के सहयोग से कच्छ, गुजरात के बीडवर्क पर एक 'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन 15 से 24 जुलाई, 2014 तक किया गया जिसमें सुश्री बनिता खत्री ने 57 पंजीकृत प्रतिभागियों को मोतियों के आभूषण बनाने की कला का प्रशिक्षण प्रदान किया।

'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम में मणीपुर के कलाकार द्वारा गुड़िया निर्माण कला का प्रशिक्षण।
Training of Doll making art by the artist from Manipur in 'Do and learn' museum education programme.

'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम में पारम्परिक कलाकार द्वारा मुतवा कारीगरी का प्रदर्शन।
Demonstration of traditional Muthwa karigari by traditional artist under 'Do and learn' museum education programme.

'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम में छाउ लोक नृत्य का प्रशिक्षण देते ओडिशा के लोक कलाकार।
Folk artist from Odisha imparting the training of Chhow folk dance in 'Do and learn' museum education programme.

भोपाल की ज़रदोज़ी कलाकार द्वारा जैसलमेर में बावा प्रशिक्षणार्थियों को ज़रदोज़ी के प्रशिक्षण का एक दृश्य।
A view of training of Zardoji art to BAWA trainees at Jaisalmer by the Zardoji artist from Bhopal.

पारम्परिक कलाकार के मार्गदर्शन में मधुबनी चित्रकला का अभ्यास करते पंजीकृत प्रतिभागी।
Registered participants practicing Madhubani painting under the guidance of traditional artist.

2.1.5. **Bead work of Gujarat:** A ten day long 'Do and Learn' Museum Education Programme on "Traditional Bead work of Kutch, Gujarat" was organised from 10th to 19th June, 2014 at Jabalpur in collaboration with West Central Railway Board, Jabalpur in which Ms. Daksha Dhanji Bhai Khatri and her assistant imparted training to 26 registered participants.

2.1.6. **Warli painting:** A ten day long 'Do and Learn' Museum Education Programme on "Warli painting of Maharashtra" was organised from 10th to 19th June, 2014 at Jabalpur in collaboration with West Central Railway Board, Jabalpur in which Shri Dilip Bahotha and his assistant imparted training to 47 registered participants.

2.1.7. **Laidhi Shaba:** Another ten day long 'Do and Learn' Museum Education Programme on Traditional Doll making art of Manipur was organised from 16th to 25th June, 2014 at Narmada Railway Officers Club, Bhopal in which Shri Yumnam Shyam Singh and Shri Nilkamal Oinam imparted training to 15 registered participants

2.1.8. **Zardozi of Bhopal:** In collaboration with Border Security Force Officers wife's Welfare Association, Jaisalmer, Rajasthan, a ten day long 'Do and Learn' museum education programme on Zardozi Embroidery of Bhopal was orgainsed from 15th to 24th July, 2014 with participation 57 registered participants. Smt. Julekha Khan imparted the training of Zardozi art.

2.1.9. **Bead work of Gujarat:** In collaboration with Border Security Force Officers wife's Welfare Association, Jaisalmer, Rajasthan ten day long 'Do and Learn' museum education programme on Bead Jewellary of Kutch, Gujarat was orgainsed from 15th to 24th July, 2014 in which Ms. Banita Khatri imparted the training of Beads jewellary art to 57 registered participants.

छाउ लोकनृत्य पर शैक्षणिक कार्यक्रम के प्रतिभगियों द्वारा तैयार और प्रस्तुत नृत्य नाटिका 'शक्ति' का एक दृश्य।
A view of ballet 'Shakti' prepared and performed by the participants of education programme on Chhow folk dance.

2.2. **कलाकार कार्यशालाएं** : लोक तथा जनजातीय समुदायों के बीच कलाकृतियों या शिल्प सामग्रियों का सृजन केवल आजीविका के साधन के रूप में ही नही है बल्कि इसमें सामाजिक धार्मिक महत्ता और सम्बद्ध कारीगर समुदाय का सौन्दर्य बोध भी सम्मिलित है। समय और स्थान में विकसित ये कला रूप एक क्षेत्र अथवा उसमें रहने वाले समुदाय की पहचान रहे है। अपने प्राकट्य में स्पर्शनीय होते हुए भी इन परम्पराओं में कई अमूर्त पक्ष जो विभिन्न देशज समुदायों और उनके अंतर्सम्बन्धों के अध्ययन में महत्वपूर्ण होते है भी समाहित होते हैं। विविध कला परम्पराओं के प्रलेखन, कारीगर समुदायो के प्रोत्साहन और साथ ही संग्रहालय के संकलन में अभिवृद्धि करने तथा दर्शकों को कलाकारों से एक ही स्थान पर सीधे सम्वाद के अवसर उपलब्ध कराने के विचार से इंगारामांसं देश के विभिन्न स्थानों, भोपाल स्थित अपने मुख्यालय तथा दक्षिण क्षेत्रिय केन्द्र, मैसूर में कलाकार शिविरों और कार्यशालाओं का आयोजन करता है। वर्ष के दौरान निम्नलिखित सत्रह कलाकार कार्यशालाएं आयोजित की गयी।

2.2.1. पश्चिम मध्य रेल्वे, जबलपुर के सहयोग से 'कला दर्शना' शीर्षक से एक पांच दिवसीय कलाकार कार्यशाला का आयोजन जबलपुर में 30 मार्च से 3 अप्रैल, 2014 तक किया गया।

2.2.2. विभिन्न भारतीय राज्यों की कला और शिल्प परम्पराओं पर 'जम्मू उत्सव' शीर्षक से एक विशेष कार्यक्रम जम्मू में 12 से 16 अप्रैल, 2014 तक आयोजित किया गया जिसमें जम्मू, मणीपुर, मध्यप्रदेश, झारखण्ड, उत्तराखण्ड तथा छत्तीसगढ़ के कलाकारों ने उनके पारम्परिक शिल्प कौशल का प्रदर्शन किया।

2.2.3. अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के प्रयास स्वरूप कॉम जनजाति के पारम्परिक खेलों पर एक कार्यशाला, कॉम सांस्कृतिक नृत्य एवं शोध केंद्र, खोइरेना खुमान, मणीपुर के सहयोग से 2 से 6 मई, 2014 तक आयोजित की गई। कार्यशाला का उद्घाटन श्री युम्नाम ज्ञानेश्वर सिंह, निदेशक, जनजातीय संग्रहालय तथा शोध केंद्र, इम्फाल द्वारा किया गया।

2.2.4. अतीत में विविध सामाजिक-राजनैतिक तथा सांस्कृतिक दशाओं में जन्मी, पल्लवित और देश भर के कलाकारों द्वारा की जाने वाली मिनिएचर चित्रकला अब केवल एक क्षेत्र विशेष तक सीमित रह गई है और यहाँ तक कि दुनिया में केवल पहाड़ी तथा मेवाड़ या राजस्थानी चित्रकला के नाम से ही जानी जाती है। मिनिएचर चित्रकला की परम्परा को संरक्षित व प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से 'लघु चित्रावली संगम' शीर्षक से हिमाचल प्रदेश तथा राजस्थान के मिनिएचर चित्रकारों की एक कार्यशाला 10 से 15 मई, 2014 तक किशनगढ़, मेवाड़, चम्बा तथा कांगड़ा शैली के 19 मिनिएचर चित्रकारों की प्रतिभागिता में शिमला में आयोजित की गई।

2.2.5. भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित भूमि और भित्ति चित्रण पर 'भूरंजना' शीर्षक से एक छः दिवसीय कलाकार कार्यशाला 26 से 31 अगस्त, 2014 तक मध्यप्रदेश, राजस्थान, झारखण्ड, कर्नाटक, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल तथा ओडिशा में करीब 20 कलाकारों की प्रतिभागिता में आयोजित की गई।

2.2.6. संग्रहालय ने अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, ओडिशा सरकार, भुवनेश्वर के सहयोग से दस दिन की अवधि की एक राष्ट्रीय जनजातीय कला एवं शिल्प कार्यशाला का आयोजन 19 से 28 नवम्बर, 2014 तक भुवनेश्वर में किया । कार्यक्रम में छत्तीसगढ़, गुजरात, ओडिशा, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, मणीपुर और असम से विविध देशज शिल्पों जैसे बांस शिल्प, मुखौटा निर्माण, टोकरी, वस्त्र, लाख, धातु, लौहशिल्प तथा चित्रकला में अपने कौशल के प्रदर्शन हेतु कुल 81 कलाकारों ने भाग लिया।

2.2.7. संग्रहालय ने कलमकारी उत्सव-2014 शीर्षक से एक पांच दिवसीय कलाकार कार्यशाला सह-प्रदर्शनी का आयोजन विक्टोरिया जुबली म्यूज़ियम, पुरातत्व विभाग, विजयवाड़ा के सहयोग से 26 से 30 नवम्बर, 2014 तक किया।

2.2.8. शिल्प लोगों को जोड़ने और समुदायों को एक साथ लाने का माध्यम रहा है। अंग विशेष के बिना स्वयं को अभिव्यक्त करते और सम्प्रेषण करते विशिष्ट क्षमतावान बच्चे संग्रहालय दर्शकों का एक बड़ा भाग निर्मित करते हैं और इसकी नियमित या पारम्परिक गतिविधियों को एक अलग आयाम देते हैं। संग्रहालय द्वारा इन बच्चों के लिए 'मिट्टी के दोस्त' शीर्षक से एक पांच दिवसीय क्ले मॉडलिंग कार्यशाला का आयोजन 28 नवम्बर से 2 दिसम्बर, 2014 तक किया गया। कार्यशाला में लगभग 40 ऐसे बच्चों ने भाग लिया तथा उनकी ज़रूरतों और अभिव्यक्ति के तरीकों को समझने का एक अवसर प्रदान किया।

2.2.9. 'छमयम-II' शीर्षक से एक विशेष कार्यक्रम 4 से 8 दिसम्बर, 2014 तक किरटाड्स, केरल के सहयोग से किरटाड्स परिसर, सेवायर, केरल में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में नागालैण्ड, अरूणाचल प्रदेश, असम, तमिलनाडु, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र तथा केरल से 32 जनजातीय कलाकारों ने प्रतिभागिता की तथा अपने शिल्प कौशल का प्रदर्शन किया।

पूर्वोत्तर की महिला शिल्पकार द्वारा ईशानी के दौरान पारंपरिक शिल्प का प्रदर्शन।
Demonstration of traditional craft by woman craft person from North East during Ishanee.

पूर्वोत्तर की महिला शिल्पकारो द्वारा ईशानी के दौरान पारंपरिक शिल्प का प्रदर्शन।
Demonstration of traditional craft by woman craft person from North East during Ishanee.

कलमकारी उत्सव के दौरान चित्र तैयार करती श्री कालहस्ती की एक पारंपरिक कलाकार।
A traditional artist from Shri Kalhasti preparing painting during Kalamkari festival.

संग्रहालय की मुक्ताकाश प्रदर्शनी में प्रदर्शित अपनी चित्रकारी को सुधारती पश्चिम बंगाल की एक पटुआ कलाकार।
A Patua artist from West Bengal repairing her painting displayed in museum's open air exhibition.

2.2. **Artist Workshops:** Creation of craft items or artefacts among folk and tribal communities is not only a medium of livelihood but also contains socio-religious significance and aesthetic sense of respective artisan community. These art forms evolved in time and space have been an identity mark of a region or community residing there. Although being tangible in their appearance such art traditions contain several intangible aspects important for the study of various ethnic groups and their interrelations. With an aim to document various art traditions, artisans as well as to enrich museum's collection as also to provide an opportunity of direct interaction between artists and visitors at same place IGRMS organises artists camps and workshops in various parts of country and its headquarter at Bhopal and Southern Regional Centre, Mysore. During the year, following seventeen artist workshops were organised:

2.2.1. A five day long artists workshop entitled 'Kaladarshana' was organised at Jabalpur from 30th March to 3rd April, 2014 in collaboration with West Central Railway, Jabalpur.

2.2.2. A special programme entitled 'Jammu Utsav' on Art and craft traditions of various Indian States was organised at Jammu from 12th to 16th April, 2014 in which artists from Jammu, Manipur, Madhya Pradesh, Jharkhand, Uttarakhand and Chhattisgarh demonstrated their traditional craft skills.

2.2.3. As an attempt to conserve, document and promote the intangible cultural heritage a workshop on the traditional games of Kom tribe in collaboration with the Kom Cultural Dance and Research Centre, Khoirena Khuman, Manipur was organized from 2nd to 6th May, 2014. The workshop was inaugurated by Shri Yumnam Gyaneshwar Singh, Director, Tribal Museum and Research Centre, Imphal.

2.2.4. The art of Miniature painting which was originated, flourished and practiced by the artists across the country under the varying socio-political and cultural situations in past, is now a days confined to a particular region and even known to the world in the name of Pahari and Mewar or Rajasthani miniatures only. With an objective to conserve and promote the tradition of Miniature painting, a workshop entitled 'Laghuchitrawali Sangam' of miniature painters from Himachal Pradesh and Rajasthan was organised from 10th to 15th May, 2014 at Shimla with participation of 19 miniature painters belonging to Kishangarh, Mewar, Chamba and Kangra school of Miniature painting.

2.2.5. Six day long artist workshop entitled 'Bhuranjana' on floor and wall painting prevalent in different regions of India was organised from 26th to 31st August, 2014 with participation of nearly 20 artists from Madhya Pradesh, Rajasthan, Jharkhand, Karnataka, Tamilnadu, West Bengal and Odisha.

2.2.6. Sangrahalaya organised a National Tribal Art and Craft workshop at Bhubaneshwar from 19th to 28th November, 2014 for a period of 10 days in collaboration with Schedule Caste & Schedule Tribe Research & Training Institute, Govt. of Odisha, Bhubanewswar. Altogether 81 craft persons participated in the programme to showcase their mastery in different indigenous crafts like bamboo craft, mask making, basketry, textile, lacquer, metal, iron craft and painting etc. from Chhattisgarh, Gujarat, Odisha, Jharkhand, Madhya Pradesh, Maharashtra, Manipur and Assam.

2.2.7. The Museum organised a five day artist workshop cum exhibition entitled Kalam Kari Festival-2014 in collaboration with Victoria Jubilee Museum, Deptt. of Archeology, Vijaywada from 26th to 30th November, 2014.

2.2.8. Craft has been serving as the medium of connecting people and bringing communities together. Specially abled children expressing themselves and communicating without particular organs constitute a major part of museum audience and give a different dimension to its routine or conventional activities. A five day clay modeling workshop for these children entited 'Mitti Ke Dost' was organized by the Museum from 28th November, to 2nd December, 2014. Nearly 40 such children participated in the workshop and provided an opportunity to understand their need and way of expression.

2.2.9. A special programme entitled 'Chamyam-II' was organised at KIRTADS campus, Cevayar, Kerala in collaboration with KIRTADS, Kerala from 4th to 8th December, 2014. In this programme 32 tribal artists from Nagaland, Arunachal Pradesh, Assam, Tamilnadu, Madhya Pradesh, Chhattisgarh, Maharashtra and Kerala participated and demonstrated their craft skill.

2.2.10. भारतीय समुदायों की वैविध्यपूर्ण अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के दृष्यांकन के उद्देश्य से संग्रहालय द्वारा देश भर में कार्यक्रम और गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। इस श्रंखला को जारी रखते हुए इंगांरामासं ने 'ग्लोरी ऑफ लॉर्ड पाखांग्बा' शीर्षक से एक 15 दिवसीय कलाकार कार्यशाला का आयोजन खुरई पुतिबा सामुदायिक भवन, इम्फाल में 4 से 18 दिसम्बर, 2014 तक किया।

2.2.11. संग्रहालय द्वारा छत्तीसगढ़, ओडिशा, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल तथा लद्दाख के टेराकोटा कलाकारों की एक कार्यशाला शिल्पायन, 15 जनवरी, 2015 से आयोजित की गई। पारम्परिक कुम्हारों तथा टेराकोटा कलाकारों ने संग्रहालय का दौरा किया तथा संग्रहालय की मुक्ताकाश प्रदर्शनी में प्रदर्शन हेतु नये प्रादर्श तैयार किये।

2.2.12. 'पाषाण शिल्प कार्यशाला' शीर्षक से छत्तीसगढ़, ओडिशा तथा राजस्थान के पारम्परिक पाषाण शिल्पियों की एक प्रादर्श निर्माण कार्यशाला संग्रहालय द्वारा 15 जनवरी, 2015 से आयोजित की गई, जिसमें प्रतिभागी कलाकारों ने संगमरमर तथा सैण्ड स्टोन पर लोक एवं जनजातीय देवी-देवताओं की मूर्तियाँ तैयार कीं।

2.2.13. संग्रहालय द्वारा भोपाल शहर के गोंड तथा भील कलाकारों की एक चित्रकला कार्यशाला आयोजित की गई। प्रतिभागी कलाकारों ने संग्रहालय की बाउंड्री वॉल के 16 पैनल्स पर चित्रकारी की।

2.2.14. चित्र गाथा : ओडिशा, झारखण्ड तथा पश्चिम बंगाल के पटचित्रकारों की एक कार्यशाला 2 से 11 फरवरी, 2015 तक भोपाल स्थित संग्रहालय परिसर में 40 लोक व जनजातीय कलाकारों की प्रतिभागिता में आयोजित की गई। इस कार्यशाला का उद्घाटन विख्यात चित्रकार पद्मश्री सच्चिदा नागदेव द्वारा किया गया।

2.2.15. लोक एवं जनजातीय चित्रकारों की एक सप्ताह की एक राष्ट्र स्तरीय प्रशिक्षण सह प्रदर्शन कार्यशाला का आयोजन इंगांरामासं द्वारा 20 से 26 फरवरी, 2015 तक जगदगुरू रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट के सहयोग से चित्रकूट में किया गया। देश के विभिन्न भागों से लगभग 15 लोक व जनजातीय कलाकारों ने इस राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

2.2.16. पूर्वोत्तर भारत की कला परम्पराओं और कलाकारों को अन्य राज्यों के लोगों से परिचित कराने के उद्देश्य से 'ईशानी' शीर्षक से पांच दिवसीय शिल्प कार्यशाला का आयोजन 1 से 5 मार्च, 2015 तक गुरूसदय संग्रहालय, कोलकाता के सहयोग से पूर्वोत्तर राज्यों के 20 कलाकारों की प्रतिभागिता में कोलकाता में किया गया।

2.2.17. 'राष्ट्रीय बहुमाध्यमिक जनजातीय कला कार्यशाला' शीर्षक से बारह दिवसीय कलाकार कार्यशाला 26 मार्च से ललित कला अकादमी, नई दिल्ली तथा भारत भवन, भोपाल के सहयोग से भोपाल में आयोजित की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री मनोज श्रीवास्तव, सचिव, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश शासन द्वारा 26 मार्च, 2015 को किया गया। इस कार्यशाला में तमिलनाडु, जम्मू कश्मीर आंध्रप्रदेश, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, मिजोरम, त्रिपुरा, मेघालय, सिक्किम, नई दिल्ली, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, ओडिशा, पश्चिम बंगाल तथा राजस्थान के 83 जनजातीय कलाकारों ने प्रतिभागिता की तथा चित्रकला, सिरेमिक, टेराकोटा व धातु शिल्प इत्यादि में अपने कौशल का प्रदर्शन किया।

शिल्पायन कार्यशाला के दौरान तैयार आकृति को अंतिम रूप देता वेल्लार कलाकार
Vellar artist giving finishing touch to the image prepared during Shilpayan workshop.

जनजातीय जीवन की आकृतियों को पाषाण स्तम्भ पर उकेरते छत्तीसगढ़ के पाषाण शिल्पी।
Stone carvers from Chhattisgarh carving out stone pillar with images of tribal life.

पाषाण शिल्प कार्यशाला के दौरान संगमरमर को तराशता ओड़िशा का एक मंदिर कारीगर।
Temple artist from Odisha carving out marble stone during the Pashan Shilp Karyshala.

शिल्पायन कलाकार कार्यशाला के दौरान प्रादर्श तैयार करते ओडिशा के पारंपरिक कुम्हार।
Traditional potters from Odisha preparing exhibit during the Shilpayan artist workshop.

शिल्पायन कलाकार कार्यशाला में मिट्टी से प्रादर्श तैयार करता छत्तीसगढ़ का कुम्हार।
Potter from Chhattisgarh preparing clay object during Shilpayan artist workshop.

भू–रंजना कलाकार कार्यशाला का एक दृश्य।
A view of the 'Bhoo Ranjana' artist workshop.

चित्रगाथा कलाकार कार्यशाला की झल्कियाँ।
Glimpse of 'Chitragatha' artist workshop.

चित्रगाथा कलाकार कार्यशाला की झल्कियाँ।
Glimpse of 'Chitragatha' artist workshop.

राष्ट्रीय बहुमाध्यमिक जनजातीय कला कार्यशाला में चित्रकारीरत् एक भील कलाकार।
A Bhila artist preparing painting in National Multimedia Tribal Art workshop.

राष्ट्रीय बहुमाध्यमिक जनजातीय कला कार्यशाला में कलाकारों व आमंत्रित अतिथियों के बीच सम्वाद का एक दृश्य।

A view of interaction between artist and invitees during the National Multimedia Tribal Art workshop.

2.2.10.With an aim to visualize the vivid heritage of intangible culture of different Indian communities, the Museum organizes programmes and activities across the country. Continuing the series, IGRMS organized a 15 day artists workshop entitled 'Glory of Lord Pakhangba' at Khurai Putthiba community Hall, Imphal from 4th to 18th December, 2014.

2.2.11.'Shilpayan' an artists workshop of terracotta artists from Chhattisgarh, Odisha, Tamilnadu, West Bengal and Laddakh was organized by the Museum from 15th January, 2015. Traditional potters and terracotta artists visited the Museum and prepared new objects for display in the open air exhibitions of the museum.

2.2.12.An exhibit preparation workshop entitled 'Pashan Shilp Karyshala' of traditional stone carvers from Chhattisgarh, Odisha and Rajasthan was organised by the Museum from 15th January, 2015, in which participating artists prepared images of folk and tribal deities on marble and sand stone.

2.2.13. A painting workshop of Gond and Bhill artists from the Bhopal city was organized by the Museum. Participating artists prepared paintings on 16 panels of the boundary wall of the Museum.

2.2.14.Chitra-Gatha: A workshop of scroll painters of Odisha, Jharkhand and West Bengal was organised from 2nd to 11th February, 2015 in Museum premises at Bhopal with participation of 40 folk and tribal artists. This workshop was inaugurated by renowned painter Padmashri Sachida Nagdev.

2.2.15.A week-long national level training cum demonstration workshop of folk and tribal painters was organised by IGRMS from 20th to 26th February, 2015 in collaboration with Jagadguru Rambhadracharya Viklang Vishwavidhyalaya, Chitrakut at Chitrakut. Around 15 folk and tribal painters from various parts of country took part in this National Workshop.

2.2.16. Five day long craft workshop entitled 'Ishanee' with an aim to introduce art traditions and the artisans of North-East to the people of other States was organised from 1st to 5th March 2015 at Kolkata in collaboration with Gurusaday Museum, Kolkata with participation of 20 artists from North Eastern States.

2.2.17. Twelve day long artists workshop entitled "National Multimedia Tribal Art Workshop" was organized from 26th March, 2015 at Bhopal in collaboration with Lalit Kala Academy, New Delhi and Bharat Bhawan, Bhopal.The programme was inaugurated by Shri Manoj Shivastava, Secretary, Culture, Government of Madhya Pradesh on 26th March. In this workshop 83 tribal artists from Tamilnadu, Jammu & Kashmir, Andhra Pradesh, Himachal Pradesh, Karnataka, Mizoram, Tripura, Meghalaya, Sikkim, New Delhi, Madhya Pradesh, Chhattisgarh, Bihar, Odisha, West Bengal and Rajasthan participated and demonstrated their skill in painting, ceramic, Terracotta and metal casting etc.

संग्रहालय की बाउन्ड्री वॉल पर चित्रकारी करता एक गोंड कलाकार

A Gond artist preparing painting on the boundary wall of museum.

2.3. **संगोष्ठियां/ परिसम्वाद/ कार्यशालाएं:** संग्रहालय द्वारा मानवजाति के सामजिक–सांस्कृतिक संबंधो के विभिन्न पक्षों पर संगोष्ठियां, परिसंवाद, संग्रहालय लोकरूचि व्याख्यान इत्यादि का आयोजन किया जाता है। यह गतिविधियाँ देश में एक नवीन संग्रहालय आंदोलन उत्पन्न करने के लिए उपयोगी है। अवधि के दौरान संग्रहालय द्वारा देश के विभिन्न भागो में निम्नलिखित नौ विषयों पर संगोष्ठियाँ/ परिसम्वाद आयोजित किए गए।

2.3.1. **मानवशास्त्र तथा संग्रहालय पर राष्ट्रीय कार्यशाला :** भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में मानवशास्त्र विभाग के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों हेतु मानवशास्त्र तथा संग्रहालय पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन 21 से 23 अक्टूबर, 2014 तक भोपाल में किया गया। इस कार्यशाला में 38 विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की। उन्हें विख्यात मानवशास्त्रियों प्रो. अजीत के दाण्डा, कोलकाता तथा प्रो. किशोर के बासा, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर द्वारा संग्रहालय तथा मानव विज्ञान से संबंधित विषयों पर व्याख्यान दिये गये। उन्हें संग्रहालय की विभिन्न मुक्ताकाश तथा अंतरंग प्रदर्शनियों एवं सुविधा इकाईयों का भ्रमण कराया गया। कार्यशाला के दौरान विश्व धरोहर स्थल भीमबेटका का शैक्षणिक भ्रमण भी आयोजित किया गया।

2.3.2. **मैपिंग ऑफ आर्ट एण्ड कल्चर ऑफ ट्राइब्स इन इण्डिया : ट्रेडीशन एण्ड मॉडर्निटी :** संग्रहालय ने बस्तर विश्वविद्यालय के साथ एक राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन में सहयोग किया। संगोष्ठी का उद्घाटन श्री शिवराम प्रसाद कलूरी, महानिरीक्षक, पुलिस, बस्तर रेंज द्वारा किया गया तथा देश के विभिन्न भागों से विद्वानों द्वारा प्रतिभागिता की गई।

2.3.3. **मानवशास्त्र तथा संग्रहालय पर राष्ट्रीय कार्यशाला :** मानवशास्त्र विभाग के विश्वविद्यालयीन अध्यापकों की एक राष्ट्रीय कार्यशाला 7 से 9 जनवरी, 2015 तक आयोजित की गई। दिल्ली, मद्रास, अमरकंटक, पॉण्डिचेरी, मणीपुर, धारवाड़, रांची इत्यादि विश्वविद्यलयों के लगभग 25 शिक्षकों ने कार्यशाला में प्रतिभागिता की। प्रो. के.के. बासा तथा प्रो. अजीत के दाण्डा ने मानवशास्त्र तथा संग्रहालय की विषयवस्तु पर क्रमशः उद्घाटन एवं समापन व्याख्यान दिये।

2.3.4. **डेवलपमेन्ट, रिसोर्सेस एण्ड लाइवलीहुड :** केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद के सहयोग से एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 12 एवं 13 फरवरी, 2015 को हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद में किया गया।

2.3.5. **स्टेटस ऑफ ट्रायबल वूमेन इन सेन्ट्रल इण्डिया : इश्यूस एण्ड चैलेन्जेस :** इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक के सहयोग से एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 13 व 14 फरवरी, 2015 आईजीएनटीयू, अमरकंटक में किया गया।

2.3.6. **इण्डियन एन्थ्रोपोलॉजिकल कॉंग्रेस :** इण्डियन नैशनल कान्फेडरेशन एण्ड एकेडमी ऑफ एन्थ्रोपोलॉजी के सहयोग से 21 से 23 फरवरी, 2015 तक उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, ओडिशा में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

2.3.7. **एन्थ्रोपोलॉजिकल पर्सपेक्टिव्स ऑन इनवायरान्मेंट, डेवलपमेंट, पब्लिक पॉलिसी एण्ड हेल्थ :** दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के सहयोग से एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 27 व 28 फरवरी, 2015 को दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली में किया गया।

2.3.8. **एन्थ्रोपोलॉजिकल रिसर्च्स इन इण्डिया : ट्रेडीशन्स एण्ड ट्रांजीशन :** मानवशास्त्र विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय के सहयोग से एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 4 एवं 5 मार्च, 2015 को चण्डीगढ़ में किया गया।

2.3.9. **जेण्डर इम्प्लीकेशन्स ऑफ ट्रायबल कस्टमरी लॉ :** उत्तर–पूर्व सामाजिक शोध केंद्र, गौहाटी, असम के सहयोग से एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 20 एवं 21 मार्च, 2015 को गौहाटी, असम में किया गया।

मानवशास्त्रीय प्रादर्शों के संरक्षण पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में व्याख्यान देते प्रो.के. के. जैन।
Prof. K.K. Jain delivering lecture in the National workshop on conservation of ethnographic specimen.

मानवशास्त्रीय प्रादर्शों के संरक्षण पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करते प्रतिभागी।
Participants receiving hands on training in the National workshop on conservation of ethnographic specimen.

मानवशास्त्र तथा संग्रहालय पर विश्वविद्यालयीन शिक्षकों की राष्ट्रीय कार्यशाला के प्रतिभागियों द्वारा संग्रहालय की प्रदर्शनियों का भ्रमण।
Visit to Museum's exhibition by the participants of National workshop on Anthropology and Museum for university teachers.

मानवशास्त्र तथा संग्रहालय पर राष्ट्रीय कार्यशाला को सम्बोधित करते प्रो. सरित कुमार चौधुरी, निदेशक, इंगांरामासं।
Prof. Sarit Kumar Chaudhuri, Director, IGRMS addressing the National workshop on Anthropology and Museum.

मानवशास्त्र एवं संग्रहालय विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला के समापन कार्यक्रम का एक दृश्य।
A view of valedictory programme of National workshop on Anthropology and Museum.

मानवशास्त्र व संग्रहालय पर राष्ट्रीय कार्यशाला के प्रतिभागियों को सम्बोधित करते प्रो. किशोर के.बासा।
Prof. Kishore K.Basa addressing the participants of National workshop on Anthropology and Museum.

संग्रहालय लोकरूचि व्याख्यान माला में व्याख्यान देती सुश्री जार्जुम एते।
Ms. Jarjum Ete delivering lecture under the Museum Popular Lecture series.

इंगांरामासं द्वारा गुरूसदाय संग्रहालय, कोलकाता में आयोजित विशेष कार्यक्रम 'ईशानी' के दौरान व्याख्यान देते प्रो. सोमेन सेन।
Prof. Somen Sen giving lecture during the special programme 'Ishanee' organised by IGRMS at Gurusadai Museum, Kolkata.

2.3. **Seminars/Conferences/Workshops:** The Museum organises seminars, symposium, colloquium, museum popular lectures etc on various aspects of socio-cultural relations of humankind. These activities are useful to generate a new museum movement in the country. During the period nine such seminars/symposiums on the following themes were organised in different parts of the country:

2.3.1. **National Workshop on Anthropology and Museum:** A national workshop on Anthropology and Museums was organized at Bhopal from 21st to 23rd October 2014 for the post-graduate students of department of anthropology in various universities of India. In this workshop altogether 38 students participated. They were given lectures by renowned Anthropologist Prof. Ajit K. Danda, Kolkata and Prof. Kishor K. Basa, Utkal University, Bhubneshwar on topics related to Museums and Anthropology. They were taken to the various open-air and indoor exhibitions and facility units of the Sangrahalaya. An educational tour to World Heritage site Bhimbetka was also organised during the workshop.

2.3.2. **Mapping Art and Culture of Tribes in India: Tradition and Modernity:** The Sangrahalaya collaborated with the Bastar University, Jagadalpur in organisation of a National Seminar. The Seminar was inaugurated by Shri Shiva Ram Prasad Kalluri, Inspector General of Police, Bastar Range and participated by scholars from various parts of the country.

2.3.3. **National Workshop on Anthropology and Museum:** A National workshop of University teachers of Department of Anthropology was organized from 7th to 9th January, 2015. Nearly 25 teachers from the University of Delhi, Madras, Amarkantak, Pondicherry, Manipur, Dharwad, Ranchi etc. participated in the workshop. Prof. K.K. Basa and Prof. Ajit K. Danda gave inaugural and valedictory lectures respectively on the theme of Anthropology and Museum.

2.3.4. **Development, Resources and livelihood:** An International Seminar was organised in collaboration with Central University, Hyderabad on 12th & 13th February, 2015 at University of Hyderabad, Hyderabad.

2.3.5. **Status of Tribal Women in Central India: Issues & Challenges:** A National seminar was organised in collaboration with Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak on 13th and 14th February, 2015 at IGNTU, Amarkantak.

2.3.6. **Indian Anthropological Congress:** 2015: A National Seminar was organised in collaboration with Indian National Confederation and Academy of Anthropology from 21st to 23rd February, 2015 at Utkal University, Bhubneswar, Odisha.

2.3.7. **Anthropological Perspectives on Environment, Development, Public Policy and Health:** A National Seminar was organised in collaboration with University of Delhi, Delhi on 27th & 28th February, 2015 at University of Delhi, Delhi.

2.3.8. **Anthropological Researches in India: Traditions and Transition:** A national seminar was organized on 4th and 5th March, 2015 at Chandigarh in collaboration with Department of Anthropology, Punjab University.

2.3.9. **Gender Implications of Tribal Customary Law:** A national seminar was organized on 20th and 21st March, 2015 at Guwahati in collaboration with North Eastern Social Research Centre, Guwahati, Assam.

इंगारामासं द्वारा गुरुसदाय संग्रहालय, कोलकाता में आयोजित कार्यक्रम 'ईशानी' के दौरान व्याख्यान देते श्री गौतम शर्मा, गौहाटी।

Shri Goutam Sharma, Guwahati delivering lecture during 'Ishnee' organised by IGRMS at Gurusadai Museum, Kolkata.

2.4. **संग्रहालय लोकरूचि व्याख्यानः** अवधि के दौरान संग्रहालय में निम्नलिखित संग्रहालय लोकरूचि व्याख्यानों का आयोजन किया गया।

2.4.1. डॉ. विजय प्रकाश शर्मा, परियोजना निदेशक, राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान, हैदराबाद ने 'मैन, म्यूज़ियम एण्ड कल्चर' शीर्षक से 9 सितम्बर, 2014 को एक संग्रहालय लोकरूचि व्याख्यान दिया। व्याख्यान की अध्यक्षता प्रो. एस.एन चौधरी, राजीव गांधी चेयर, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय ने की।

2.4.2 श्रीमती जार्जुम एते, अध्यक्ष, इण्डियन काउन्सिल ऑफ चाइल्ड वेलफेयर, अरूणाचल प्रदेश ने 'एफर्ट्स ऑफ द ट्रायबल वूमेन ऑफ नार्थईस्ट इण्डिया टूवर्ड्स पोलिटिकल लीडरशिप : केसेस फ्रॉम पैट्रियार्कल अरूणाचल प्रदेश एण्ड नागालैण्ड' पर एक संग्रहालय लोकरूचि व्याख्यान दिया।

2.4.3 फ्रांसीसी छायाकार सुश्री जूली वेन ने 'फ्रॉम अर्थ टू अर्थ' विषय पर एक व्याख्यान दिया। उनके शोध और प्रलेखन पर आधारित एक फिल्म का प्रदर्शन 30 मार्च, 2015 को भोपाल में किया गया। व्याख्यान की अध्यक्षता प्रो. सरित कुमार चौधुरी, निदेशक, इंगारामासं ने की।

2.5. **वार्षिक इंगांरामासं व्याख्यान :**

2.5.1. 10वे वार्षिक इंगांरामासं व्याख्यान का आयोजन 7 जनवरी, 2015 को किया गया जिसमें प्रो. शालिना मेहता, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ ने 'सेगासिटी ऑफ नोइंग सोशल वल्नरेबिलिटी : ए रिसोर्स मल्टीप्लायर फार डिज़ास्टर मिटीगेशन स्ट्रेट्जाइज़िंग' विषय पर व्याख्यान दिया। व्याख्यान की अध्यक्षता प्रो. अजित के दाण्डा, पूर्व निदेशक, भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण तथा सदस्य सचिव, इंका ने की।

2.5.2. 11वां वार्षिक इंगांरामासं व्याख्यान प्रो. तापती गुहा ठाकुरता, प्राध्यापक, इतिहास तथा निदेशक, सामाजिक विज्ञान अध्ययन केंद्र, कोलकाता ने 'एन एंशियेंट मान्यूमेंट फॉर माडर्न इण्डिया : सांचीस कोलोनियल एण्ड पोस्ट कोलोनियल हिस्ट्रीस' विषय पर दिया। व्याख्यान की अध्यक्षता प्रो. ए.सी. भगबती, पूर्व कुलपति, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर ने की।

संग्रहालय लोकरूचि व्याख्यान माला के अंतर्गत सुश्री जूली वैन द्वारा व्याख्यान।
Ms. Julie Wayne delivering lecture under the Museum Popular Lecture series.

'मानव, संग्रहालय और संस्कृति' पर व्याख्यान देते डॉ. विजय प्रकाश शर्मा
Dr. Vijay Prakash Sharma giving lecture on 'Man, Museum and Culture'.

2.4. **Museum Popular Lecture:** During the period following museum popular lectures were organised in the Sangrahalaya:

2.4.1.Dr. Vijaya Prakash Sharma, Project Director, National Institute of Rural Development, Hyderabad delivered Museum Popular Lecturer entitled 'Man, Museum and Culture' on 9th September, 2014. The lecture was chaired by Prof. S.N. Choudhari, Rajiv Gandhi Chair, Barkatullah University, Bhopal.

2.4.2. Ms. Jarjum Ete, President, Indian Council of Child Welfare, Arunachal Pradesh delivered a lecture on ''Efforts of the Tribal Women of North-East India towards Political Leadership: Cases from Patriarchal Arunachal Pradesh and Nagaland''.

2.4.3. French Photographer Ms. Juli Ven delivered a lecture on the topic 'From Earth to Earth'. A film based on her research and documentation was screened on 30th March, 2015 at Bhopal. The lecture was chaired by prof. Sarit Kumar Chaudhury, Director, IGRMS

2.5. **Annual IGRMS Lecture:**

2.5.1.10th Annual IGRMS Lecture was organized on 7th January, 2015 in which Prof. Shalina Mehta, Punjab University, Chandigarh delivered a lecture on the topic "Sagacity of Knowing Social Vulnerability: A Resource Multiplier for Disaster Mitigation Strategizing". The lecture was chaired by Prof. A.K. Danda, Former Director, Anthropological Survey of India & Member Secretary, INCAA.

2.5.2.11th Annual IGRMS lecture was delivered by Prof. Tapati Guha-Thakurta, Professor in History and Director, Centre for Studies in Social Sciences, Kolkata on the topic 'An Ancient Monument for Modern India: Sanchi's Colonial and Post-colonial Histories'. The lecture was chaired by Prof. A.C. Bhagbati, Former Vice-Chancellor, Rajiv Gandhi University, Itanagar.

10वाँ वार्षिक इंगारामासं व्याख्यान देती प्रो. शालिना मेहता।
Prof. Shalina Mehta delivering 10th Annual IGRMS lecture.

11वाँ वार्षिक इंगारामासं व्याख्यान देती प्रो. तापती गुहा ठाकुरता।
Prof. Tapti Guha Thakurta delivering 11th Annual IGRMS lecture.

10वाँ वार्षिक इंगारामासं व्याख्यान की अध्यक्षता करते डॉ. अजित के डांडा।
Dr. Ajit K Danda presiding the 10th Annual IGRMS lecture

प्रो. तापती गुहा ठाकुरता को संग्रहालय की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट करते प्रो. एस.के. चौधुरी।
Prof. S.K. Chaudhuri presenting memento from IGRMS to Prof. Tapti Guha Thakurta.

2.6. **प्रस्तुतिकारी कलाओं का प्रदर्शनः**

सभी कला रूपों में मानव जीवन में संगीत और नृत्य का महत्वपूर्ण स्थान है और लोक तथा जनजातीय समाजों में तो यह उनके जीवन और संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। अपने विविध रूपों में संगीत मानवीय भावों के सम्प्रेषण और अभिव्यक्ति सहित शिक्षण का भी माध्यम रहा है। संग्रहालय को समुदायों तक पहुँचाने तथा राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत करने हेतु इंगारामासं लोक जनजातीय, शास्त्रीय संगीत व मंचीय प्रस्तुतियाँ इत्यादि के विविध कार्यक्रमों का आयोजन करता है। यह गतिविधियाँ विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच सांस्कृतिक समझ को मजबूती प्रदान करने तथा दूसरी ओर देश में नव संग्रहालय आन्दोलन की शुरूवात् में उपयोगी होती है। अवधि के दौरान संग्रहालय द्वारा भोपाल सहित देश के विभिन्न भागों में 31 कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

2.6.1. **पूर्वांचली :** पूर्वांचली शीर्षक से 30 मार्च, 2014 को शुरू हुआ पांच दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम 3 अप्रेल, 2014 को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का आयोजन पश्चिम मध्य रेल्वे, जबलपुर के सहयोग से किया गया। असम, त्रिपुरा, मणीपुर तथा मेघालय के प्रस्तुतिकारी कलाकारों ने कार्यक्रम में उनकी सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं।

2.6.2. **जम्मू उत्सव :** जम्मू में आयोजित 'जम्मू सांस्कृतिक उत्सव' के भाग के रूप में 'जम्मू उत्सव' शीर्षक से तीन दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम 14 से 16 अप्रैल, 2014 तक हुआ । उत्सव के दौरान गुजरात, पंजाब, छत्तीसगढ़ तथा झारखण्ड के कलाकारों द्वारा पारम्परिक नृत्य प्रस्तुत किये गये।

2.6.3. **पूनम-32 :** 'पूनम' शीर्षक से शास्त्रीय संगीत की विशेष कार्यक्रम श्रृंखला के अंतर्गत 15 अप्रेल, 2014 को भोपाल में 32वीं कड़ी के रूप में सुविख्यात गायिका पद्मभूषण बेगम परवीन सुल्ताना का गायन आयोजित किया गया।

2.6.4. **सप्तक :** संग्रहालय ने माजुली, जोरहाट, असम में 24 से 26 अप्रेल, 2014 तक सप्तक शीर्षक से तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन नतुन कमला बाड़ी सत्र, माजुली के सहयोग से किया। इस कार्यक्रम में इस सबसे बड़े नदी द्वीप सहित भारत के विभिन्न पूर्वोत्तर राज्यों के कलाकारों ने अपने पारम्परिक नृत्यों की झलकियाँ प्रस्तुत कीं।

2.6.5. **पूनम-33** पूनम शीर्षक से शास्त्रीय संगीत की विशेष कार्यक्रम श्रृंखला के अंतर्गत सुविख्यात गायक पद्मश्री पण्डित उल्हास कशालकर के शास्त्रीय गायन का आयोजन 14 मई, 2014 को 33वी कड़ी के रूप में किया गया।

2.6.6. **पूर्वोत्सव :** पूर्वोत्सव शीर्षक से तीन दिवसीय सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन 1 से 3 मई, 2014 तक संग्रहालय परिसर भोपाल में किया गया जिसमें भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों से कलाकारों ने लोक व जनजातीय नृत्यों की प्रस्तुति दी।

2.6.7. **मुखौटा नृत्य :** अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर पश्चिम बंगाल , झारखण्ड और महाराष्ट्र के मुखौटा नृत्यों की तीन दिवसीय सांस्कृतिक प्रस्तुति का आयोजन 18 से 20 मई, 2014 तक किया गया।

2.6.8. **कथक नृत्य :** संग्रहालय द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर भोपाल स्थित अपने परिसर में कथक नृत्य की एक विषय केंद्रित प्रस्तुति का आयोजन किया गया। नृत्य सम्राट पण्डित बिरजू महाराज के पुत्र श्री दीपक महाराज ने दर्शकों को अपनी प्रस्तुति से मुग्ध कर दिया।

2.6.9. **जनरंग :** पूर्वोत्तर राज्यों की प्रदर्शनात्मक कला प्रस्तुतियों पर केंद्रित तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन शिलांग में स्टेट सेन्ट्रल लाइब्रेरी, कला एवं संस्कृति विभाग, मेघालय सरकार, शिलांग के सहयोग से 17 से 19 जून, 2014 तक किया गया। इस कार्यक्रम में पूर्वोत्तर राज्यों के कलाकारों ने भाग लिया और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी।

2.6.10. **शक्ति :** संग्रहालय द्वारा पूर्वी भारत के लोकनृत्य छाऊ पर आयोजित 'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम के प्रतिभागियों ने श्री चन्द्र माधव बारीक के मार्गदर्शन में एक नृत्य नाटिका तैयार की। प्रशिक्षण के उपरांत उन्होंने शक्ति शीर्षक से महिषासुर मर्दिनी की कथा दर्शाती प्रस्तुति 1 अगस्त, 2014 को शहीद भवन, भोपाल में दी।

2.6.11. **भारतीय ढोल :** विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर 27 सितम्बर, 2014 को 'भारतीय ढोल' (भारत के ढोल) शीर्षक से शास्त्रीय एवं लोक ताल वाद्य यंत्रों की प्रस्तुति की एक सांस्कृतिक संध्या भोपाल में आयोजित की गई।

2.6.12. **पूनम-34 :** पूनम पूर्णिमा की रात विख्यात भारतीय शास्त्रीय संगीतकारों की प्रस्तुति का संग्रहालय द्वारा आयोजित सर्वाधिक प्रतिष्ठित व लोकप्रिय सांस्कृतिक कार्यक्रम है। इस श्रृंखला में 34वां कार्यक्रम 8 अक्टूबर 2014 को आयोजित किया गया जिसमें पद्मश्री पण्डित अजय चक्रवर्ती ने अपने शास्त्रीय गायन से दर्शकों को आनंदित किया।

संग्रहालय द्वारा जबलपुर में आयोजित कार्यक्रम पूर्वांचली के दौरान नृत्य प्रस्तुति का एक दृश्य।
A view of dance performance during programme Poorvanchali organised by the Museum at Jabalpur

मणिपुर के कलाकारों द्वारा पारंपरिक ढोल चोलम की प्रस्तुति का एक दृश्य।
A view of traditional Dhol Cholam performance by the artists from Manipur.

छाउ लोकनृत्य पर शैक्षणिक कार्यक्रम के प्रतिभगियों द्वारा तैयार और प्रस्तुत नृत्य नाटिका 'शक्ति' का एक दृश्य।
A view of ballet 'Shakti' prepared and performed by the participants of education programme on Chhow folk dance.

पूनम–34 के अंतर्गत पं. अजय चक्रवर्ती द्वारा शास्त्रीय गायन।
Classical recitation by Pt. Ajay Chakravarti under Poonam-34.

संग्रहालय द्वारा जम्मू में आयोजित कार्यक्रम के दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुति का एक दृश्य।
A view of Cultural performance during a programme organised by the Museum at Jammu.

संग्रहालय परिसर में भारती बंधु द्वारा कबीर गायन की प्रस्तुति।
Performance of Kabeer gayan by Bharati Bandhu in the museum premises.

2.6. **Performing Art Presentations:**

Among all art forms dance and music have a significant position in life of humankind, and in folk and tribal societies it is an inseparable part of their life and culture. Music in its varied forms has been a medium of communication, expression of human feelings and a way of teaching as well. As part of its activities to take museum to the door steps of communities and strengthen the spirit of national integration IGRMS organises various programmes of the live presentation of folk, tribal, classical music, theatrical performance etc. These activities are useful to strengthen the cultural understanding among the people of different region and also to generate new museum movement in the country on other hand. During the period the museum organised 31 programmes at different places of the country including Bhopal.

2.6.1. **Poorvanchali:** A five day cultural programme entitled "Poorvanchali" which began on 30th March, 2014 concluded on 3rd April, 2014. The programme was organised in collaboration with West Central Railway, Jabalpur. Performing Artists from Assam, Tripura, Manipur and Meghalaya gave their cultural performance in the programme.

2.6.2. **Jammu Utsav:** Three day cultural event entitled 'Jammu Utsav' was held as part of Jammu Cultural festival organised at Jammu from 14th to 16th April, 2014. Artists from Gujarat, Punjab, Chhattisgarh and Jharkhand presented traditional dances during the Utsav.

2.6.3. **Poonam-32:** Under the series of special programme of classical music entitled 'Poonam" the vocal recitation of renowned vocalist Padama Bhusan Begam Parveen Sultana was organised on 15th April, 2014 as the 32nd episode at Bhopal.

2.6.4. **Saptak:** The Museum organised a three day programme entitled 'Saptak' from 24th to 26th April, 2014 at Majuli, Jorhat, Assam in collaboration with Natun Kamla Bari Satra, Majuli. In this programme artists from various North-eastern States of India including artists from this biggest reverine island presented a glimpse of their traditional dances.

2.6.5. **Poonam-33:** Under the series of special programme of classical music entitled 'Poonam" the vocal recitation by renowned vocalist Padamashri Pt. Ulhas Kasalkar was organised on 14th May, 2014 as the 33rd episode at IGRMS

2.6.6. **Poorvotsav:** Three day cultural festival entitled "Poorvotsav" was organised in Museum premises at Bhopal from 1st to 3rd May, 2014 in which artists from North-eastern States of India gave presentation of their folk and tribal dances.

2.6.7. **Mask dance:** Three day cultural performance on Mask dance of West Bengal, Jharkhand and Maharashtra was organised from 18th to 20th May, 2014 on the occasion of International Museum Day.

2.6.8. **Kathak dance:** A thematic performance of Kathak dance on the occasion of World Environment Day was organised by the Museum in its premises at Bhopal Shri Deepak Maharaj son of Nritya Samrat Pt. Birjoo Maharaj mesmerised the audience with his performance.

2.6.9. **Jan-Rang:** A three day programme of performing art presentation focussed on North-eastern States was organised from 17th to 19th June, 2014 at Shillong in collaboration with State Central Library, Department of Art and Culture, Govt. of Meghalaya, Shillong. In this programme artists from North-eastern States participated and gave the cultural performances.

2.6.10. **Shakti:** The participants of 'Do and Learn' Museum education programme organised by the Museum on Chhow folk dance form of Eastern India prepared a ballet under the guidance of Shri Chandra Madhav Bareek. After the training, they gave presentation entitled 'Shakti' portraying the story of Mahishasur Mardini on 1st August, 2014 at Shaheed Bhawan, Bhopal

2.6.11. **Drums of India:** A musical evening entitled 'Bhartiya Dhol' (Drums of India) presenting recital of classical and folk percussion instrument was organised on the occasion of World Tourism day on 27th September, 2014 at Bhopal.

2.6.12. **Poonam-34:** Poonam is the most prestigious and popular cultural event organised by the Museum by presenting renowned Indian classical musicians on full moon night. 34th programme in this series was organised on 8th October 2014 in which Padmashri Pt. Ajoy Chakravarti enthralled the audience with his classical singing.

2.6.13. **जागृति :** रायपुर के पद्मश्री पण्डित भारती बंधु द्वारा कबीर गायन का विशेष कार्यक्रम 17 अक्टूबर, 2014 को आयोजित किया गया जिसमें उन्होंने तन, मन और पर्यावरण की स्वच्छता से संबंधित भजन प्रस्तुत किये।

2.6.14. **भारत के रंग :** 'भारत के रंग' शीर्षक से एक पॉँच दिवसीय सहयोगात्मक कार्यक्रम का आयोजन 15 से 19 नवम्बर, 2014 तक किया गया जिसमें असम, मणीपुर तथा सिक्किम के कलाकारों ने उनके पारम्परिक नृत्यों जैसे बिहू, ग्वालपड़िया, थांग टा, ढोल चौलम, दशावतार इत्यादि की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का आयोजन विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से जैसे 15 नवम्बर को जवाहर नवोदय विद्यालय, रातीबड़, 17 नवम्बर को जागरण लेक सिटी यूनिवर्सिटी, 18 नवम्बर को पश्चिम मध्य रेल्वे सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल, इटारसी तथा 19 नवम्बर को सेंट्रल प्रूफ इस्टेब्लिशमेंट, रक्षा मंत्रालय, इटारसी, साथ ही 16 नवम्बर, 2014 को इंगांरामासं परिसर में किया गया।

2.6.15. **'हॉँ, मैं सावित्री बाई फूले' :** अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बैंगलोर के सहयोग से 'हॉँ, मैं सावित्री बाई फूले' शीर्षक से एक एकल नृत्य नाटिका का आयोजन 22 नवम्बर, 2014 को वीथि संकुल के मुक्ताकाश मंच पर किया गया। सुप्रसिद्ध रंगमंच कलाकार श्रीमती सुषमा देशपांडे द्वारा प्रस्तुत नाटक 19 वीं सदी की महान समाज सुधारक श्रीमती सावित्री बाई फूले के बालिका शिक्षा विकास के प्रति विचारों पर प्रकाश डालता है। नाटक का उद्देश्य दमित और अल्प संख्यक समुदायों का उत्थान भी है।

2.6.16. जमशेदपुर, झारखंड में 15 से 18 नवम्बर 2014 तक टाटा स्टील टिस्को के सहयोग से एक सहयोगात्मक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में इंगांरामासं ने असम, अरूणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मिजोरम तथा नागालैण्ड के विभिन्न समुदायों के द्वारा पारम्परिक नृत्यों की प्रस्तुति के रूप में सहयोग किया।

2.6.17. **एक ताल एक साल :** विश्व विकलांग दिवस के अवसर पर 'एक ताल एक साल' शीर्षक से प्रस्तुतिकारी कलाओं के प्रदर्शन का एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमे विशिष्ट क्षमतावान बच्चों ने नृत्य, स्किट तथा विविध वेशभूषा प्रदर्शन की प्रस्तुति दी।

2.6.18. **छमयम-II :** किरटाड्स परिसर, सेवायर में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किरटाड्स, केरल के सहयोग से 4 से 8 दिसम्बर 2014 तक किया गया। इस कार्यक्रम में पूर्वोत्तरी राज्यों मेघालय, असम तथा त्रिपुरा के कलाकारों ने अपने पारम्परिक नृत्यों की प्रस्तुति दी।

2.6.19. एससीएसटीआरटीआई, भुवनेश्वर के सहयोग से तीन दिवसीय राष्ट्रीय जनजातीय नृत्य उत्सव का आयोजन उत्कल संगीत महाविद्यालय, भुवनेश्वर के मुक्ताकाश सभागार में किया गया। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम हेतु इंगांरामासं ने पॉच पारम्परिक जनजातीय नृत्यदलों उत्तराखंण्ड से भूटिया, गुजरात से राठवा, मध्यप्रदेश से बैगा, छत्तीसगढ से मुरिया तथा झारखंण्ड से खाड़िया को आमंत्रित किया।

2.6.20. **जुगलबन्दी :** जुगलबन्दी की एक संस्कृतिक सभा का आयोजन 12 दिसम्बर 2014 को किया गया जिसमे श्री रविशंकर उपाध्याय तथा ऋषिशंकर उपाध्याय ने पखावज की जुगलबन्दी प्रस्तुत की। कार्यक्रम के उत्तरार्ध में श्रीमती विधा लाल और श्री अभिमन्यु लाल ने कथक की जुगलबन्दी से दर्शकों को आनन्दित किया।

2.6.21. **लाई हराओबा :** संग्रहालय ने पॉच दिवसीय 'लाई हराओबा' उत्सव का आयोजन संग्रहालय परिसर में मणिपुर के शाही कारीगरों से सम्बद्ध पुजारी-पुजारिन सहित मैतेई समुदाय के 30 कलाकारों को आमंत्रित कर किया। कलाकारों ने संग्रहालय परिसर में स्थापित मणीपुर के पुनीत वन संकुल 'उमंग लाई' में पारम्परिक अनुष्ठानों की प्रस्तुति दी।

2.6.22. **धौरा री महक :** राजस्थान के लोक गीत व नृत्यों की एक सास्कृतिक संध्या का आयोजन 7 जनवरी, 2015 को किया गया। मांगणियार तथा कालबेलिया कलाकारों के एक दल ने पारम्परिक राजस्थानी संगीत व नृत्य की प्रस्तुति दी।

2.6.23. **ट्रायम्फ ऑफ लव :** कैथार्सिस थिएटर ट्रूप ऑफ ओराडिया, रोमानिया के कलाकारों ने एक फ्रेंच नाटक ल त्रियाम्फ द ल'मोर के अंग्रेजी रुपान्तरण की प्रस्तुति संग्रहालय परिसर में 22 जनवरी 2015 को दी। कार्यक्रम का आयोजन आइसेक्ट विश्वविद्यालय, रायसेन तथा इंगांरामासं द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

2.6.24. **लोकरंग सांस्कृतिक उत्सवः** संग्रहालय ने असम, मणीपुर तथा मेघालय से प्रस्तुतिकारी कलाकार दलों को प्रायोजित कर संस्कृति संचालनालय, मध्यप्रदेश राज्य शासन के साथ 26 से 28 जनवरी, 2015 तक प्रतिष्ठित 'लोकरंग सांस्कृतिक उत्सव' के आयोजन में सहयोग किया।

2.6.25. **भारत के रंग :** संग्रहालय की विद्यालयों हेतु शैक्षणिक एवं आउटरीच गतिविधियों के भाग के रूप में केन्द्रीय विद्यालय संगठन के सहयोग से भारत के रंग शीर्षक से दो दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन 29 एवं 30 जनवरी 2015 को केन्द्रीय विद्यालय रायसेन तथा सीहोर में किया गया। कार्यक्रम में असम, मणीपुर व मेघालय के कलाकारों ने प्रतिभागिता की।

2.6.26. **ऋतु समृत :** संग्रहालय द्वारा ओरोविल बाम्बू सेन्टर, पॉडिचेरी के सहयोग से एक विशेष प्रदर्शनी तथा कलाकार कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसके दौरान 25 से 28 फरवरी 2015 तक पूर्वोत्तरी राज्यों के लोक कलाकारों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियॉ दी।

2.6.27. **पुनीत वन महोत्सव :** इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय ने अपने परिसर में 7 व 8 फरवरी 2015 को दो दिवसीय 'पुनीत वन महोत्सव' का आयोजन किया। तमिलनाडु, राजस्थान, केरल तथा महाराष्ट्र राज्यों के समुदाय प्रतिनिधियों ने अपने समुदाय के पुनीतवन से संबंधित अनुष्ठानों की प्रस्तुति दी।

2.6.28. **ईशानी :** पूर्वोत्तर पर तीन दिवसीय एक विशेष कार्यक्रम 3 से 5 मार्च 2015 तक गुरूसदय संग्रहालय कोलकाता के सहयोग से आयोजित किया गया। पूर्वोत्तर राज्यों के कलाकारों ने प्रतिभागिता की और सांस्कृतिक प्रस्तुतियॉ दी।

2.6.29. **को-अहं :** प्रसिध्द भारतीय शास्त्रीय नृत्यांगना पद्मश्री शोभना नारायण ने 8 मार्च 2015 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कथक नृत्य की प्रस्तुति दी।

2.6.30. **फाग उत्सव :** होली पर्व से संबंधित गीतों व नृत्यों पर केन्द्रित एक कार्यक्रम का आयोजन संग्रहालय द्वारा 10 मार्च 2015 को किया गया, जिसमे इन्दौर के केसरिया बालम ग्रुप ने प्रस्तुतियॉ दीं।

2.6.31. पद्मभूषण पं. हरिप्रसाद चौरसिया ने 23 मार्च 2015 को **बासुरी वादन** की प्रस्तुति दी।

संग्रहालय द्वारा केरल में आयोजित छमयम-2 के दौरान नृत्य प्रस्तुतियों का एक दृश्य।
A view of dance performances during Chhamyam-2 organised by the Museum at Kerala.

2.6.13. **Jagriti:** A special programme of Kabir Gayan by Padmashri Pt. Bharti Bandhu of Raipur was organised on 17th October, 2014 in which they presented Bhajans related to cleanliness of both mind and body as well as of surrounding areas.

2.6.14. **Bharat Ke Rang:** A five day collaborative programme entitled 'Bharat Ke Rang' was organised from 15th to 19th November, 2014 in which artists from Assam, Manipur, and Sikkim gave the presentation of their traditional dances like Bihu, Gwal Padiya, Satriya, Thang Ta, Dhol Cholam, Dashavtar etc. The programme was organised in collaboration with various institutes like Jawahar Navodaya Vidyalaya, Ratibad on 15th November, Jagran Lakecity University, Bhopal on 17th November, West Central Railway Senior Secondary School, Itarsi on 18th November, Central Proof Establishment, Ministry of Defence, Itarsi on 19th November as well as at IGRMS campus on 16th November, 2014.

2.6.15. **Haan, Main Savitribai Phoole:** A solo play entitled 'Haan, Main Savitribai Phoole' was organised in collaboration with Ajeem Premji University, Banglore at the amphitheatre of Veethi Sankul on 22nd November, 2014. Presented by famous theater artist Smt. Sushma Deshpande the play focussed on the thoughts of great social reformist of 19th century Mrs. Savitri Bai Phoole towards the development of education among girl child. The play also aimed towards elevation of depressed and minority communities.

2.6.16. A collaborative programme was organised from 15th to 18th November, 2014 at Jamshedpur, Jharkhand in collaboration with Tata Steel TISCO. In this programme IGRMS supported with the traditional dance presentations by various communities of Assam, Arunachal Pradesh, Tripura, Mizoram and Nagaland.

2.6.17. **Ek Taal Ek Saal:** On the occasion of World Disabled Day, a special programme of performing art presentations entitled 'Ek Taal Ek Saal' was organised in which distinctly abled children presented dance, skit and fancy dress show.

2.6.18. **Chamyam-II:** A special programme was organised at KIRTADS campus, Cevayar in collaboration with KIRTADS, Kerala from 4th to 8th December, 2014. In this programme artists from north-eastern states of Meghalaya, Assam and Tripura presented their traditional dances.

2.6.19. A 3 day National Tribal Dance festival was organised in collaboration with SCSTRTI, Bhubaneshwar at open air auditorium of Utkal Sangeet Mahavidhyalya, Bhubaneshwar. For this three day programme IGRMS invited five traditional tribal dance troupes – Bhutia from Uttarkhand, Rathwa from Gujarat, Baiga from Madhya Pradesh, Muria from Chhattisgarh and Kharia from Jharkhand.

2.6.20. **Jugalbandi:** A cultural consort of Jugalbandi was organised on 12th December, 2014 in which Shri Ravi Shankar Upadhyay and Rishi Shankar Upadhayay presented the Jugalbandi of Pakhavaj. In the 2nd half of the programme Smt. Vidha Lal and Shri Abhimanyu Lal enthralled the audience with Jugalbandi of Kathak.

2.6.21. **Lai-Haraoba:** The Sangrahalaya organized a five day 'Lai-Haraoba' festival in the Museum premises by inviting a group of 30 artists of Meitei community including priest and priestess from the royal guild of Manipur. Artists performed traditional rituals at the 'Umang-Lai'- the sacred grove complex of Manipur installed in the Museum premises.

2.6.22. **Dhoura Ri Mahak:** A cultural evening featuring folk songs and dances of Rajasthan was organized on 7th January, 2015. A group of Manganiyar and Kalbeliya artists gave presentation of traditional Rajasthani music and dance.

2.6.23. **Triumph of Love:** Artists of the Catharsis Theatre Troupe of Oradea, Romania, performed an English adaptation of French play ''Le Trioumph de L'amour" on 22nd January, 2015 in the Museum premises. The event was jointly organised by AISECT University, Raisen and IGRMS.

2.6.24. **Lokrang Cultural Festival:** The Museum collaborated the prestigious 'Lokrang' cultural festival with Directorate of Culture, Madhya Pradesh State Government by sponsoring performing artist troupes from Assam, Manipur and Meghalaya from 26th to 28th January, 2015.

2.6.25. **Bharat Ke Rang:** Two day long cultural event entitled 'Bharat Ke Rang' was organised on 29th and 30th January, 2015 in Kendriya Vidhyalaya, Sehore and Raisen in collaboration with Kendriya Vidhyalay Sangathan as part of its activities for schools under education and outreach activities of the Museum. This programme was participated by performing artists from Assam, Manipur and Meghalaya.

2.6.26. **Ritu Samrit:** A special exhibition and artist workshop was organised by the Museum in collaboration with Aurovil Bamboo Centre, Pondicherry during which folk artists from North East India gave cultural performance from 25th to 28th February, 2015.

2.6.27. **Sacred Grove festival:** Indira Gandhi Rashtriya Manav Sangrahalaya organised two day 'Sacred Grove festival' in its premises at Bhopal on 07th and 08th February, 2015. Community representatives from the states of Tamilnadu, Rajasthan, Kerala and Maharashtra performed rituals related to sacred groves of their community.

2.6.28. **Ishanee:** Three day long special Programme on North-East from 3rd to 5th March 2015 was organised in collaboration with Gurusaday Museum, Kolkata. Artists from North Eastern States participated and gave cultural performance.

2.6.29. **Ko-ahum:** Famous Indian classical dancer Padmashri Ms.Shovana Narayan performed the Kathak dance on 8th March, 2015 on the occasion of International Women Day.

2.6.30. **Phag Utsav :** A programme focussed on songs and dances related to Holi festival was organised by the museum on 10th March, 2015, in which artists of Kesariya Balam group of Indore gave presentation.

2.6.31. Padmabhusan Pt. Hariprasad Chourasiya presented **flute recital** on 23rd March, 2015.

संग्रहालय द्वारा आयोजित फ़ाग उत्सव में चरकुला नृत्य की प्रस्तुति देते लोक कलाकार।
Folk artists performing Charkula dance during Phaag Utsav organised by the Museum.

संग्रहालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम धौरा री महक में राजस्थान के कलाकारों द्वारा पारंपरिक नृत्य की प्रस्तुति।
Performance of traditional dance by the folk artist of Rajasthan during Dhora Ri Mahak organised by the Museum.

संग्रहालय द्वारा जम्मू में आयोजित जम्मू उत्सव के दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुति का एक दृश्य।
A view of cultural performance during Jammu Utsav organised by Museum at Jammu.

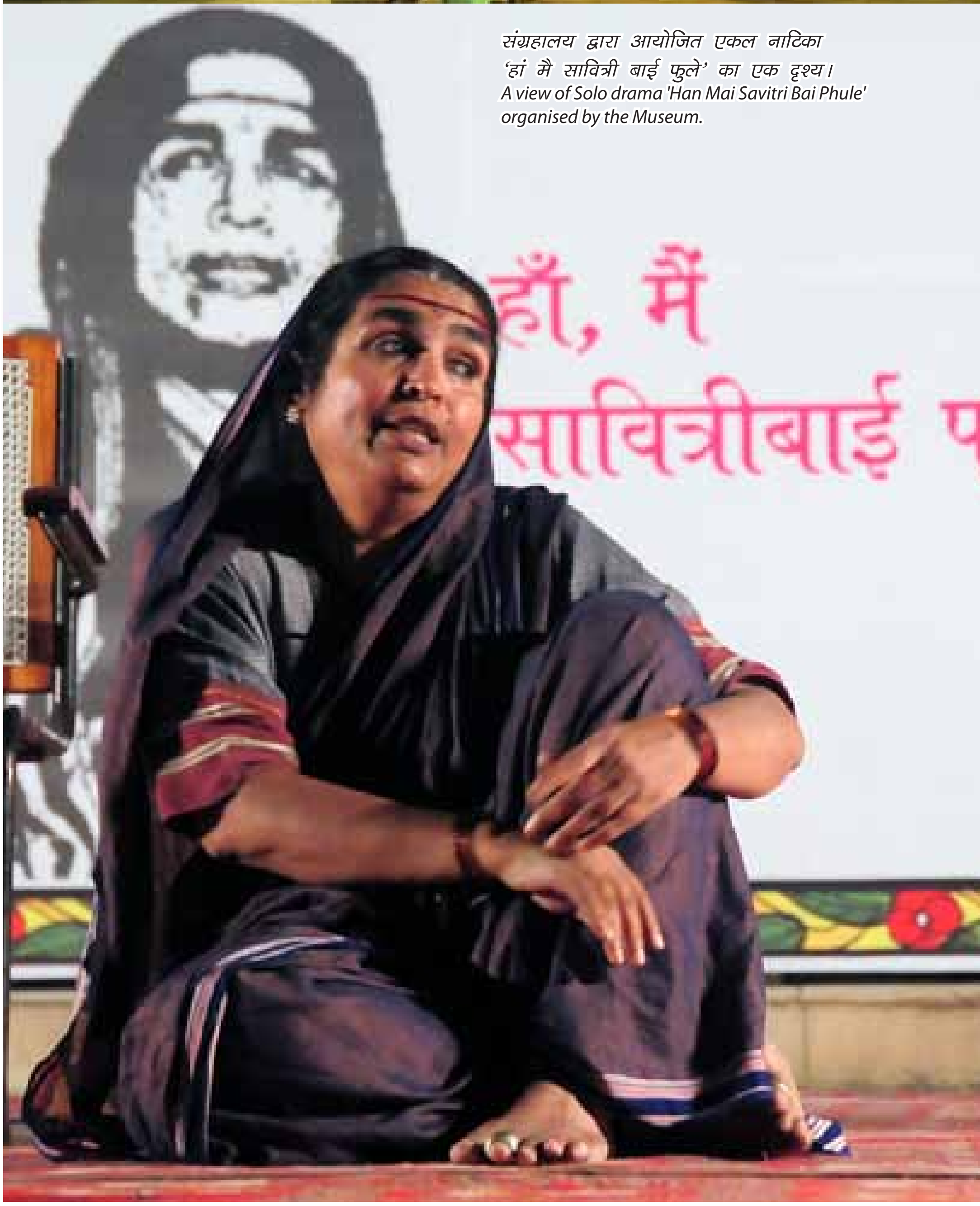

संग्रहालय द्वारा आयोजित एकल नाटिका 'हां मै सावित्री बाई फुले' का एक दृश्य।
A view of Solo drama 'Han Mai Savitri Bai Phule' organised by the Museum.

स्थापना दिवस समारोह के दौरान संग्रहालय परिसर में पं. हरिप्रसाद चौरसिया द्वारा बासुरी वादन।

Flute recital by Pt. Hariprasad Chourasiya in museum premises during Foundation Day

संग्रहालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम जुगलबंदी में पखावज तथा कथक की प्रस्तुति का एक दृश्य।

A view of presentation of Pakhawaj and Kathak in the programme Jughalbandi organised by the Museum.

संग्रहालय परिसर में गणतंत्र दिवस समारोह का एक दृश्य।

A view of Republic Day celebration in museum premises.

पूर्वोत्सव के दौरान नागालैंड के कलाकारों द्वारा पारंपरिक नृत्य प्रस्तुति का एक दृश्य।

A view of traditional dance performance by the artists from Nagaland during Poorvotsav.

संग्रहालय परिसर में आंध्र प्रदेश के कलाकारों द्वारा पारंपरिक भारोत्तोलन तकनीक का प्रदर्शन।

Demonstration of traditional technique of weight lifting by the artists from Andhra Pradesh in Museum premises.

इंगांरामासं द्वारा अपने परिसर में आयोजित कार्यक्रम 'भारतीय ढोल' का एक दृश्य।

A view of programme Drums of India organised by IGRMS in its premises .

संग्रहालय मे रोमानिया के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत फ्रेंच नाट्क 'ट्रायम्फ ऑफ लव' का एक दृश्य।
A view of French drama 'Triumph of Love' performed by the artists from Romania in the Museum.

संग्रहालय द्वारा भुवनेश्वर में आयोजित राष्ट्रीय जनजातीय नृत्य उत्सव का एक दृश्य।
A view of National tribal dance festival organised by the Museum at Bhubneswar.

महाराष्ट्र की कोंकणा जनजाति के कलाकारों द्वारा संग्रहालय परिसर में भाभोड़ा नृत्य की प्रस्तुति।
Performance of traditional Bhobhoda dance in Museum premises by the artist of Konkana tribe of Maharashtra.

भारत के रंग कार्यक्रम श्रंखला के अंतर्गत सिक्किम के लोक कलाकारों द्वारा प्रस्तुति।
Performance by the folk artists from Sikkim under the programme series 'Bharat Ke Rang'.

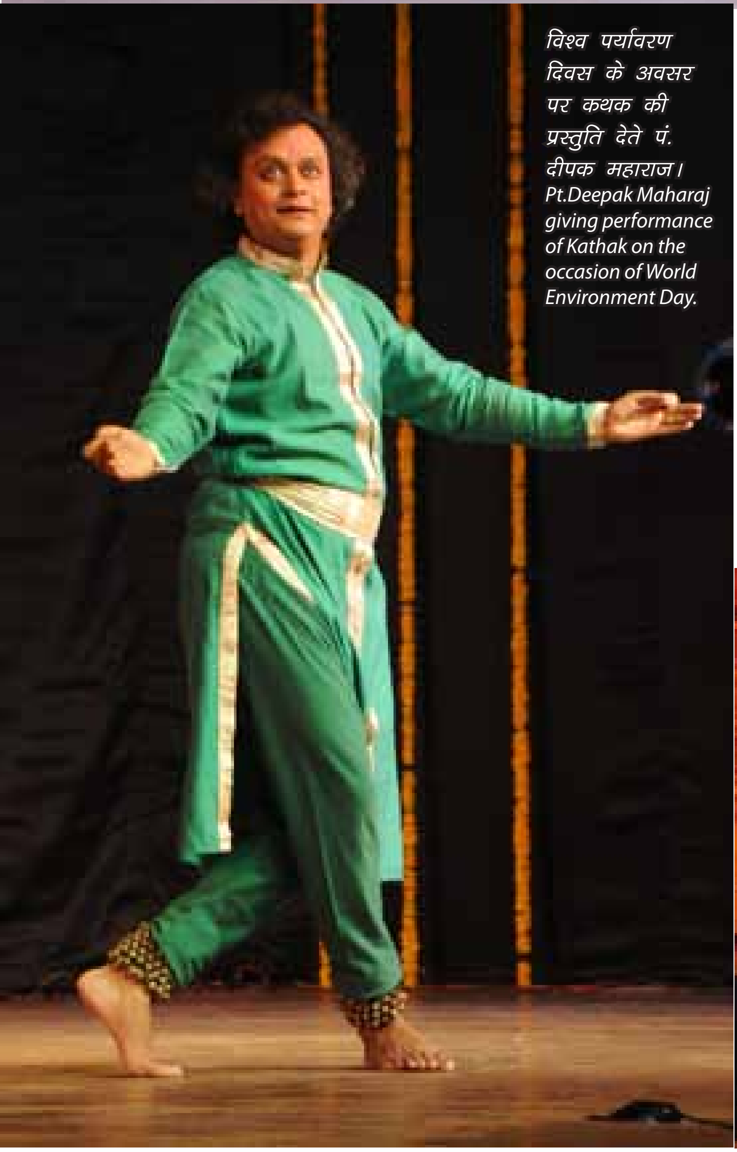

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर कथक की प्रस्तुति देते पं. दीपक महाराज।
Pt.Deepak Maharaj giving performance of Kathak on the occasion of World Environment Day.

पूनम–33 के अंतर्गत पं. उल्हास कशालकर द्वारा शास्त्रीय गायन।
Classical recitation by Pt. Ulhas Kasalkar under Poonam-33.

2.7. **प्रकाशन :** अवधि के दौरान संग्रहालय द्वारा निम्नलिखित प्रकाशन जारी किये गयेः

पुस्तकेंः

(i) के. राजन द्वारा सम्पादित 'आर्क्योलॉजी ऑफ अमरावती रिवर वेली पुरम्थल एक्सकेवेशन', दो अंक

(ii) के.सी. मल्होत्रा द्वारा सम्पादित 'बायोडायवर्सिटी कन्जर्वेशन एण्ड सस्टेनेबल लाइव्लीहुड'

(iii) प्रदीप जावेरी द्वारा सम्पादित 'वॉल पेंटिग्स् ए पिक्टोरियल जर्नी ऑफ नॉर्थ एण्ड सेन्ट्रल गुजरात'

(iv) बुध्ददेव चौधुरी तथा सुबीर बिस्वास द्वारा सम्पादित 'एन्थ्रोपोलॉजी एण्ड हैल्थ इश्यूज'

ब्रोशर, फोल्डर्/ पुस्तिकाएँ

अवधि के दौरान संग्रहालय ने वार्षिक प्रतिवेदन 2013-14, संग्रहालय के तिमाही न्यूज लैटर तथा समय -समय पर आयोजित कार्यक्रमों और गतिविधियों को उजागर करते विभिन्न फोल्डर, पोस्टर, हैण्डआउट तथा बुकलेट्स इत्यादि का प्रकाशन किया।

2.7. **Publications:** The following publications were brought out by the Sangrahalaya during the period.

Books:

(i) 'Archeology of Amravati River Vally: Purmthal excavation', 2 Vols. edited by K. Rajan

(ii) 'Biodiversity Conversation and Sustainable livelihood' edited by K.C. Malhotra

(iii) 'Wall paintings: A pictorial Journey of North and Central Gujarat' edited by Pradip Zaveri.

(iv) 'Anthropology and Health Issues' edited by Buddhadeb Chaudhury and Subir Biswas.

Brochure, Folder, Booklets:

During the period Sangrahalaya published its Annual Report 2013-14, quarterly newsletter of Sangrahalaya and various folders, posters, handouts, and booklets etc. to highlight its programme and activities organised time to time.

इंगारामासं के विविध प्रकाशन।
Various publications of IGRMS

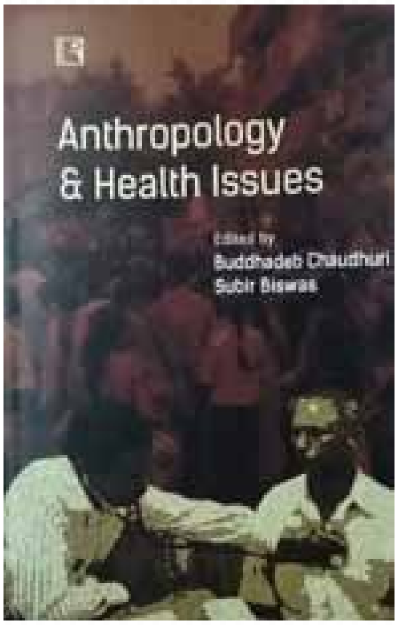

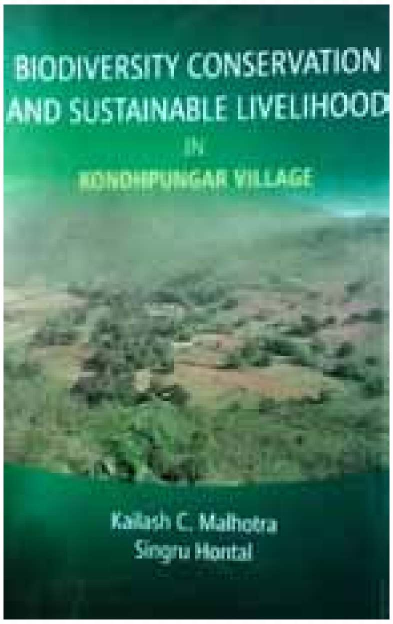

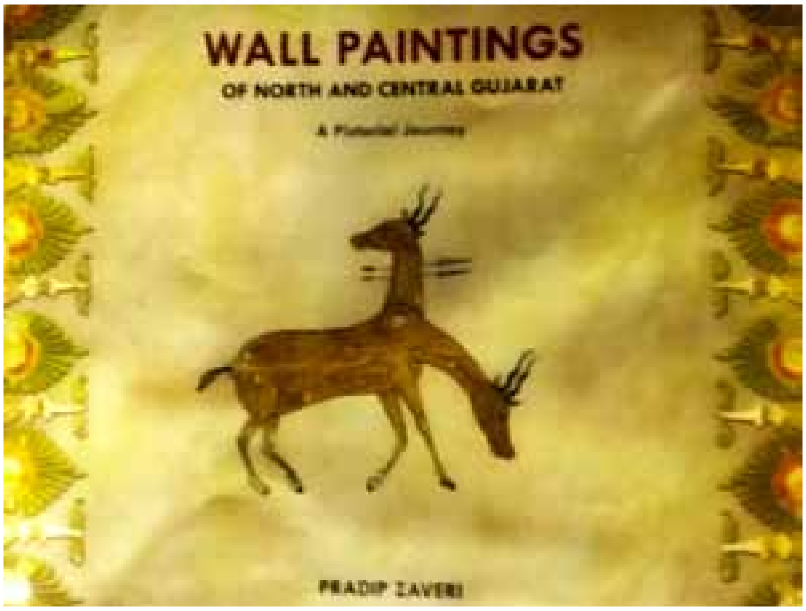

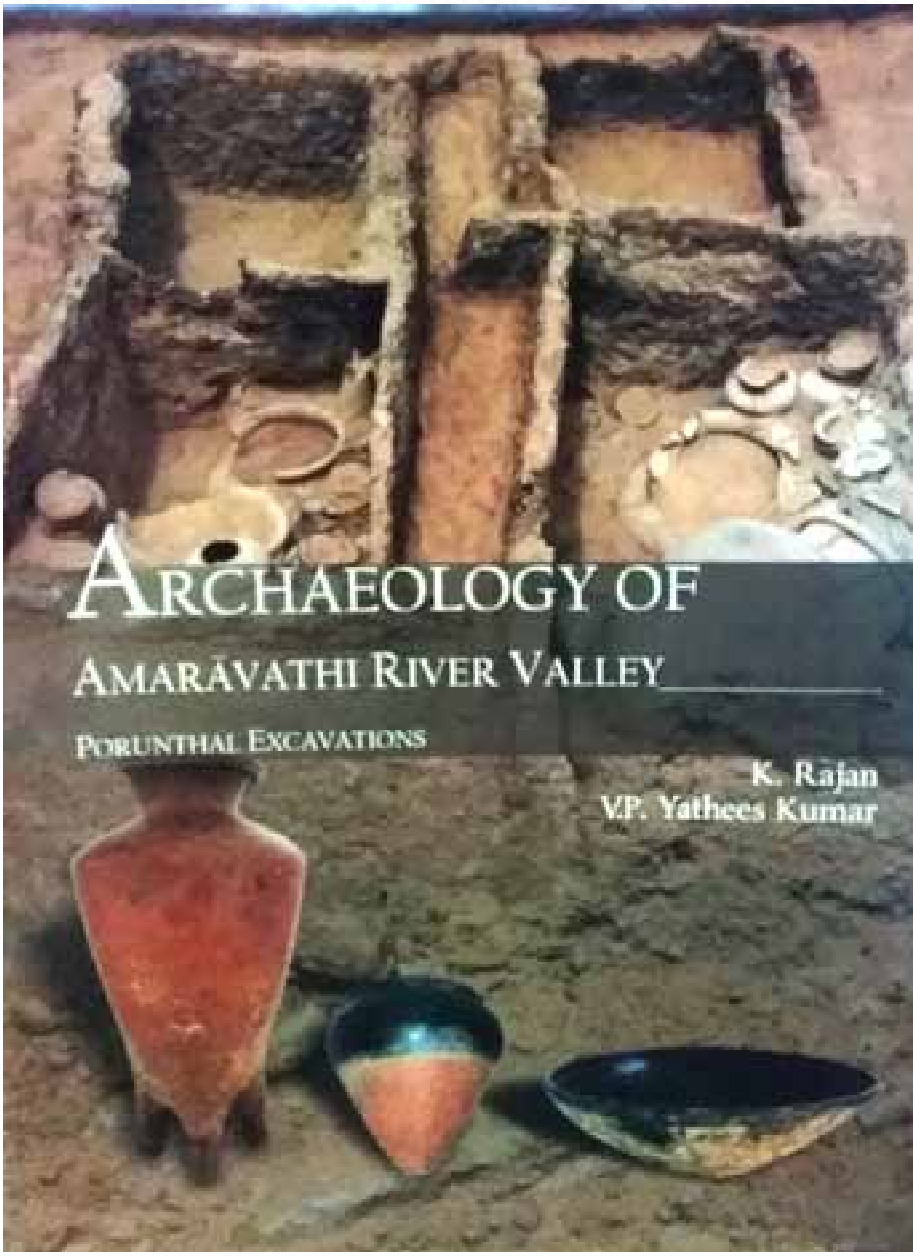

2.8. **अन्य विशेष गतिविधियाँ/कार्यक्रमः**

2.8.1. **संस्कार मैत्रीः** पश्चिम मध्य रेलवे जबलपुर के सहयोग एक पॉच दिवसीय विशेष कार्यक्रम का आयोजन 30 मार्च से 3 अप्रैल 2014 तक जबलपुर में किया गया। निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये गये।

2.8.1.1. कलादर्शना– देश के विभिन्न भागों से लोक व जनजातीय शिल्पों की प्रदर्शन कार्यशाला सह बिक्री।

2.8.1.2. झरोखा– इंगारामासं भोपाल की झल्कियॉ दर्शाती एक छायाचित्र प्रदर्शनी।

2.8.1.3. पूर्वांचली– असम, त्रिपुरा, मणीपुर और मेघालय के कलाकारों की प्रतिभागिता में प्रस्तुतिकारी कला के प्रदर्शन का एक कार्यक्रम ।

2.8.1.4. सहजोग यात्रा–इंगारामासं तथा रलवे की सहयोगी गतिविधियों साथ ही संग्रहालय की अन्य गतिविधियों कों दर्शाती एक छायाचित्र प्रदर्शनी गोंडवाना तथा रेवांचल एक्सप्रेस में खोली गयी।

2.8.2. **अंतराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस समारोह :** इंगांरामासं परिसर भोपाल तथा दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र मैसूर में भी 18 मई 2014 को अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस मनाने हेतु कई कार्यक्रम और गतिविधियॉ आयोजित की गई। इस अवसर पर महाराष्ट्र की कोंकणा जनजाति द्वारा भाभोड़ा नृत्य के समय प्रयुक्त विभिन्न मुखौटों की 'सोहांग' शीर्षक से एक विशेष प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री के.के. मित्तल, अतिरिक्त संस्कृति सचिव, भारत सरकार द्वारा किया गया।

दो शैक्षणिक गतिविधियों (1) पूर्वी भारत का छाउ लोकनृत्य तथा (2) बिहार की पारम्परिक मधुबनी चित्रकला का भी आयोजन पंजीकृत प्रतिभागियों के लिये किया गया, जिसमें क्रमशः सराईकेला, झारखंड तथा मधुबनी, बिहार के कलाकारों ने उनके संबंधित कला/शिल्प का प्रशिक्षण प्रदान किया।

पश्चिम बंगाल, झारखंड तथा महाराष्ट्र के मुखौटा नृत्यों के तीन दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन 18 से 20 मई, 2014 तक किया गया।

2.8. **Other Special Activities/Programmes :**

2.8.1. **Sanskar Maitri:** A five day special programme in collaboration with West Central Railway, Jabalpur held at Jabalpur from 30th March to 3rd April, 2014. The following programmes were organised:

2.8.1.1. Kaladarsana- a demonstration workshop-cum sale of folk and tribal crafts from various parts of the country.

2.8.1.2. Jharokha- A photo exhibition showcasing the glimpse of IGRMS, Bhopal.

2.8.1.3. Poorvanchali- programme of performing art presentation with participation of artists from Assam, Tripura, Manipur and Meghalaya.

2.8.1.4. Sahjog Yatra- Photo Exhibition in Gondwana and Rewanchal express was launched depicting the collaborative events of IGRMS and Railways as also other activities of the Museum.

2.8.2. **International Museum Day Celebration:** A number of programmes and activities were organised to mark the International Museum Day on 18th May, 2014 in IGRMS premises at Bhopal as also at Southern Regional Centre, Mysore. On this occasion, a special exhibition entitled 'Sohang' presenting various masks used by Konkna tribals of Maharashtra during the Bhabhoda dance was inaugurated by Shri K.K. Mittal, Additional Secretary, Culture, Govt. of India.

Two educational activities (i)Chhow folk dance of East India and (ii)Traditional Madhubani painting of Bihar were also organised for registered participants, in which artists from Saraikela, Jharkhand and Madhubani, Bihar imparted training of their traditional art/craft skills respectively.

Three day cultural performance on Mask dance of West Bengal, Jharkhand and Maharashtra was also organised from 18th to 20th May, 2014.

संग्रहालय परिसर में लद्दाख के पारंपरिक रसोई घर चांसा में गुड़गुड़ चाय का आस्वादन करते विदेशी प्रतिनिधि।
Foreign delegates having test of Gudgud tea in Chansa the traditional Kitchen of Ladakh in the museum premises.

संग्रहालय की मुक्ताकाश प्रदर्शनी शैल कला धरोहर का सुश्री श्रेया गुहा, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा भ्रमण।
Visit to Museum's open air exhibition the Rock Art Heritage by Ms. Sreya Guha, Joint Secretary, Ministry of Culture, Govt. of India.

2.8.3. **विश्व पर्यावरण दिवस समारोह :** पर्यावरण संरक्षण के बारे में जागरूकता के विकास के उद्देश्य से 5 जून 2014 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाने हेतु कई कार्यक्रम और गतिविधियाँ आयोजित की गई।

2.8.3.1. सायकल रैली : इस अवसर पर ग्रीन प्लानेट बायसिकल राइडर्स, भोपाल के सहयोग से 100 से अधिक बच्चों, किशोर एवं युवाओं की प्रतिभागी में एक सायकल रैली का आयोजन किया गया।

2.8.3.2. लगभग 400 बच्चों की प्रतिभगिता में पर्यावरण की विषय वस्तु पर एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विजेताओं को नगद पुरूस्कार तथा प्रत्येक प्रतिभगी को प्रमाण पत्र वितरित किये गये।

2.8.3.3. पुनीत वनों पर घुमन्तु प्रदर्शनी : विभिन्न समुदायों में पर्यावरण संरक्षण अभिक्रियाओं पर केन्द्रित 'भारत के पुनीत वन' शीर्षक से एक छायाचित्र प्रदर्शनी ऊर्जा एवं पर्यावरण अध्ययन विभाग, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर में संयोजित की गई।

2.8.3.4. डॉल थियेटर्स कोलकाता द्वारा 'टेंमिंग ऑफ द वाइल्ड' शीर्षक से एक पपेट शो।

2.8.3.5. संग्रहालय परिसर में तमिलनाडु के पुनीत वन तथा पारम्परिक अय्यानार देवालय में अनुष्ठान तथा

2.8.3.6. पर्यावरण की विषयवस्तु पर श्री दीपक महाराज द्वारा कथक नृत्य की प्रस्तुति।

2.8.4. **तृतीय नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम :** संग्रहालय की दो अधिकारियों ने ब्रिटिश संग्रहालय, लंदन तथा नैशनल कल्चर फंड, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित तृतीय नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम पूर्ण किया।

2.8.5. **विद्यार्थियों हेतु विशेष कार्यशाला :** मानवशास्त्र विभाग, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय के 15 विद्यार्थियों ने 26 से 28 जून, 2014 तक संग्रहालय का भ्रमण कर कार्यशाला में भाग लिया। कार्यशाला के दौरान उन्होंने संग्रहालय की विभिन्न अंतरंग दीर्घाओं एवं मुक्ताकाश प्रदर्शनियों का भ्रमण किया तथा संग्रहालय स्टाफ से चर्चा की।

2.8.6. **पुस्तकालय दिवस :** इंगांरामासं परिसर में 12 अगस्त, 2014 को 'भोपाल लाइब्रेरी नेटवर्क प्रॉब्लम एण्ड साल्युशन्स' विषय पर एक सम्वाद का आयोजन कर विश्व पुस्तकालय दिवस मनाया गया।

2.8.7. **विश्व फोटोग्राफी दिवस :** संग्रहालय द्वारा विश्व फोटोग्राफी दिवस मनाने हेतु कक्षा 11वीं तथा 12वीं के 44 पंजीकृत प्रतिभागियों की प्रतिभागिता में एक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया।

2.8.8. **हिन्दी पखवाड़ा :** कार्यालयीन कार्यो में हिन्दी के लोकप्रियकरण के विचार से 'हिन्दी पखवाड़ा' शीर्षक से एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन 14 से 26 सितम्बर, 2014 तक किया गया। कार्यक्रम के दौरान कार्यालयीन कार्यो में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने हेतु संग्रहालय स्टाफ के मध्य कई प्रतियोगी कार्यक्रम आयोजित किये गये।

2.8.9. **बहुरंग कवि सम्मेलन :** संग्रहालय द्वारा भोपाल स्थित अपने परिसर में हिन्दी दिवस के अवसर पर 14 सितम्बर, 2014 'बहुरंग कवि सम्मेलन' शीर्षक से एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन राजस्थान, उत्तर प्रदेश, तथा मध्यप्रदेश के कवियों की प्रतिभागिता में किया गया। श्री आलोक संजर, सांसद, भोपाल कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे।

2.8.10. **विश्व हृदय दिवस :** संग्रहालय द्वारा स्वास्थ्य और हृदय रोगों के बारे में चेतना जागृत करने हेतु विश्व हृदय दिवस के अवसर पर अपने स्टाफ हेतु एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन हैव्स, भोपाल के सहयोग से 29 सितम्बर, 2014 को किया गया।

2.8.11. **स्वच्छता जागरूकता सप्ताह :** माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा स्वच्छ भारत अभियान के आव्हान पर संग्रहालय ने भी अपने परिसर तथा लोगों में भी स्वच्छता के प्रति जागरूकता के विकास हेतु स्वच्छता सप्ताह का आयोजन किया। अपने पर्यावरण तथा आस-पास के वातावरण को स्वच्छ रखने की शपथ, संग्रहालय में विभिन्न स्थानों पर साप्ताहिक स्वच्छता मुहिम हेतु वार्षिक कैलेण्डर निर्माण, स्वच्छता पर प्रेरणादायी नारों के साथ संकेतकों के प्रदर्शन, पेयजल व्यवस्था, संग्रहालय में उचित स्थानों पर कूड़ेदान तथा शौचालय एवं शहर में नुक्कड़ नाटकों का मंचन जैसे कई कार्यक्रम हुए।

2.8.12. **स्टाफ प्रशिक्षण :** संग्रहालय स्टाफ के तीन सदस्यों ने 22 से 26 सितम्बर, 2014 तक राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद द्वारा 'डिजिटल इन्गेजमेंट ऑफ म्यूज़ियम' पर आयोजित प्रशिक्षिण प्राप्त किया।

संग्रहालय परिसर में श्री के के मित्तल, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय द्वारा वृक्षारोपण।
Tree plantation by Shri K.K. Mittal, Joint Secretary, Ministry of Culture in museum premises.

संग्रहालय द्वारा अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर आयोजित सामयिक प्रदर्शनी 'सोहांग' का एक दृश्य।
A view of Sohang periodical exhibition organised by the Museum on the occasion of International Museum Day.

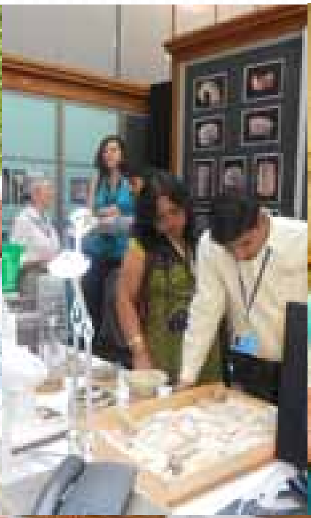

ब्रिटिश संग्रहालय, लंदन एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त आयोजन 'लीडरशिप ट्रेनिंग कार्यक्रम-3' में संग्रहालय से डॉ. सोमा किरो एवं डॉ. सुदीपा राय ने सहभागिता की।

Dr. Soma Kiro and Dr. Sudipa Roy participated in the 'Leadership Training Programme-3' jointly organised by British Museum, London and Ministry of Culture, Govt. of India.

राजभाषा पर संगोष्ठी के अवसर पर हिंदी पत्रिका 'आयाम' के विमोचन का दृश्य।

A view of release of Hindi magazine Aayam on the occasion of a seminar on Official Language.

2.8.3. **World Environment Day Celebration:** A number of programmes and events were organised to mark the World Environment Day on 5th June, 2014 with the aim to generate awareness about environment conservation.

2.8.3.1. Bicycle Rally: On this occasion, a bicycle rally with participation of over 100 children, adolescent and adults was organised in collaboration with Green Planet Bicycle Riaders Association, Bhopal.

2.8.3.2. A painting competition on theme of "Environment and Heritage" was organised with participation of nearly 400 children. The winners were rewarded cash prizes and certificates were distributed to each participant.

2.8.3.3. Travelling exhibition on Sacred Groves: a photographic exhibition entitled "Sacred Groves of India" foucssed on traditional practices of environment conservation prevalent among various communities was mounted at Department of Energy and Environmental Studies, Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore.

2.8.3.4. A puppet show entitled "Taming of the Wild" by Doll Theater Kolkata.

2.8.3.5. Rituals at Sacred Groves and traditional Ayyanar Shrine complex of Tamilnadu in Museum premises, and

2.8.3.6. The performance of Kathak dance by Shri Deepak Maharaj on the theme of environment.

2.8.4. **Leadership Training Programme-3:** Two museum officials completed the Leadership Training Programme-3 organised by British Museum, London and National Culture Fund, Ministry of Culture, Govt. of India.

2.8.5. **Special workshop for students:**
Nearly 15 students of Deptt. of Anthropology, Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak visited the Museum and participated in the workshop from 26th to 28th June, 2014. During the workshop they visited various indoor galleries and the open air exhibition of the Museum and interacted with the Museum staff.

2.8.6. **Library Day:** The Library Day was celebrated on 12th August, 2014 at IGRMS by organising a colloquium on the theme of 'Bhopal Library Network: Problem and Solutions.

2.8.7. **World Photography Day:** To mark the World Photography Day a training workshop for 44 registered participants of class XI and XII was organised by the Museum from 19th to 23rd August, 2014.

2.8.8. **Hindi Pakhwada :** With a view of popularization of Hindi in official working, a special programme entitled 'Hindi Pakhwada' was organized from 14th to 26th September, 2014. A Number of competitive events to promote the use of Hindi in official works among museum staff were organized during the programme.

2.8.9. **Bahurang- Kavi Sammelan:** On the occasion of World Hindi day, a special programme entitled 'Bahurang: Kavi Sammelan' was organised by the Museum on 14th September, 2014 in its premises at Bhopal with participation of poets from Rajasthan, Uttar Pradesh, and Madhya Pradesh. Shri Alok Sanjar, Member of Parliament, Bhopal was the Chief guest of the programme.

2.8.10. **World Heart Day :** On the occasion of World Heart Day a special programme for creating awareness about health and heart diseases was organised by the Museum for its staff in collaboration with HAEVS, Bhopal on 29th September, 2014.

2.8.11. **Cleanliness awareness Week :** On the call of Clean India Movement by Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi the Museum also organised cleanliness week to create awareness towards cleanliness in its campus as also amongst masses. Different activities like pledge to keep environment and surrounding clean, preparation of annual calender for weekly cleanliness campaign at various location of the Museum, display of signages with motivating slogans on cleanliness, arrangements of drinking water, dustbin and toilets at suitable places in the Museum and street shows in the city had held.

2.8.12. **Staff training :** Three members of Museum staff received training on Digital Engagement of Museum organized by the National Council of Science Museums, Kolkata from 22nd to 26th September, 2014.

2.8.13. **विश्व पर्यटन दिवस समारोह :** विश्व पर्यटन दिवस मनाने हेतु 'पर्यटन और सामुदायिक विकास' की विषय वस्तु के अंतर्गत दो दिवसीय बहुआयामी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के तीन भाग थे :

2.8.13.1. देशाटन : भारत के अल्पज्ञात क्षेत्रीय सांस्कृतिक पक्षों को उजागर करती विशेष प्रदर्शनी।

2.8.13.2. सांगिडी रालेर अटा : आंध्रप्रदेश के श्रीकाकुलम जिले से दस कलाकारों के दल ने संग्रहालय का भ्रमण कर पारम्परिक भरोत्तोलन कौशल का प्रदर्शन किया।

2.8.13.3. भारतीय ढोल : इस अवसर पर 'भारतीय ढोल' (ड्रम्स ऑफ इण्डिया) शीर्षक से शास्त्रीय एवं लोक तालवाद्य यंत्र वादन की प्रस्तुति की एक संगीत संध्या भी आयोजित की गई।

2.8.14. **सतर्कता जागरूकता सप्ताह :** सतर्कता जागरुकता सप्ताह के अवसर पर संग्रहालय ने 28 अक्टूबर से 1 नवम्बर, 2014 तक विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया। सप्ताह के दौरान वाद-विवाद, निबंध लेखन, प्रश्नोत्तरी, व्याख्यान, एकता के लिये दौड़ इत्यादि कार्यक्रम संग्रहालय स्टाफ में जागरुकता के विकास हेतु आयोजित किये गये।

2.8.15. **स्वच्छ भारत अभियान :** माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा स्वच्छ भारत अभियान के आव्हान पर संग्रहालय ने निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये :

2.8.15.1. अभियान का प्रारम्भ 2 अक्टूबर, 2014 को गांधी जयंती से हुआ। संग्रहालय के स्टाफ ने स्वच्छ भारत की प्रतिज्ञा ली तथा संग्रहालय परिसर में सफाई अभियान संचालन हेतु क्षेत्रों का चयन किया।

2.8.15.2. एक एन.जी.ओ. 'उमंग सोशल एण्ड कल्चरल ग्रुप' के सहयोग से स्वच्छ भारत के बारे में लोगों में जागरुकता के विकास हेतु संग्रहालय परिसर सहित भोपाल में विभिन्न स्थानों पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया।

2.8.16. **मैत्री महोत्सव :** विश्व विकलांग दिवस मनाने हेतु विकलांग बच्चों हेतु कार्यरत् एक एन.जी.ओ. 'अरुषी' के सहयोग से विभिन्न खंडों में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

2.8.16.1. विख्यात् कवि एवं लेखक गुलज़ार द्वारा लिखित कविताओं के साथ विकलांगता पर पोस्टर्स युक्त एक विशेष प्रदर्शनी 'एक प्रार्थना' शीर्षक से 2 दिसम्बर, 2014 को वीथि संकुल में लगाई गई।

2.8.16.2. विकलांग बच्चों हेतु 'सपनों के रंग' शीर्षक से एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन 3 दिसम्बर, 2014 को किया गया।

2.8.16.3. 'मिट्टी के दोस्त' शीर्षक से विकलांग बच्चों हेतु विशेष रूप से एक चार दिवसीय टेराकोटा कार्यशाला 28 नवम्बर, 2014 से आयोजित की गई। कार्यशाला के दौरान मिट्टी के माध्यम से अपनी रचनात्मकता को अभिव्यक्त किया।

2.8.16.4. प्रस्तुतिकारी कला का प्रदर्शन : 'एक ताल एक साल' शीर्षक से प्रस्तुतिकारी कला के प्रदर्शन का एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें विकलांग बच्चों ने नृत्य, स्किट तथा विविध वेशभूषा प्रदर्शन इत्यादि की प्रस्तुति दी।

2.8.17. **जनजातीय विद्यार्थियों द्वारा भ्रमण :** भारत की सांस्कृतिक विविधता के बारे में जागरुकता के प्रसार के विचार से इंगांरामासं ने रावतपुरा सरकार ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स, रायपुर, छत्तीसगढ़ के जनजातीय विद्यार्थियों के शैक्षणिक भ्रमण में सहयोग प्रदान किया। विद्यार्थियों ने संग्रहालय की विभिन्न प्रदर्शनियों तथा अन्य महत्वपूर्ण संग्रहालयों एवं भोपाल शहर व आस-पास के धरोहर स्थलों का भ्रमण किया।

2.8.18. **9वीं ब्लाइंड चैलेन्ज कार रैली :** दृष्टि बाधित व्यक्तियों की विशिष्ट योग्यताओं के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित करने व उन्हें जागरूक करने के विचार से 9वीं ब्लाइंड चैलेन्ज कार रैली का आयोजन 11 जनवरी, 2015 को शारीरिक रूप से बाधाग्रस्त व्यक्तियों हेतु कार्यरत् एक एनजीओ 'अरुषि' के सहयोग से किया गया।

2.8.19. **बालरंग :** स्कूली बच्चों के तीन दिवसीय राष्ट्रीय उत्सव का आयोजन 'बालरंग' शीर्षक से लोक शिक्षण संचालनालय, मध्यप्रदेश शासन के सहयोग से 9 से 11 जनवरी, 2015 तक किया गया। देश के 22 राज्यों से एक हजार से अधिक विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय लोकनृत्य प्रतियोगिता में प्रतिभागिता की। उनमें से पूर्वोत्तर राज्यों के 142 बच्चों को संग्रहालय द्वारा प्रायोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री एस.आर. मोहंती, अतिरिक्त मुख्य सचिव, मध्यप्रदेश शासन ने किया। इस अवसर पर भोपाल के स्कूली बच्चों द्वारा 'लघु भारत' शीर्षक से एक प्रदर्शनी लगाई गयी। मध्यप्रदेश, पॉंडिचेरी तथा हरियाणा के दलों ने राष्ट्रीय लाकनृत्य प्रतियोगिता में क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार जीता।

2.8.20. **वृत्तचित्र का प्रदर्शन :** इंगांरामासं ने अपने परिसर में मुक्ताकाश प्रदर्शनी में पूर्व से प्रदर्शित छत्तीसगढ़ की दन्तेश्वरी देवी के पवित्र रथ के रिस्टोरेशन हेतु बस्तर से सामग्री प्राप्त की है। इस अवसर पर श्री ओलिवियर लामूर द्वारा भेंट किये गये वृत्तचित्र 'ला महाराजा ए ले त्रिबस द बस्तर के प्रदर्शन का आयोजन संग्रहालय में 27 फरवरी, 2015 को किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस पर पश्चिम बंगाल के कलाकारों द्वारा छाउ नृत्य की प्रस्तुति का एक दृश्य।
A view of presentation of Chhow dance by the artists from West Bengal on the occasion of International Museum Day.

राष्ट्रीय बालरंग उत्सव में लोक नृत्य की प्रस्तुति देती एक स्कूली बालिका।
A school girl presenting folk dance during National Balrang Festival.

अरूषि तथा इंगारामासं द्वारा आयोजित ९वी ब्लाईड चैलेन्ज कार रैली का दृश्य।

A view of 9th Blind Challenge Car Rally organised by Arushi and IGRMS.

विशेष क्षमतावान बच्चों हेतु आयोजित 'मिट्टी के दोस्त' क्ले मॉडलिंग कार्यशाला का एक दृश्य।

A view of clay modeling workshop 'Mitti Ke Dost' organised for specially abled children.

विश्व विकलांग दिवस के अवसर पर आयोजित विशेष प्रदर्शनी 'एक प्रार्थना' का उद्घाटन दृश्य।

Inaugural view of special exhibition 'Ek Prarthana' organised on the occasion of World Disabled Day.

2.8.13. **Celebration of World Tourism Day :** To mark the World Tourism day two day multidimensional programme under the theme of Tourism and Community Development organised. The programme had three components :

2.8.13. 1. Deshatan: A special exhibition highlighting lesser known regional cultural aspects of India.

2.8.13. 2. Sangidi raller ata: a group of ten artists from Shrikakulam district of Andhra Pradesh visited the Museum and gave demonstration of traditional weight lifting skill.

2.8.13.3. Drums of India: a musical evening entitled 'Bhartiya Dhol' (Drums of India) presenting recital of classical and folk percussion instrument was also organised on the occasion.

2.8.14. **Vigilance Awareness Week:**The Museum organized various progammes on the occasion of Vigilance Awareness week from 28th October to 1st November 2014. During the week progrmmes ike debate, essay writing, quiz, lecture, run for unity etc. were organized for the staff of sangrahalaya to spread the awareness among them.

2.8.15. **Swachchha Bharat Abhiyan:** On the call of Clean India Movement by Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi, the Museum organised following programmes:

2.8.15.1. The campaign started from Gandhi Jayanti on 2nd October, 2014. The staff of the Museum took pledge of 'Swachht Bharat' and selected areas in the Museum premises for conducting cleanliness drive in those areas.

2.8.15.2. In collaboration with Umang Social and Cultural group- an NGO a street play was organised at various places of Bhopal including Museum premises to generate awareness among the masses about clean India.

2.8.16. **Maitri Mahotsav:** A Special programme with various components was organized to mark the World Disabled Day in collaboration with Arushi- an NGO working for the disabled children.

2.8.16.1. A special exhibition entitled 'Ek Prarthna' consisting of posters on disability with poems written by noted poet and writer Gulzar was mounted on 2nd December, 2014.

2.8.16.2. A painting competition entitled 'Sapno Ke Rang' was organised on 3rd December, 2014 for the disabled children.

2.8.16.3. A four day Terracotta workshop entitled Mitti Ke Dost specially meant for the disabled children was organised from 28th November, 2014 During the workshop the children expressed their creativity through the medium of clay.

2.8.16.4. Performing art presentations: a programme of performing art presentation entitled Ek Taal Ek Saal was organised in which disabled children presented dance, skit and fancy dress show etc.

2.8.17. **Visit of Tribal students:** In view of spreading awareness about cultural diversity of India, IGRMS supported educational visit of Tribal students from Rawatpura Sarkar Group of Institutions, Raipur, Chhattisgarh. Students paid visit to various exhibitions of the Museum and other important museums and heritage sites in and around the Bhopal city.

2.8.18. **9th Blind Challenge Car Rally:** With a view to draw the attention of masses towards the distinct abilities of visually impaired people and make them aware, 9th Blind challenge car rally was organized by the Museum on 11th January, 2015 in collaboration with Arushi- a NGO working with physically challenged people.

2.8.19. **Balrang:** 3 day long National festival of school children entitled Balrang-2015 was organized in collaboration with Directorate of Public Instructions, Govt. of Madhya Pradesh from 9th to 11th January, 2015. Over one thousand students from 22 states of the country participated in National folk dance competition. Out of them 142 students from North-eastern States were sponsored by the Museum. The programme was inaugurated by Shri S.R. Mohanti, Additional Chief Secretary, Government of Madhya Pradesh. An exhibition entitled 'Mini India' was mounted on this ocassion by various schools of Bhopal. The teams from Madhya Pradesh, Pondicherry and Haryana won the 1st, 2nd and 3rd prizes respectively in the National Folk dance competition.

2.8.20. **Screening of Documentary film:** IGRMS has acquired the material of holy chariot of goddess Danteshwari, from Bastar for restoration work of existing chariot displayed in the open air exhibition of the Museum. Coinciding with the occasion screening of a documentary film 'Le Maharaja Et Les Tribus Du Bastar' gifted by Mr. Olivier Lamour, France was organised in the Museum on 27th February, 2015.

2.8.21. **वॉक एण्ड टॉक विथ क्यूरेटर :** संग्रहालय द्वारा 27 फरवरी, 2015 से 'वॉक एण्ड टॉक विथ क्यूरेटर' शीर्षक से एक कार्यक्रम श्रंखला की शुरूवात की गई । श्रंखला का प्रारम्भ भारतीय हिमालय के लोग और संस्कृति को दर्शाती नवनीतम संयोजित सामयिक प्रदर्शनी 'हिमलोक' के साथ हुआ। क्यूरेटरों ने प्रदर्शनी से संबंधित अवधारणा, प्रादर्शों तथा कहानियों पर चर्चा की।

2.8.22. **पुनीतवन महोत्सव :** संग्रहालय ने 7 व 8 फरवरी, 2015 को अपने परिसर में दो दिवसीय 'पुनीत वन महोत्सव' का आयोजन किया । इस दो दिवसीय कार्यक्रम की मुख्य विशेषता अनुष्ठानिक गतिविधियाँ थीं। पुनीतवन स्थानीय समुदायों द्वारा अपने पूर्वज आत्माओं अथवा देवताओं को समर्पित प्राकृतिक अथवा समप्राकृतिक वनस्पतियाँ हैं । ये वन स्थानीय समुदायों द्वारा पूर्वजों तथा पारिस्थितिकी से संबद्ध औपचारिक निषेधों तथा स्वीकृतियों के माध्यम से संरक्षित किये जाते हैं।

तमिलनाडु, राजस्थान, केरल तथा महाराष्ट्र के समुदाय प्रतिनिधियों ने उनके समुदाय से संबंधित पुनीत वनों में अनुष्ठानों की प्रस्तुति दी।

2.8.23. **मातृभाषा दिवस :** अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर इंगांरामासं ने 21 एवं 22 फरवरी, 2015 को दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। संग्रहालय ने क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों को प्रोत्साहित करने तथा समाज, परिवार तथा कार्यालय में क्षेत्रीय संस्कृतियों के संरक्षण के महत्व को समझाने के लिये एक नवीन कार्यक्रम 'नयी भाषाएं सीखें' प्रारम्भ किया। इस श्रंखला में उड़िया, मराठी तथा बांग्ला तीन भाषाएँ संबंधित भाषा भाषी स्टाफ द्वारा सिखाई गईं।

2.8.24. **ईशानी :** कोलकाता के लोग पूर्वोत्तर भारत की झलकियों से रूबरू हो सकें इस हेतु पूर्वोत्तर पर प्रदर्शनी, शिल्प कार्यशाला सांस्कृतिक प्रस्तुति, व्याख्यान इत्यादि आकर्षणों से युक्त पांच दिवसीय विशेष कार्यक्रम 1 से 5 मार्च, 2015 तक गुरुसदय संग्रहालय, कोलकाता में आयोजित किये गये ।

2.8.25. **शाश्वति :** संस्कृतियों और सामाजिक मूल्यों के संरक्षण में महिलाओं की भूमिका अदृष्य भले हो परन्तु अतुलनीय है। समाज में उनकी निरापेक्षी सेवाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने हेतु इंगांरामासं ने 8 मार्च, 2015 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन निम्नलिखित गतिविधियों के साथ किया।

2.8.25.1. संग्रहालय लोकरुचि व्याख्यान : सुश्री जार्जुम ऐते, अध्यक्ष भारतीय बाल कल्याण परिषद, अरूणाचल प्रदेश ने 'एफोर्ट्स ऑफ ट्रायबल वूमेन ऑफ नॉर्थ-ईस्ट इण्डिया टुवर्ड्स पोलिटिकल लीडरशिप : केसेज़ फ्रॉम पैट्रिआर्कल अरूणाचल प्रदेश एण्ड नागालैंण्ड' पर व्याख्यान दिया।

2.8.25.2. क्षेत्रीय व्यंजन : मध्यप्रदेश, गुजरात, दक्षिण भारत तथा पंजाब के पारंपरिक खाद्य वस्तुओं पर केंद्रित एक कार्यक्रम।

2.8.25.3. को-अहं : प्रसिद्ध भारतीय शास्त्रीय नृत्यांगना प्द्मश्री श्रीमती शोभना नारायण ने जीवन और इतिहास में नारी के अस्तित्व को इंगित करती कथक नृत्य की प्रस्तुति दी।

2.8.25.4. ममत्व : महिला दर्शकों की सुविधा की पूर्ति हेतु डायपर स्टेशन, बेबी कार्ट, स्टिर्लाइज़र तथा वार्मर, पालने इत्यादि की सुविधाओं के साथ 'ममत्व' शीर्षक से मदर्स कॉर्नर का प्रावधान अंतरंग संग्रहालय भवन की दीर्घा क्रमांक 2 में एक विशिष्ट स्थान पर किया गया।

संग्रहालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'वाक एण्ड टॉक विथ क्यूरेटर' में दर्शकों व संग्रहालय क्यूरेटर के बीच सम्वाद का दृश्य।
A view of Interaction between visitors and museum curators in the programme Walk and Talk with Curator organised by Museum.

रेवांचल एक्सप्रेस में संयोजित छायाचित्र प्रदर्शनी सहजोग यात्रा का एक दृश्य।
A veiw of Photo exhibition Sahjog Yatra mounted in Rewanchal express.

संग्रहालय की दृश्य भंडार एवं शोध दीर्घा में आईजीएनटीयू, अमरकंटक के विद्यार्थी ।
Students from IGNTU, Amarkantak in museum's visual store cum research gallery.

हिंदी पखवाड़े के भाग के रूप में आयोजित विशेष कार्यक्रम का एक दृश्य।
A view of special programme organised by museum as part of Hindi Pakhwada.

संग्रहालय द्वारा हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगी कार्यक्रम का एक दृश्य।
A view of competitive event organised by IGRMS during Hindi Pakhwada .

श्री के.के. मित्तल, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संग्रहालय के शैल कला केन्द्र स्थित सभागार का लोकार्पण।
Dedication of Museum's Conference Hall at Rock Art Centre by Shri K.K. Mittal, Joint Secretary, MoC, Govt. of India.

2.8.21. **Walk and Talk with Curator:** A programme series entitled 'Walk and Talk with Curator' had been introduced by the Museum from 27th February, 2015. The series began with newly opened periodical exhibition 'Him-Lok' showcasing people and culture of the Indian Himalayas. The curators gave talk about the concept, objects and stories related with this exhibition.

2.8.22. **Sacred Grove festival:** The Museum organised two day 'Sacred Grove festival' in its premises at Bhopal on 07th and 08th February, 2015. Ritualistic activities were the main feature of this two day programme. Sacred Groves are patches of natural or near-natural vegetation, dedicated by local communities to their ancestral spirits or deities. These Groves are protected by local communities usually through customary taboos and sanction with ancestral and ecological implications.

Community representatives from the states of Tamilnadu, Rajasthan, Kerala and Maharashtra performed rituals related to sacred groves of their community.

2.8.23. **Mother Tounge Day:** On the occasion of International Mother Tounge Day, IGRMS organized two days long workshop on 21st and 22nd February, 2015. The Sangrahalaya started a programme 'Learn New Languages' to promote regional languages- dialects and to explain importance of preserving regional culture in society, family and offices. In this series three languages – Oriya, Marathi and Bangla were taught by the respective language speaking staff.

2.8.24. **Ishani:** Five day long special Programme on North-East featuring different components as exhibition, craft workshop, cultural performance, lecture etc. so that people of Kolkata may have a glimpse of North-East was organised from 1st to 5th March 2015 in collaboration with Gurusaday Museum, Kolkata.

2.8.25. **Shashwati:** Role of women in conservation of culture and social values may be invisible but incredible. In order to pay honour for her unconditional services to society, the IGRMS organised special programme on International Women's Day on 8th March, 2015 with following activities:

2.8.25.1. Museum Popular Lecture : Ms. Jarjum Ete, President, Indian Council of Child Welfare, Arunachal Pradesh delivered a lecture on "Efforts of the Tribal Women of North-East India towards Political Leadership: Cases from Patriarchal Arunachal Pradesh and Nagaland".

2.8.25.2. Regional Cuisine: A programme focused on traditional food items from states of Madhya Pradesh, Gujarat, South India and Punjab was organized.

2.8.25.3. Ko-Ahum: Famous Indian classical dancer Padmashri Ms.Shovana Narayan performed the Kathak dance indicating the existence of women in life and history .

2.8.25.4. Mamatva: Towards the fulfillment of women visitors facility, provision of a 'Mother's Corner' named 'Mamatva' was made with facilities of Diaper Station, baby-cart, sterilizer cum warmer, cradle etc. at a spacious location of Gallery no.2 of indoor museum building.

एकता की दौड़ के प्रतिभागियों को झंडी दिखाकर शुरूवात करते संग्रहालय के प्रभारी निदेशक श्री अरूण श्रीवास्तव।
Shri Arun Shrivastava, Director Incharge of the Museum Flagging off to the participants of the unity run.

संग्रहालय द्वारा भारत भवन, भोपाल में आयोजित घुमंतु प्रदर्शनी 'अरघ' का एक दृश्य।
A view of travelling exhibition 'Aragh' organised by Museum at Bharat Bhavan, Bhopal.

'भारत की द्वीप' संस्कृति पर स्थायी अंतरंग प्रदर्शनी का एक दृश्य।
A view of permanent indoor exhibition on Island Culture of India.

विश्व हृदय दिवस पर आयोजित विशेष कार्यक्रम का एक दृश्य।
A view of special programme organised on World Heart Day.

निदेशक, इंगारामासं द्वारा झण्डी दिखाकर एड्स जागरुकता रैली की शुरुवात्।
Beginning of Aids awareness rally with flag off by the Director, IGRMS.

इंगारामासं द्वारा अपने परिसर में आयोजित पारंपरिक व्यंजन उत्सव का एक दृश्य।
A view of Ethnic food festival organised by IGRMS in its museum premises.

सतर्कता जागरुकता सप्ताह के अतर्गत आयोजित विशेष व्याख्यान का दृश्य।
A view of special lecture organised under Vigilance awarenes week.

इंगारामासं द्वारा देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर में संयोजित घुमंतु प्रदर्शनी 'भारत के पुनीत वन' का एक दृश्य।
A view of travelling exhibition on 'Sacred Groves of India' mounted by IGRMS at Devi Ahilya Vishwavidhyalya, Indore.

26 जनवरी, 2015 से इंगारामासं, भोपाल में AEBAS उपस्थिति प्रणाली सुविधा की शुरुवात् की गई।
AEBAS attendance system has been started at IGRMS, Bhopal from 26th January, 2015.

प्रभारी निदेशक, अरुण श्रीवास्तव द्वारा पारम्परिक तकनीक मुक्ताकाश प्रदर्शनी में ओडियो गाइड सुविधा की शुरुवात् ।
Introduction of audio guide facility in the traditional technology open air exhibition by Director-in charge, Shri Arun Shrivastava.

कोकणा जनजाति के कलाकार द्वारा संग्रहालय परिसर में पारम्परिक भाभोड़ा नृत्य की प्रस्तुति।
Performance of traditional Bhabhoda dance by an artist of Konkona tribe in Museum premises.

पाषाण शिल्प कलाकार कार्यशाला का उद्घाटन दृश्य।
Inaugural view of artist workshop Pashan Shilp.

शिल्पायन कलाकार कार्यशाला में एक पारम्परिक कुम्हार।
A traditional potter in Shilpayan artist workshop.

शिल्पायन कलाकार कार्यशाला का उद्घाटन दृश्य।
Inaugural view of Shilpayan artist workshop.

लघु चित्रावली संगम कलाकाकार कार्यशाला के समापन कार्यक्रम का एक दृश्य।
A view of Valedictory function of artist workshop Laghu Chitrawali Sangam.

स्वच्छता अभियान के अंतर्गत आयोजित नुक्कड़ नाटक का एक दृश्य।
A view of street play organised under Cleanliness campaign .

स्वच्छता अभियान के तहत आयोजित जागरूकता रैली का एक दृश्य।
A view of awareness rally organised under the Cleanliness campaign .

2.8.26. **39वां स्थापना दिवस :**

2.8.26. 1. इंगांरामासं ने विभिन्न कार्यक्रम और गतिविधियों का आयोजन कर 21 से 23 मार्च, 2015 तक अपना 39वां स्थापना दिवस मनाया। कार्यक्रम का प्रारम्भ भोपाल में मलयाली समुदाय, अरूणाचल प्रदेश के लोक व जनजातीय कलाकारों, गणमान्य तथा अन्य आमंत्रित अतिथियों व दर्शकों की उपस्थिति में केरल के 1001 बातियों वाले पीतल के पारम्परिक दीप 'अलविलक्कू' के प्रज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर केरल की महिला ताल वाद्य वादकों के दल ने 'शिंकारीमेलम' की प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर संग्रहालय प्रदर्शनियों के विकास, कार्यक्रमों और गतिविधियों के लोकप्रियकरण में उल्लेखनीय योगदान देने वाले कलाकारों को सम्मानित किया गया। इस वर्ष संग्रहालय द्वारा लद्दाख से श्री सोनम सोपारी, राजस्थान से श्री शंकर गरासिया तथा भोपाल से श्री रामसिंह उर्वेती को सम्मानित किया गया।

स्थापना दिवस समारोह के भाग के रूप में तथा क्षेत्रीय संस्कृतियों के समारोह की श्रंखला के अंतर्गत 'अरूणाचल प्रसंग' शीर्षक से अरूणाचल प्रदेश सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन किया गया। इसके छः भाग थे। (i) प्रस्तुतिकारी कलाओं का प्रदर्शन (ii) अरूणाचल प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत पर संगोष्ठी (iii) अरूणाचल प्रदेश के लोगों और संस्कृति पर केंद्रित 'अरूणाचल परिदृष्य' तथा 'अरूणाचल एक झलक' शीर्षक से दो विशेष सामयिक प्रदर्शनियाँ (iv) पारम्परिक कला व शिल्प का प्रदर्शन सह विक्रय तथा (v) पारम्परिक व्यंजन उत्सव । अरूणाचल प्रदेश के लगभग 150 लोक व जनजातीय कलाकारों ने भोपाल के लोगों को अपनी प्रभावशाली प्रस्तुतियों से मंत्रमुग्ध किया। दूसरी ओर लोगों ने उपखण्डों क्रमशः पारम्परिक कला व शिल्प का प्रदर्शन सह विक्रय तथा पारंपरिक व्यंजन में क्रमशः अरूणाचल प्रदेश की पारम्परिक शिल्प सामग्रियों को क्रय करने तथा स्वादिष्ट भोजन के आस्वादन का भी आनंद उठाया। (vi) नामी फिल्म निर्माता श्री मोजि रिबा द्वारा अरूणाचल प्रदेश की जनजातियों पर एक वृत्त चित्र का प्रदर्शन तथा व्याख्यान दिया गया।

2.8.26.2. विरासत : अंतरंग संग्रहालय भवन वीथि संकुल में इंगांरामासं के संकलन में 'एए' तथा 'ए' श्रेणी के प्रादर्शों को दर्शाती एक प्रदर्शनी का सफलतापूर्वक संयोजन किया गया। 'राष्ट्रीय महत्व के प्रादर्शों' के रूप में अभिहित 78 प्रादर्शों से युक्त यह प्रदर्शनी इन संकलनों के सांस्कृतिक मूल्यों, प्रकार्यात्मकता तथा अति निपुणतापूर्वक की गई कारीगरी को करीब से देखने का अवसर उपलब्ध कराती है। प्रदर्शनी का उद्घाटन माननीय सांसद, भोपाल श्री आलोक संजर ने 21 मार्च, 2015 को किया।

2.8.26.3. वार्षिक इंगांरामासं व्याख्यान : 11वां वार्षिक इंगांरामासं व्याख्यान प्रो. तापती गुहा ठाकुरता प्रोफेसर, इतिहास तथा निदेशक, सामाजिक विज्ञान अध्ययन केंद्र, कोलकाता द्वारा 'एन एनशियेंट मोन्यूमेन्ट फॉर मॉडर्न इण्डिया : सांचीस कोलोनियल एण्ड पोस्ट कोलोनियल हिस्ट्रीज' विषय पर दिया गया।

2.8.26.4. बांसुरी वादन : इंगांरामासं के 39वें स्थापना दिवस समारोह का समापन पद्मभूषण पण्डित हरिप्रसाद चौरसिया के मनमोहक बांसुरी वादन के साथ हुआ। 84 वर्षीय बांसुरी कलाकार पा. चौरसिया ने एक बार फिर दर्शकों को अपनी मधुर और ऊर्जापूर्ण बांसुरी से लुभाया। आवृत्ति भवन के मुक्ताकाश मंच की ओर बड़ी झील से आती ठंडी हवा और बांसुरी की स्वर लहरियों ने इस मौके को स्मरणीय बना दिया।

2.8.26. **39th Foundation Day:**

2.8.26.1. IGRMS celebrated its 39th Foundation Day from 21st to 23rd March, 2015 by organising various programmes and activities. The programme began with lighting of 'Al-Vilakku'- the 1001 wicks traditional brass lamp of Kerala in presence of members from Malayali community of Bhopal, folk and tribal artists from Arunachal Pradesh, dignitaries and other invited guests and visitors. On this occasion team of female percussionists from Kerala presented Chenda recital 'Shinkarimelan'.

Artists who had given remarkable contribution in development of museum exhibitions and popularization of museum programmes and activities were felicitated on the occasion. This year Shri Sonam Sopari from Ladakh, Shri Shankar Garasiya from Rajasthan and Shri Ram Singh Urveti, Bhopal were felicitated by the Museum.

As part of Foundation Day celebration as also under the series of Celebrating Regional Cultures the cultural festival of Arunachal Pradesh entitled 'Arunachal Prasang' was organised. It had six components (i) Performing art presentations (ii) Seminar on Cultural Heritage of Arunachal Pradesh, (iii) Two special periodical exhibitions entitled Arunachal Paridrishya-focussed on People and Culture of Arunachal Pradesh and Arunachal Ek Jahalak (iv) traditional art and craft demonstration cum sale and (v) the ethnic food festival. Nearly 150 folk and tribal artists of Arunachal Pradesh enthralled the people of Bhopal by their tremendous performances. On the other hand people also enjoyed purchasing traditional craft items of Arunachal Pradesh and testing delicious food items under the sub sections traditional art craft demonstration cum sale and ethnic cusine respectively. (vi) A documentary film and a lecture on Tribes of Arunachal Pradesh by noted filmmaker Shri Moji Riba was organised on the occasion.

2.8.26.2. Virasat: An exhibition showcasing the 'AA' & 'A' categories objects from IGRMS collections was successfully organised in the Veethi Sankul-the indoor museum building. Comprising of about 78 objects designated as the 'objects of National Importance', the exhibition provides an insight into the cultural values, functionalities and ingenious craftsmanship of these collections. The exhibition was inaugurated by Hon'ble Member of Parliament, Shri Alok Sanjar on 21st March, 2015.

2.8.26.3. Annual IGRMS lecture: 11th Annual IGRMS lecture was delivered by Prof. Tapati Guha-Thakurta, Professor in History and Director, Centre for Studies in Social Sciences, Kolkata on the topic 'An Ancient Monument for Modern India: Sanchi's Colonial and Post-colonial Histories'.

2.8.26.4. Flute recitation: 39th Foundation Day celebration of IGRMS concluded with mesmerizing performance of flute recitation Padmabhusan Pt. Hariprasad Chourasiya on 23rd March, 2015. 84 year old flute Mastro Pt. Chourasiya once again seduced the audience with his energetic and melodious flute recital. Cool breeze from upper lake to open air stage of Avritti and vibrating tune of flute made the occasion remarkable.

३९वें स्थापना दिवस समारोह की झलकियाँ।

Glimpses of 39th Foundation Day celebration.

1001 बातियों वाले विशालदीप 'अलविलक्कू' का प्रज्वलन।
Lighting of 1001 wick huge lamp 'Al Vilakku'.

उल्लेखनीय योगदान हेतु कलाकार श्री रामसिंह उर्वेती का सम्मान।
Felicitation of artist Shri Ramsingh Urveti for remarkable contribution.

श्री आलोक संजर, सांसद, भोपाल द्वारा विशेष प्रदर्शनी विरासत का उद्घाटन।
Inauguration of special exhibition Virasat by Shri Alok Sanzar, Member of Parliament, Bhopal.

श्री आलोक संजर, सांसद, भोपाल द्वारा विशेष प्रदर्शनी विरासत का भ्रमण।
Visit to special exhibition Virasat by Shri Alok Sanzar, MP, Bhopal.

केरल की महिला कलाकारों द्वारा शिंकारी मेलम की प्रस्तुति।
Performance of Shinkari Melam by the women artists from Kerala.

अरुणाचल प्रदेश सांस्कृतिक उत्सव के दौरान जनजातीय कलाकारों द्वारा पारम्परिक नृत्य की प्रस्तुति।
Performance of traditional dance by the tribal artists during Arunachal Pradesh Cultural Festival.

अरुणाचल प्रदेश के जनजातीय कलाकारों द्वारा पारम्परिक नृत्य की प्रस्तुति।
Performance of traditional dance by the tribal artists from Arunachal Pradesh.

अरूणाचल एक झलक विशेष सामयिक प्रदर्शनी का एक दृश्य।
A view of special periodical exhibition Arunachal Ek Jhalak.

व्याख्यान देते प्रसिद्ध वृतचित्र निर्माता श्री मोजि रिबा।
Noted documentary film maker Shri Moji Riba giving lecture .

अरुणाचल प्रदेश के जनजातीय कलाकारों द्वारा पारंपरिक भोजन की प्रस्तुति का एक दृश्य।
A view of presentation of traditional food by the tribal artists from Arunachal Pradesh.

राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर के विद्यार्थियों द्वारा अरुणाचल प्रदेश सांस्कृतिक उत्सव के दौरान पारंपरिक जनजातीय परिधानों की प्रस्तुति।
Presentation of traditional tribal costumes by the students of Rajiv Gandhi University, Itanagar during Arunachal Pradesh Cultural Festival.

39वें स्थापना दिवस समारोह की झलकियाँ।
Glimpses of 39th Foundation Day celebration.

अरुणाचल एक झलक विशेष सामयिक प्रदर्शनी का एक दृश्य।
A view of special periodical exhibition Arunachal Ek Jhalak.

अरुणाचल प्रदेश के पारंपरिक भोजन का आस्वादन करते दर्शक।
Visitors tasting the tradition food of Arunachal Pradesh.

3

ऑपरेशन साल्वेज
Operation Salvage

3.1. **संकलन द्वारा साल्वेज :** अवधि के दौरान प्रादर्श भण्डार में 958 प्रादर्श प्राप्त और आरोहित किये गए जिसमे 648 प्रादर्श स्थायी संकलन स्वरूप तथा 310 प्रादर्श अस्थायी संकलन के रूप में जोड़े गए। ये प्रादर्श आंध्रप्रदेश, बिहार, अण्डमान एवं निकोबार द्वीप, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, तमिलनाडु, उत्तराखंड, एवं पश्चिम बंगाल के लोक व जनजातीय समुदायों जैसे मैतेई, तिवा, बोडो, आओ नागा, गोंड, बैगा, अहीर, परजा, मारिंग, चिरू, हमार, अनल, काबुई नागा, कोम, कंसारी, गढ़वाली, राजपूत, माओ, पोउमाई, थांकुल, कोइरेंग, लियांगमेई, कूकी, जोऊ, पैते, चोथे तथा तराओ से संकलित किये गये।

3.2. **क्षेत्र कार्य द्वारा साल्वेज :**

3.2.1. एक संग्रहालय अधिकारी ने हिमाचल प्रदेश के शिमला, धर्मशाला तथा कांगड़ा क्षेत्रों का दौरा किया तथा इस क्षेत्र से मिनिएचर पेंटिंग्स का संकलन किया।

3.2.2. एक संग्रहालय अधिकारी ने मध्यप्रदेश के पचमढ़ी क्षेत्र में गोंड तथा भारिया जनजातियों के मध्य मानवशास्त्रीय प्रादर्शों के संकलन व प्रलेखन हेतु क्षेत्र कार्य किया।

3.2.3. एक संग्रहालय अधिकारी ने मानवशास्त्रीय प्रादर्शों के संकलन एवं प्रलेखन हेतु केरल का दौरा किया।

3.2.4. संग्रहालय के अधिकारियों ने जैसलमेर, राजस्थान में क्षेत्रकार्य किया तथा क्षेत्र में रहने वाले सोढ़ा राजपूत, सोलंकी, मुस्लिम, मेघवाल, मेवासी, मीणा तथा चांगणिया समुदायों का छाया प्रलेखन किया।

3.2.5. संग्रहालय के एक अधिकारी ने सवाई माधोपुर, राजस्थान में मीणा जनजाति में प्रचलित भित्ति सज्जा शैली के प्रलेखन हेतु क्षेत्र कार्य किया।

3.2.6. संग्रहालय अधिकारियों के एक दल ने महाराष्ट्र के जलगाँव जिले में श्री बालाजी संस्थान श्री क्षेत्र परोला के ब्रम्होत्सव तथा रथ उत्सव का आडियो-वीडियो प्रलेखन किया।

3.2.7. संग्रहालय के एक अधिकारी ने मानवशास्त्रीय प्रादर्शों के संकलन व प्रलेखन के लिये उत्तराखंड का दौरा किया तथा गढ़वाल उत्तराखंड से विभिन्न समुदायों से लगभग 110 प्रादर्शों का संकलन किया।

3.2.8. संग्रहालय के दो अधिकारियों ने लद्दाख के विभिन्न गांवों का दौरा किया तथा आवास प्रतिमानों, बौद्ध विहारों, कलाकृतियों, वेशभूषा प्रतिमानों इत्यादि का प्रलेखन तथा हिमालय ग्राम मुक्ताकाश प्रदर्शनी में लद्दाख का रसोईघर विकसित करने हेतु लगभग 100 प्रादर्शों का संकलन किया।

3.2.9. इंगांरामासं. के अधिकारियों के एक दल ने ओडिशा के सैण्ड आर्ट उत्सव तथा धातु शिल्प परम्परा का प्रलेखन करने हेतु ओडिशा का दौरा किया। दल ने ओडिशा के कंसारी समुदाय से 115 प्रादर्शों का संकलन भी किया।

3.1. **Salvage Through Collection:** During the period 958 number of objects received and accessioned in specimen store. Out of them 648 objects were added as permanent collection and 310 objects as temporary collection. These objects have been collected from Andhra Pradesh, Arunachal Pradesh, Assam,Himachal Pradesh, Kerala, Jammu & Kashmir, Madhya Pradesh, Maharashtra, Manipur, Nagaland, Odisha and Uttarakhand belonging to folk and tribal communities like Meitei, Tiwa, Bodo, Ao Naga, Gond, Baiga, Ahir, Paraja, Maring, Chiru, Hmar, Anal, Kabui Naga, Kom, Kansari, Garhwali Rajput, Mao, Poumai, Thankul, Koireng, Liangmei, Kuki, Zou, Paite, Chothe and Tarao.

3.2. **Salvage Through Field Work:**

3.2.1. A Museum official carried out field work in Shimla, Dharmashala and Kangra area of Himachal Pradesh and collected miniature paintings from the region.

3.2.2. A Museum officer carried out field work among the Gond and Bharia tribes in Panchmarhi area of Madhya Pradesh for collection and documentation of ethnographic materials.

3.2.3. A Museum official made tour to Kerala for collection and documentation of ethnographic objects.

3.2.4. Officers of the Museum conducted field work in Jaisalmer, Rajasthan and carried out photo documentation of Sodha Rajputs, Solankis, Muslims, Meghwal, Mewasi, Meena and Changaniya communities residing in the area.

3.2.5. An official of the Museum conducted field work in Sawai Madhopur, Rajsthan for the documentation of styles of wall decoration prevalent among the Meena tribe.

3.2.6. A team of IGRMS officials carried out audio-video documentation of Bramhotsava and Rath Utsav of Shri Balaji Sansthan Shri Kshetra Parola in district Jalgaon of Maharashtra.

3.2.7. An official of the Museum visited Uttarakhand for collection and documentation of ethnographic objects and collected nearly 110 objects belonging to various communities of Garhwal, Uttarakhand.

3.2.8. Two officials of the Museum visited various villages of Ladakh and documented the house patterns, monasteries, artefacts, dress patterns etc. and collected around 100 objects for development of an exhibit of kitchen of Ladakh at Himalayan village open air exhibition.

3.2.9. A team of IGRMS official visited Odisha for documentation of sand art festival and metal casting tradition of Odisha. The team also collected nearly 115 objects from the Kansari community of Odisha

3.2.10. संग्रहालय के एक अधिकारी ने पटुआ चित्रकला परम्परा तथा उसके ज्ञान के संवाहकों के प्रलेखन हेतु पश्चिम बंगाल में बीर भूम, मिदनापुर तथा झारखरण्ड के अमादुबी ग्राम का दौरा किया।

3.2.11. संग्रहालय के एक अधिकारी ने धनगढ़ समुदाय के भौतिक संस्कृति के प्रादर्शों के प्रलेखन व संकलन हेतु महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले का दौरा किया।

3.2.12. संग्रहालय के एक अधिकारी ने असम के करबी आंग्लांग, नगाँव तथा जोरहाट जिलों का दौरा किया और विभिन्न समुदायों से भौतिक संस्कृति के प्रादर्शों का संकलन किया।

3.3. **राष्ट्रीय टैगोर फैलोशिप/स्कॉलरशिप :** टैगोर नैशनल फैलोशिप संस्कृति मंत्रालय द्वारा सांस्कृतिक शोध हेतु शुरू की गई प्रमुख योजनाओं में से एक है। जिसके अंतर्गत उन अध्येताओं को जिन्होंने सांस्कृतिक अध्ययन में मौलिक शोध अभिलेख प्रस्तुत किये हैं फैलोशिप तथा स्कॉलरशिप दी जाती है। योजना का कार्यान्वयन मंत्रालय के अधीनस्थ/सम्बद्ध कार्यालयों, विभागों एवं अन्य समान संस्थाओं के माध्यम से किया जाता है।

इस योजना के अंतर्गत इंगांरामासं की ओर से वर्ष 2013–14 के लिये श्री वसन्त निर्गुणे तथा डॉ. ओ.पी. मिश्रा को उनके शोध परियोजना क्रमशः 'मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियों में विलुप्त होती गुदना प्रथा' का अध्ययन तथा 'सोशियो कल्चरल स्टडी ऑफ सिनोटाफ्स इन सेंट्रल इण्डिया' हेतु टैगोर नैशनल स्कॉलरशिप प्रदान की गई।

3.2.10. An official of the Museum carried out field work in Birbhum, Midnapur in West Bengal and Amadubi village of Jharkhand for documetation of Patua painting traditions and its knowledge bearers.

3.2.11. An official of the Museum visited Aurangabad district of Maharashtra for documention and collection of material culture objects of Dhangarha community.

3.2.12. An official of the Museum visited Karbi Anglong, Nagaon and Jorhat district of Assam and collected material culture objects of different communities.

3.3. **Tagore National Fellowship/ Scholarship:** The Tagore National Fellowship for Cultural Research is one of the major schemes initiated by the Ministry of Culture under which Fellowships and Scholarships are given to scholars who have proven record of original research in cultural studies. The scheme has been implemented through the subordinate/ attached offices and other similar institutions.

Shri Vasant Nirgune and Dr. O.P. Mishra had been awarded with National Tagore Scholarship for the year 2013-14 through IGRMS for their research on 'Critical Study of Tattoo traditions in predominant tribal communities of Madhya Pradesh' and 'Socio-Cultural Study of the Cenotaphs of Central India' respectively.

पचमढ़ी, मध्य प्रदेश में संग्रहालय के अधिकारी द्वारा प्रलेखन व संकलन कार्य।
Documentation and collection work by Museum official in Pachmarhi, Madhya Pradesh.

ओडिशा में क्षेत्र कार्य के दौरान लिया गया एक चित्र।
A picture taken during field work in Odisha.

जैसलमेर के सीमांत क्षेत्र में क्षेत्रीय प्रलेखन के दौरान लिया गया एक चित्र।
Picture taken during field documentation in border area of Jaisalmer.

महाराष्ट्र में प्रादर्श संकलन हेतु क्षेत्र कार्य के दौरान लिया गया चित्र।
A photo taken during field work in Maharashtra.

4

दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, मैसूर

Southern Regional Centre, Mysore

4.1. निम्नलिखित **'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रमों** का आयोजन किया गयाः

4.1.1. पारम्परिक मैसूर चित्रकला पर 3 से 12 सितम्बर, 2014 तक एक 'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन उडुपी यक्षगान केंद्र, उडुपी के सहयोग से उडुपी में किया गया।

4.1.2. ओडिशा की पारम्परिक पटचित्र कला पर एक दस दिवसीय 'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन 7 से 16 अक्टूबर, 2014 तक आयोजन किया गया। श्री विजय कुमार बारिकी ने 35 प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदान किया।

4.1.3. मैसूर शैली की पारम्परिक गंजीफा कला पर एक 'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन 20 फरवरी से 12 मार्च, 2015 तक किया गया।

4.1.4. पश्चिम बंगाल के पारम्परिक शोला काष्ठ शिल्प पर एक 'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन 17 से 26 मार्च, 2015 तक किया गया जिसमें पश्चिम बंगाल के कलाकार श्री श्यामल घोष तथा उनके सहायक ने 24 पंजीकृत प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदान किया।

4.2. **कलाकार कार्यशाला :**

4.2.1. राष्ट्रीय जनजातीय एवं लोक कलाकार कार्यशाला : आन्ध्र प्रदेश कर्नाटक, ओडिशा, मध्यप्रदेश, पंजाब, बिहार, पश्चिम बंगाल, असम, त्रिपुरा, मणीपुर, नागालैण्ड तथा मिजोरम के लोक एवं जनजातीय कलाकारों की एक पांच दिवसीय कार्यशाला 20 से 24 अप्रैल, 2014 तक मैसूर में आयोजित की गई।

4.2.2. कर्नाटक, तमिलनाडु, ओडिशा, बिहार तथा मध्यप्रदेश राज्यों के टेराकोटा कलाकारों की एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन विभिन्न चरणों में किया गया। प्रतिभागी कलाकारों ने लघु से जीवंत आकार तक विभिन्न टेराकोटा प्रादर्श तैयार किये तथा दक्षिण क्षेत्रीय केंद्र की मुक्ताकाश प्रदर्शनी में उन्हें प्रदर्शित किया।

4.2.3. दो माह की अवधि की मूर्तिकारों की कार्यशाला 4 मई, 2014 से आयोजित की गई। कार्यशाला का उद्देश्य पाषाण मूर्तियों की एक मुक्ताकाश प्रदर्शनी विकसित करना था। इस कार्यशाला में कर्नाटक एवं ओडिशा प्रत्येक से पॉँच कलाकारों ने प्रतिभागिता की।

4.2.4. पंचवरणम् : केरल की भित्ति चित्र परम्परा पर एक दस दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन 7 से 16 फरवरी, 2015 तक बेंगलुरु में नैशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज़, बेंगलुरु में 25 कलाकारों की प्रतिभागिता में किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. के.के. चक्रवर्ती, अध्यक्ष ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा किया गया।

4.1. Following '**Do and Learn' Museum Education Programmes** were organized on.

4.1.1. A "Do and Learn" museum education programme was organised in collaboration with Udupi Yaksha Gana Kendra, Udupi on 'Traditional Mysore Painting" from 3rd to 12th September, 2014 at Udupi.

4.1.2. A "Do and Learn" museum education programme on 'Traditional Patta Painting of Odisha" was organised from 7th to 16th October, 2014 for 10 days. Shri Bijaya Kumar Bariki imparted training to 35 participants.

4.1.3. A 'Do and Learn' Museum Education Programme on ' 'Traditional Ganjifa Art of Mysore style' was conducted from 20th February to 12th March,2015.

4.1.4. A 'Do and Learn' Museum education programme was organised from 17th to 26th March, 2015 on 'Traditional Sola Wood Craft of West Bengal' in which artists from West Bengal Shri Shyamal Ghosh and his assistant imparted training to the 24 registered participants.

4.2. **Artist Workshop :**

4.2.1. National Tribal and Folk Artist Workshop : A five day workshop of folk and tribal artisans from Andhra Pradesh, Karnataka, Odisha, Madhya Pradesh, Punjab, Bihar, West Bengal, Assam, Tripura, Manipur, Nagaland and Mizoram was organised from 20th to 24th April, 2014.

4.2.2. A National workshop of terracotta artists from the States of Karnataka, Tamilnadu, Odisha, Bihar and Madhya Pradesh had been organised in various phases. Participating artists prepared various terracotta objects ranging from miniature to live size and displayed them in the open air exhibition of Southern Regional Centre.

4.2.3. A two month long workshop of sculptors was organised from 4th May, 2014. The workshop was aimed to develop an open air exhibition on Stone Sculptures. In this workshop five artists each from Karnataka and Odisha had participated.

4.2.4. Panchavaranam: A Ten Day programme on Mural Painting Tradition of Kerala was organized at Bengaluru from 7th to 16th February, 2015 in collaboration with National Institute of Advanced Studies (NIAS) Bengaluru with participation of 25 artists. The workshop was inaugurated by Dr. K. K. Chakravarty, Chairman, Lalit Kala Akademi, New Delhi.

4.3. **प्रस्तुतिकारी कलाओं का प्रदर्शन :**

4.3.1. राष्ट्रीय लोक एवं जनजातीय नृत्य उत्सव : लोक व जनजातीय कलाकारों की राष्ट्रीय कार्यशाला के अवसर पर कर्नाटक, केरल, आंध्रप्रदेश, असम तथा मणीपुर के लोक व जनजातीय नृत्यों के तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन दक्षिण क्षेत्रीय केंद्र द्वारा 22 तथा 24 अप्रैल, 2014 को जगनमोहन कला दीर्घा, मैसूर में तथा 23 अप्रैल, 2014 को इंगांरामासं के दक्षिण क्षेत्रीय केंद्र के परिसर में किया गया।

4.3.2. शिंकारी मेलम व तैय्यम : केरल के लोक कलाकारों द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन 16 फरवरी, 2015 को नैशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज़, बेंगलूर में किया गया। दक्षिण केरल के कलाकारों ने केरल के अनुष्ठानिक नृत्य तैय्यम की प्रस्तुति दी जबकि महिला कलाकारों के एक दल ने शिंकारी मेलम की प्रस्तुति दी।

4.4. **अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस समारोह :**

अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस भी बड़े हर्ष और उल्लास के साथ असम, अरूणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मणीपुर, मेघालय, सिक्किम, मिजोरम तथा नागालैण्ड के लोक व जनजातीय कलाकारों की प्रतिभागिता में पूर्वोत्तर भारत की संस्कृतियों पर 18 से 12 मई, 2014 तक पांच दिवसीय कार्यशाला आयोजित कर मनाया गया। (ii) स्कूली बच्चों हेतु एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय, मैसूर के सहयोग से किया गया।

4.5. **संगोष्ठी :**

राजभाषा कार्यान्वयन एवं प्रचार प्रसार पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 30 जून, 2014 को भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, मैसूर के सभागार में किया गया। संगोष्ठी का आयोजन भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण के सहयोग से किया गया। श्री वेद प्रकाश गौर, निदेशक, राजभाषा, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की।

4.6. **अनंत यात्रे–5** : अंतर्राष्ट्रीय विश्व देशज जन दिवस मनाने हेतु 9 से 13 अगस्त, 2014 तक एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके तीन भाग थे :

4.6.1. कलाकार कार्यशाला : भारत की पारम्परिक लोक व जनजातीय चित्रकला की विषय वस्तु पर 43 जनजातीय व लोक कलाकारों की प्रतिभागिता में एक कलाकार कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन श्री सी.जी. बटेसर मठ, आयुक्त, पुरातत्व संग्रहालय एवं धरोहर विभाग, मैसूर ने किया।

4.6.2. विशेष प्रदर्शनी : पूर्वोत्तर भारत की भौतिक संस्कृति के प्रमुख पक्षों को दर्शाती हुई 'पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति' शीर्षक से मानवशास्त्रीय प्रादर्शों तथा छायाचित्रों से युक्त एक विशेष प्रदर्शनी 9 अगस्त, 2014 को लगाई गई।

4.6.3. प्रस्तुतिकारी कलाओं का प्रदर्शन : प्रस्तुतिकारी कलाओं के प्रदर्शन का चार दिवसीय कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसमें आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, केरल और पूर्वोत्तर राज्यों के कलाकारों ने प्रस्तुतियाँ दीं।

4.3. **Artist Workshop :**

4.3.1. National Folk and Tribal Dance Festival: On the occasion of national workshop of folk and tribal artists a three day programme of folk and tribal dances from Karnataka, Kerala, Andhra Pradesh, Assam and Manipur was also organised by Southern Regional Centre, Mysore at Jaganmohan art gallery, Mysore on 22nd and on 24th April, 2014 and at premises of Southern Regional Centre, IGRMS on 23rd April, 2014.

4.3.2. Shinkari Melam and Teyyam: A cultural programme by folk artists from Kerala was organised at National Institute of Advance Studies, Bengaluru on 16th February, 2015. Artists from south Kerala gave presentation of 'Teyyam' the ritualistic dance form of Kerala while a group of women artists gave performance of 'Shinkari melam'.

4.4. **International Museum Day Celebration :**

International Museum Day was also celebrated with great festivity and enthusiasm by organising a five day workshop of North Eastern Cultures with participation of folk and tribal artists from Assam, Arunachal Pradesh, Tripura, Manipur, Meghalaya, Sikkim, Mizoram and Nagaland from 18th to 22nd May, 2014 . (ii) A Drawing Competition for school children was also organised in collaboration with Regional Museum of Natural History, Mysore.

4.5. **Seminar :**

One day seminar on 'Implementation and Promotion of the Official Language (Raj Bhasha)' was organised on 30th June, 2014 at auditorium of Anthropological Survey of India, Mysore. The seminar was organised in collaboration with Anthropological Survey of India. Shri Ved Prakash Gour, Director, Official Language, Ministry of Culture, Govt. of India chaired the seminar.

4.6. **Ananth Yatre-5 :** To mark the International Day of World's Indigenous People special programme was organised from 9th to 13th August, 2014. It had three components:

4.6.1. Artist Workshop: Artists workshop with theme of Tribal, Folk and Traditional Paintings of India was organised with participation of 43 tribal and folk artists. The workshop was inaugurated by Shri C.G. Betesur Math, Commissioner, Deptt. of Archeology, Museums and Heritage, Mysore.

4.6.2. Special exhibition: A special exhibition entitled 'North Eastern Culture of India' consisting of ethnographic objects and photographs was mounted on 9th August, 2014 with a view to showcase the predominant aspects of material culture of North-East India.

4.6.3. Performing art presentation: Four day programme of performing art presentation was also organized, in which 210 artists from Andhra Pradesh, Karnataka, Kerala and North-Eastern States of India gave performances.

4.7. इंगांरामासं., भोपाल ने अपने दक्षिण क्षेत्रीय केंद्र मैसूर के माध्यम से 'हेमन्तोत्सव' शीर्षक से एक बहुरंगी कार्यक्रम का आयोजन 10 से 14 दिसम्बर, 2014 तक यक्षगान केंद्र उडुपी के सहयोग से एम.जी.एम. परिसर, उडुपी में किया। कार्यक्रम के दौरान पूरे भारत से विभिन्न लोक व जनजातीय कलाकारों ने प्रस्तुतिकारी कलाओं के साथ अपने जनजातीय व लोक कला रूपों का प्रदर्शन किया।

कार्यशाला का उद्घाटन डॉ भास्करानंद कुमार, वरिष्ठ अस्थि शल्य चिकित्सक एवं यक्षगान कलाकार ने किया। डॉं. एच. कृष्णा भाट, निदेशक, यक्षगान केंद्र ने उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस कार्यशाला में कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, असम, मेघालय, मिजोरम, सिक्किम, नागालैण्ड तथा अरूणाचल प्रदेश के कलाकारों ने प्रतिभागिता की।

कार्यशाला के अतिरिक्त 10 से 12 दिसम्बर, 2014 तक पारम्परिक प्रस्तुतियों का भी आयोजन किया गया जिसमें अरूणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मणीपुर, मिजोरम, मेघालय, असम के कलाकारों ने उनके नृत्य प्रस्तुत किये। सांस्कृतिक कार्यक्रम का उद्घाटन प्रो. डेरिक स्वार्ट्ज़, कुलपति, नेल्सन मंडेला मेट्रोपोलिटन विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रिका ने किया।

4.7. The IGRMS Bhopal through its Southern Regional Centre, Mysore in collaboration with Yakshagana Kendra, Udupi has organised a 5 day multifarious programme entitled 'Hemantotsav' from 10th to 14th December, 2014 at MGM campus, Udupi. During the programme different tribal and folk artisans from all over India have demonstrated their tribal and folk art forms along with performing art presentation.

The workshop was inaugurated by Dr. Bhaskarnanda Kumar, Senior Orthopedic Surgeon and Yakshagana artist. Dr. H. Krishna Bhat, Director, Yakshagana Kendra presided the inaugural function. In this workshop artists from Karnataka, Tamilnadu, Maharashtra, Madhya Pradesh, Chhattisgarh, Assam, Meghalaya, Mizoram, Sikkim, Nagaland and Arunachal Pradesh participated.

Besides the work shop, the traditional performances were also organised from 10th to 12th December, 2014 in which artists from Arunachal Pradesh, Tripura, Manipur, Mizoram, Meghalaya, Assam presented their dances. The cultural event was inaugurated by Prof. Derrick Swartz, Vice Chancellor at Nelson Mandela Metropolitan University, Port Elizebeth, South Africa.

दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, मैसूर द्वारा आयोजित प्रदर्शनियों व कलाकार कार्यशालाओं की झल्कियाँ।
Glimpse of exhibitions and artist workshops organised by Southern Regional Centre, Mysore.

कलाकार शिविर में शिरकत करता आन्ध्र प्रदेश का मुखौटा एवं चेरियाल पट चित्रकार।
A mask and Cherial scroll painter from Andhra Pradesh participating in an artist workshop.

असम के कलाकारों द्वारा नृत्य प्रस्तुति।
Dance performance by the artists from Assam.

मणीपुर के कलाकार द्वारा पुंगचोलम की प्रस्तुति।
Performance of Pungcholam by artist from Manipur.

पूर्वोत्तर पर विशेष प्रदर्शनी का एक दृश्य।
A view of special exhibition on North East.

प्रदर्शनी का भ्रमण करते स्कूली विद्यार्थी।
Visit to exhibition by school students

प्रदर्शनी का भ्रमण करते स्कूली विद्यार्थी।
Visit to exhibition by school students.

केरल के लोक कलाकारों द्वारा अनुष्ठानिक नृत्य तैय्यम की प्रस्तुति।
Performance of ritual dance Taiyyam by the artists from Kerala.

अरुणाचल प्रदेश के जनजातीय कलाकारों द्वारा पारम्परिक नृत्य की प्रस्तुति।
Performance of traditional dance by the artists from Arunachal Pradesh.

5

पूर्वोत्तर भारत की गतिविधियाँ
Activities for North Eastern India

संगहालय भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों की परम्पराओं के प्रलेखन और पुनर्जीवीकरण पर विशेष बल दे रहा है। वर्ष के दौरान संग्रहालय ने उत्तर-पूर्वी राज्यों और भारत के विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित कर अपनी गतिविधियों का विस्तार किया।

5.1. **मुक्ताकाश प्रदर्शनी:** अवधि के दौरान मुक्ताकाश प्रदर्शनी जनजातीय आवास में तीन प्रादर्श असम के तिवा समुदाय का युवागृह-समादि एवं पारम्परिक आवास प्रकार नो-बारो तथा मणीपुर के मारिंग समुदाय का अनुष्ठान गृह स्थापित किये गये।

5.2. **अस्थाई एवं घुमंतु प्रदर्शनियाँ:**

5.2.1. पूर्वोत्तर भारत की झलकियाँ : पूर्वोत्तर भारत में बेंत और बांस संस्कृति को दर्शाती एक छाया चित्र प्रदर्शनी का संयोजन अरोविल बैम्बू सेन्टर, पांण्डिचेरी में किया गया। (फरवरी, 2015)

5.2.2. ईशानी: पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति पर एक छाया चित्र प्रदर्शनी गुरुसदय संग्रहालय, कोलकाता के सहयोग से कोलकाता में आयोजित की गई। (मार्च, 2015)

5.2.3. अरुणाचल परिदृष्य : अरुणाचल प्रदेश के लोगों और संस्कृति पर केंद्रित एक सामयिक प्रदर्शनी का आयोजन भोपाल स्थित संग्रहालय के आवृत्ति भवन में अरुणाचल प्रदेश सांस्कृतिक उत्सव के दौरान किया गया। (मार्च, 2015)

5.2.4. अरुणाचल एक झलक : अरुणाचल प्रदेश के विविध सांस्कृतिक पक्षों को दर्शाती एक छायाचित्र प्रदर्शनी भी अरुणाचल प्रदेश सांस्कृतिक उत्सव के अवसर पर संयोजित की गई। (मार्च, 2015)

The Museum is giving special emphasis on the documentation and revitalisation of traditions of North-eastern states of India. During the year the Museum has strengthened its activities by organising various programmes in the North-eastern States and at different places in India.

5.1 **Open Air Exhibitions:** During the period three exhibits "Samadi"- Youth dormitory and "No-baro"- traditional house type of Tiwa community of Assam and "Inn-Ki"- a ceremonial house of Maring community of Manipur were installed at Tribal Habitat open air exhibition.

5.2. **Temporary and Periodical Exhibition :**

5.2.1. Glimpses of Northeast India: A photographic exhibition depicting cane and bamboo cultures in North-East India was mounted at Auroville Bamboo Centre, Pondicherry. (February, 2015).

5.2.2. Ishani : a photographic exhibition on North Eastern Cultures of India was mounted in collaboration with Gurusaday Museum, Kolkata at Kolkata. (March, 2015)

5.2.3. Arunachal Paridrishya: A periodical exhibition focused on People, life and Culture in Arunachal Pradesh was mounted at Avritti Bhawan of the Museum at Bhopal during the Arunachal Pradesh Cultural festival. (March,2015)

5.2.4. Arunachal Ek Jhalak: a photographic exhibition showcasing vivid aspects of Arunachal Pradesh was also mounted on the occasion of Arunachal Pradesh Culture Festival. (March,2015)

अरुणाचल प्रदेश सांस्कृतिक उत्सव में प्रस्तुति हेतु आमंत्रित अरुणाचल प्रदेश के जनजातीय कलाकार।
Tribal artists from Arunachal Pradesh invited for performance in Arunachal Pradesh Cultural festival.

5.3. **माह का प्रादर्शः** माह का प्रादर्श नामक श्रृंखला के अंतर्गत पूर्वोत्तर राज्यों की संस्कृति से सम्बन्धित निम्न प्रादर्शों को प्रदर्शित किया गया।

5.3.1. वांगाम्बा चेन्खांग – लकड़ी की एक कुर्सी, नागा मुखिया के गौरव, अधिकार, सर्वोच्चता तथा स्तर को सूचित करता एक बेहतरीन प्रादर्श। (मई, 2014)

5.3.2. शामी लामी फी – नागालैण्ड के नागा समुदाय का एक अंगवस्त्र। (अक्टूबर, 2014)

5.4. **कलाकार कार्यशालाः** वर्ष के दौरान पूर्वोत्तर भारत के कलाकारों की प्रतिभागिता में निम्न लिखित कलाकार कार्यशालाएं आयोजित की गई।

5.4.1. विभिन्न भारतीय राज्यों की कला और शिल्प परम्पराओं पर 'जम्मू उत्सव' शीर्षक से एक विशेष कार्यक्रम जम्मू में 12 से 16 अप्रैल, 2014 तक आयोजित किया गया जिसमें मणीपुर के कलाकारों ने भी उनके पारम्परिक शिल्प कौशल का प्रदर्शन किया।

5.4.2. अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के प्रयास स्वरूप कॉम जनजाति के पारम्परिक खेलों पर एक कार्यशाला, कॉम सांस्कृतिक नृत्य एवं शोध केंद्र, खोइरेना खुमान, मणीपुर के सहयोग से 2 से 6 मई, 2014 तक आयोजित की गई। कार्यशाला का उद्घाटन श्री युम्नाम ज्ञानेश्वर सिंह, निदेशक, जनजातीय संग्रहालय तथा शोध केंद्र, इम्फाल द्वारा किया गया।

5.4.3. संग्रहालय ने अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, ओडिशा सरकार, भुवनेश्वर के सहयोग से दस दिन की अवधि की एक राष्ट्रीय जनजातीय कला एवं शिल्प कार्यशाला का आयोजन 19 से 28 नवम्बर, 2014 तक भुवनेश्वर में किया । कार्यक्रम में मणीपुर और असम सहित भारत के विभिन्न राज्यों से विविध देशज शिल्पों जैसे बांस, मुखौटा निर्माण, टोकरी, वस्त्र, लाख, धातु, लौहशिल्प तथा चित्रकला में अपने कौशल के प्रदर्शन हेतु कुल 81 कलाकारों ने भाग लिया।

5.4.4. 'छमयम–II' शीर्षक से एक विशेष कार्यक्रम 4 से 8 दिसम्बर, 2014 तक किरटाड्स, केरल के सहयोग से किरटाड्स परिसर, सेवायर, केरल में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में नागालैण्ड, अरूणाचल प्रदेश, असम सहित भारत के विभिन्न राज्यों से 32 जनजातीय कलाकारों ने प्रतिभागिता की तथा अपने शिल्प कौशल का प्रदर्शन किया।

5.4.5. भारतीय समुदायों की वैविध्यपूर्ण अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के दृष्यांकन के उद्देश्य से संग्रहालय द्वारा देश भर में कार्यक्रम और गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। इस श्रंखला को जारी रखते हुए इंगांरामासं ने 'ग्लोरी ऑफ लॉर्ड पाखांग्बा' शीर्षक से एक 15 दिवसीय कलाकार कार्यशाला का आयोजन खुरई पुतिबा सामुदायिक भवन, इम्फाल में 4 से 18 दिसम्बर, 2014 तक किया।

5.4.6. पूर्वोत्तर भारत की कला परम्पराओं और कलाकारों को अन्य राज्यों के लोगों से परिचित कराने के उद्देश्य से 'ईशानी' शीर्षक से पांच दिवसीय शिल्प कार्यशाला का आयोजन 1 से 5 मार्च, 2015 तक गुरूसदाय संग्रहालय, कोलकाता के सहयोग से पूर्वोत्तर राज्यों के 20 कलाकारों की प्रतिभागिता में कोलकाता में किया गया।

5.4.7. 'राष्ट्रीय बहुमाध्यमिक जनजातीय कला कार्यशाला' शीर्षक से बारह दिवसीय कलाकार कार्यशाला 26 मार्च से ललित कला अकादमी, नई दिल्ली तथा भारत भवन, भोपाल के सहयोग से भोपाल में आयोजित की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री मनोज श्रीवास्तव, सचिव, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश शासन द्वारा 26 मार्च, 2015 को किया गया। इस कार्यशाला में मिजोरम, त्रिपुरा, मेघालय, सिक्किम सहित भारत के विभिन्न राज्यों से 83 जनजातीय कलाकारों ने प्रतिभागिता की तथा चित्रकला, सिरेमिक, टेराकोटा व धातु शिल्प इत्यादि में अपने कौशल का प्रदर्शन किया।

5.5. **'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम :**

5.5.1. लाइधी शाबा : मणीपुर की पारम्परिक गुड़िया निर्माण कला पर एक दस दिवसीय 'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन 5 से 14 जून, 2014 तक किया गया, जिसमें श्री युम्नाम श्याम सिंह तथा श्री नील कमल ने 40 पंजीकृत प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदान किया।

5.5.2. लइधी शाबा : मणीपुर की पारम्परिक गुड़िया निर्माण कला पर एक अन्य दस दिवसीय 'करो और सीखो' संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन 16 से 25 जून, 2014 तक नर्मदा रेल्वे आफीसर्स क्लब, भोपाल में किया गया जिसमें श्री युम्नाम श्याम सिंह तथा श्री नीलकमल ओइनाम ने 15 पंजीकृत प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदान किया।

5.6. **संगोष्ठियाँ :**

जेण्डर इम्प्लीकेशन्स ऑफ ट्रायबल कस्टमरी लॉ : उत्तर–पूर्व सामाजिक शोध केंद्र गौहाटी, असम के सहयोग से एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 20 एवं 21 मार्च, 2015 को गौहाटी में किया गया।

पूर्वोत्तर की कलाकार द्वारा छमयम–दो कार्यक्रम में बुनाई तकनीक का प्रदर्शन।
Demonstration of weaving technique by the artist from North East at Chhamyan-II programme.

मध्यप्रदेश के राजभवन में इंगारामासं के निदेशक तथा अन्य अधिकारियों के साथ नागालैण्ड के कलाकार।
Artists from Nagaland with Director and other officials of IGRMS at Governor house of Madhya Pradesh.

विश्व देशज जन दिवस पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में मणीपुर के कलाकारों द्वारा प्रस्तुति का दृश्य।

A view of performance by the artists from Manipur during the cultural programme organised on World Indigenous People Day .

त्रिपुरा के जनजातीय कलाकारों द्वारा छमयम–दो के दौरान पारम्परिक नृत्य की प्रस्तुति।

Performance of traditional dance by the tribal artists from Tripura during Chhamyan-II.

5.3. **Exhibit of the month :** The following exhibits related to the culture of North-Eastern states were displayed in the series Exhibit of Month :

5.3.1. Wangamba Chenkhong- a wooden chair, one of the finest specimen that denotes the pride, power, supremacy and status of a Naga chief(May,2014)

5.3.2. Shami Lanmi Phi- a shawl of Naga community of Nagaland.(October,2014)

5.4. **Artist workshop:** During the year following artist workshops were organised with participation of artist from North-East:

5.4.1. A special programme entitled 'Jammu Utsav' on Art and craft traditions of various Indian States was organised at Jammu from 12th to 16th April, 2014 in which artists from Manipur also demonstrated their traditional craft skills.

5.4.2. As an attempt to conserve, document and promote the intangible cultural heritage a workshop on the traditional games of Kom tribe in collaboration with the Kom Cultural Dance and Research Centre, Khoirena Khuman, Manipur was organized from 2nd to 6th May, 2014. The workshop was inaugurated by Shri Yumnam Gyaneshwar Singh, Director, Tribal Museum and Research Centre, Imphal.

5.4.3. Sangrahalaya organised a National Tribal Art and Craft workshop at Bhubaneshwar from 19th to 28th November, 2014 for a period of 10 days in collaboration with Schedule Caste & Schedule Tribe Research & Training Institute, Govt. of Odisha, Bhubanewswar. Altogether 81 craft persons participated in the programme to showcase their mastery in different indigenous crafts like bamboo craft, mask making, basketry, textile, lacquer, metal, ion craft and painting, etc. from different parts of the country including Manipur and Assam.

5.4.4. A special programme entitled 'Chamyam-II' was organised at KIRTADS campus, Cevayar in collaboration with KIRTADS, Kerala from 4th to 8th December, 2014. In this programme 32 tribal artists from various states of India including Nagaland, Arunachal Pradesh and Assam demonstrated their craft skill through different crafts.

5.4.5. With an aim to visualize the vivid heritage of intangible culture of different Indian communities, the Museum organizes programmes and activities across the country. Continuing the series IGRMS organized a 15 day artists workshop entitled 'Glory of Lord Pakhangba' at Khurai Putthiba community Hall, Imphal from 4th to 18th December, 2014.

5.4.6. Five day long craft workshop entitled 'Ishanee' with an aim to introduce art traditions and the artisans of North-East to the people of other States was organised from 1st to 5th March 2015 at Kolkata in collaboration with Gurusaday Museum, Kolkata with participation of 20 artists from North Eastern States.

5.4.7. Twelve day long artists workshop entitled "National Multimedia Tribal Art Workshop" was organized from 26th March, 2015 at Bhopal in collaboration with Lalit Kala Academy, New Delhi and Bharat Bhawan, Bhopal.The programme was inaugurated by Shri Manoj Shivastava, Secretary, Culture, Government of Madhya Pradesh on 26th March. In this workshop 83 tribal artists from various states of India including Mizoram, Tripura, Meghalaya and Sikkim participated and demonstrated their skill on painting, ceramic, Terracotta, etching etc.

5.5. **'Do and Learn' Museum Education Programme :**

5.5.1. Laidhee Shaba: A ten day long 'Do and Learn' Museum Education Programme on "Traditional Doll making art of Manipur" was organised from 5th to 14th June, 2014 in which Shri Yumnam Shayam Singh and Shri Nilkamal imparted training to 40 registered participants.

5.5.2. Laidhee Shaba: Another ten day long 'Do and Learn' Museum Education Programme on Traditional Doll making art of Manipur was organised from 16th to 25th June, 2014 at Narmada Railway Officers Club, Bhopal in which Shri Yumnam Shayam Singh and Shri Nilkamal Oinam imparted training to 15 registered participants.

5.6 **Seminars :**

Gender Implications of Tribal Customary Law: A national seminar was organized on 20th and 21st March, 2015 at Guwahati in collaboration with North Eastern Social Research Centre, Guwahati, Assam.

5.7.प्रस्तुतिकारी कलाओं का प्रदर्शन :

5.7.1. पूर्वांचली : पूर्वांचली शीर्षक से 30 मार्च, 2015 को शुरू हुआ पांच दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम 3 अप्रेल, 2015 को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का आयोजन पश्चिम मध्य रेल्वे, जबलपुर के सहयोग से किया गया। असम, त्रिपुरा, मणीपुर तथा मेघालय के प्रतिभागी कलाकारों ने कार्यक्रम में उनकी सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं।

5.7.2. सप्तक : संग्रहालय ने माजुली, जोरहाट, असम में 24 से 26 अप्रेल, 2014 तक सप्तक शीर्षक से तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन नतुन कमला बाड़ी सत्र, माजुली के सहयोग से किया। इस कार्यक्रम में इस सबसे बड़े नदी द्वीप सहित विभिन्न पूवोत्तरी राज्यों के कलाकारों ने अपने पारम्परिक नृत्यों की झलकियाँ प्रस्तुत कीं।

5.7.3. पूर्वोत्सव : पूर्वोत्सव शीर्षक से तीन दिवसीय सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन 1 से 3 मई, 2014 तक संग्रहालय परिसर भोपाल में किया गया जिसमें भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों से कलाकारों ने लोक व जनजातीय नृत्यों की प्रस्तुति दी।

5.7.4. जनरंग : पूर्वोत्तरी राज्यों की प्रदर्शनात्मक कला प्रस्तुतियों पर केंद्रित तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन शिलांग में स्टेट सेन्ट्रल लाइब्रेरी, कला एवं संस्कृति विभाग, मेघालय सरकार, शिलांग के सहयोग से 17 से 19 जून, 2014 तक किया गया।

5.7.5. भारत के रंग : 'भारत के रंग' शीर्षक से एक पाँच दिवसीय सहयोगात्मक कार्यक्रम का आयोजन 15 से 19 नवम्बर, 2014 तक किया गया जिसमें असम, मणीपुर तथा सिक्किम के कलाकारों ने उनके पारम्परिक नृत्यों जैसे बिहू, ग्वालपड़िया, थांगटा, ढोल चौलम, दशावतार इत्यादि की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का आयोजन विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से जैसे 15 नवम्बर को जवाहर नवोदय विद्यालय, रातीबड़, 17 नवम्बर को जागरण लेक सिटी यूनिवर्सिटी, 18 नवम्बर को पश्चिम मध्य रेल्वे सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल, इटारसी तथा 19 नवम्बर को सेंट्रल प्रूफ इस्टेब्लिशमेंट, रक्षा मंत्रालय, इटारसी, साथ ही 16 नवम्बर, 2014 को इंगांरामासं परिसर में किया गया।

5.7.6. जमशेदपुर झारखंड में 15 से 18 नवम्बर 2014 तक टाटा स्टील टिस्को के सहयोग से एक सहयोगात्मक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में इंगांरामासं ने असम, अरूणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मिजोरम तथा नागालैण्ड के विभिन्न समुदायों के द्वारा पारम्परिक नृत्यों की प्रस्तुति के रूप में सहयोग किया।

5.7.7. छमयम-दो : किरटाड्स परिसर, सेवायर में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किरटाड्स, केरल के सहयोग से 4 से 8 दिसम्बर 2014 तक किया गया। इस कार्यक्रम में पूर्वोत्तरी राज्यों मेघालय, असम तथा त्रिपुरा के कलाकारों ने अपने पारम्परिक नृत्यों की प्रस्तुति दी।

5.7.8. लाई हराओबा : संग्रहालय ने पॉच दिवसीय लाई हराओबा उत्सव का आयोजन संग्रहालय परिसर में मणिपुर के शाही परिवार से सम्बद्य पुजारी-पुजारिन सहित मैतेई समुदाय के 30 कलाकारों को आमंत्रित कर किया। कलाकारों ने संग्रहालय परिसर में स्थापित मणीपुर के पुनीत वन संकुल उमंग लाई में पारम्परिक अनुष्ठानों की प्रस्तुति दी।

5.7.9. लोकरंग सांस्कृतिक उत्सवः संग्रहालय ने असम, मणीपुर तथा मेघालय से प्रस्तुतिकारी कलाकार दलों को प्रायोजित कर संस्कृति संचालनालय, मध्यप्रदेश राज्य शासन के साथ 26 से 28 जनवरी, 2015 तक प्रतिष्ठित 'लोकरंग सांस्कृतिक उत्सव' के आयोजन में सहयोग किया।

5.7.10. भारत के रंग : संग्रहालय की विद्यालयों हेतु शैक्षणिक एवं आउटरीच गतिविधियों के भाग के रूप में केन्द्रीय विद्यालय संगठन के सहयोग से भारत के रंग शीर्षक से दो दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन 29 एवं 30 जनवरी 2015 को केन्द्रीय विद्यालय रायसेन तथा सीहोर में किया गया। कार्यक्रम में असम, मणीपुर व मेघालय के कलाकारों ने प्रतिभागिता की।

5.7.11. ऋतु समृत : संग्रहालय द्वारा ओरोविल बाम्बू सेन्टर पॉडिचेरी के सहयोग से एक विशेष प्रदर्शनी तथा कलाकार कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसके दौरान 25 से 28 फरवरी, 2015 तक पूर्वोत्तरी राज्यों के कलाकारों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियॉ दी।

5.7.12. ईशानी : पूर्वोत्तर पर तीन दिवसीय एक विशेष कार्यक्रम 3 से 5 मार्च, 2015 तक गुरूसदय संग्रहालय कोलकाता के सहयोग से आयोजित किया गया। पूर्वोत्तर राज्यों के कलाकारों ने प्रतिभागिता की और सांस्कृतिक प्रस्तुतियॉ दी।

5.7.13.स्थापना दिवस समारोह के भाग के रूप में तथा क्षेत्रीय संस्कृतियों के समारोह की श्रंखला के अंतर्गत 'अरूणाचल प्रसंग' शीर्षक से अरूणाचल प्रदेश सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन किया गया। इसके छः भाग थे। (i) प्रस्तुतिकारी कलाओं का प्रदर्शन (ii) अरूणाचल प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत पर संगोष्ठी (iii) अरूणाचल प्रदेश के लोगों और संस्कृति पर केंद्रित 'अरूणाचल परिदृष्य' तथा 'अरूणाचल एक झलक' शीर्षक से दो विशेष सामयिक प्रदर्शनियाँ (iv) पारम्परिक कला व शिल्प का प्रदर्शन सह विक्रय तथा (v) पारम्परिक व्यंजन उत्सव । अरूणाचल प्रदेश के लगभग 150 लोक व जनजातीय कलाकारों ने भोपाल के लोगों को अपनी प्रभावशाली प्रस्तुतियों से मंत्रमुग्ध किया। दूसरी ओर लोगों ने उपखण्डों क्रमशः पारम्परिक कला व शिल्प का प्रदर्शन सह विक्रय तथा पारंपरिक व्यंजन में क्रमशः अरूणाचल प्रदेश की पारम्परिक शिल्प सामग्रियों को क्रय करने तथा स्वादिष्ट भोजन के आस्वादन का भी आनंद उठाया। (vi) वृत्त चित्र : नामी फिल्म निर्माता श्री मोजि रिबा द्वारा अरूणाचल प्रदेश की जनजातियों पर एक वृत्त चित्र का प्रदर्शन तथा व्याख्यान दिया गया।

5.8. **संग्रहालय लोकरूचि व्याख्यानः** श्रीमती जार्जुम एते, अध्यक्ष, इण्डियन काउन्सिल ऑफ चाइल्ड वेलफेयर, अरूणाचल प्रदेश ने 'एफर्ट्स ऑफ द ट्रायबल वूमेन ऑफ नार्थईस्ट इण्डिया टूवर्ड्स पोलिटिकल लीडरशिप : केसेस फ्रॉम पैट्रियार्कल अरूणाचल प्रदेश एण्ड नागालैण्ड' पर एक संग्रहालय लोकरूचि व्याख्यान दिया।

संग्रहालय द्वारा पांडिचेरी में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान अरूणाचल प्रदेश के कलाकारों द्वारा नृत्य प्रस्तुति।
Dance performance by the artists from Arunachal Pradesh during a programme programme organised by Museum at Pondicherry.

भारत के रंग कार्यक्रम के दौरान मणीपुर के कलाकारों द्वारा नृत्य प्रस्तुति।
A view of performance by the artists from Manipur during the programme Bharat Ke Rang.

संग्रहालय द्वारा पांडिचेरी में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान सिक्किम के कलाकारों द्वारा नृत्य प्रस्तुति।
Dance performance by the artists from Sikkim during a programme programme organised by Museum at Pondicherry.

मेघालय के कलाकारों द्वारा माजुली में आयोजित सप्तक कार्यक्रम के दौरान पारंपरिक नृत्य की प्रस्तुति।
Presentation of traditional dance by the artists from Meghalaya during the programme Saptak at Majuli.

भारत के रंग कार्यक्रम के दौरान मिजोरम के कलाकारों द्वारा चैरो नृत्य की प्रस्तुति।
Performance of Cherao dance by the artists from Mizoram during the programe Bharat Ke Rang.

माजुली, असम की महिलाओं द्वारा पारंपरिक करघे पर वस्त्र बुनाई का एक दृश्य।
A view of Textile weaving on traditional loom by the women of Majuli, Assam.

5.7. Performing Art Presentations:

5.7.1. Poorvanchali: A five day cultural programme entitled "Poorvanchali" which began on 30th March, 2014 concluded on 3rd April, 2014. The programme was organised in collaboration with West Central Railway, Jabalpur at Jabalpur. Participating artists from Assam, Tripura, Manipur and Meghalaya presented traditional dances.

5.7.2. Saptak: The Museum organised a three day programme entitled 'Saptak' from 24th to 26th April, 2014 at Majuli, Jorhat, Assam in collaboration with Natun Kamla Bari Satra, Majuli. In this programme artists from various North-eastern States of India including artists from this biggest reverine island presented a glimpse of their traditional dances.

5.7.3. Poorvotsav: Three day cultural festival entitled "Poorvotsav" was organised in Museum premises at Bhopal from 1st to 3rd May, 2014 in which artists from North-eastern States of India gave presentation of their folk and tribal dances.

5.7.4. Jan-Rang: A three day programme of performing art presentation focussed on North-eastern States was organised from 17th to 19th June, 2014 at Shillong in collaboration with State Central Library, Department of Art and Culture, Govt. of Meghalaya, Shillong.

5.7.5. Bharat Ke Rang: A five day collaborative programme entitled 'Bharat Ke Rang' was organised from 15th to 19th November, 2014 in which artists from Assam, Manipur, and Sikkim gave the presentation of their traditional dances like Bihu, Gwal Padiya, Satriya, Thang Ta, Dhol Cholam, Dashavtar etc. The programme was organised in collaboration with various institutes like Jawahar Navodaya Vidyalaya, Ratibad on 15th November, Jagran Lakecity University, Bhopal on 17th November, West Central Railway Senior Secondary School, Itarsi on 18th November, Central Proof Establishment, Ministry of Defence, Itarsi on 19th November as well as IGRMS campus on 16th November, 2014.

5.7.6. A collaborative programme was organised from 15th to 18th November, 2014 at Jamshedpur, Jharkhand in collaboration with Tata Steel TISCO. In this programme IGRMS supported with the traditional dance presentations by various communities of Assam, Arunachal Pradesh, Tripura, Mizoram and Nagaland.

5.7.7. Chamyam-II: a special programme was organised at KIRTADS campus, Cevayar in collaboration with KIRTADS, Kerala from 4th to 8th December, 2014. In this programme artists from north-eastern states of Meghalaya, Assam and Tripura presented their traditional dances.

5.7.8. Lai-Haraoba: The Sangrahalaya organized a 5 day 'Lai-Haraoba' festival in the Museum premises by inviting a group of 30 artists of Meitei community including priest and priestess from Manipur. Artists performed traditional rituals at various locations including 'Umang-Lai'- the sacred grove complex of Manipur installed in the Museum premises.In this programme artists from North Eastern state gave presentation of their tribal dances.

5.7.9. Lokrang Cultural Festival: The Museum collaborated the prestigious 'Lokrang' cultural festival with Directorate of Culture, Madhya Pradesh State Government by sponsoring performing artist troupes from Assam, Manipur and Meghalaya from 26th to 28th January, 2015.

5.7.10. Bharat Ke Rang: Two day long cultural event entitled 'Bharat Ke Rang' was organised 29th and 30th January, 2015 in Kendriya Vidhyalaya, Sehore and Raisen in collaboration with Kendriya Vidhyalay Sangathan as part of its activities for schools under education and outreach activities of the Museum. This programme was participated by performing artists from Assam, Manipur and Meghalaya.

5.7.11. Ritu Samrit: On the occasion of a special exhibition and artist workshop organised by the Museum in collaboration with Aurovil Bamboo Centre, Pondicherry during which folk artists from North East India gave cultural performance from 25th to 28th February, 2015.

5.7.12. Ishani: Three day long special programme on North-east from 3rd to 5th March 2015 was organised in collaboration with Gurusaday Museum, Kolkata. Artists from North Eastern States participated and gave cultural performances.

5.7.13. As part of Foundation Day celebration as also under the series of Celebrating Regional Cultures the cultural festival of Arunachal Pradesh entitled 'Arunachal Prasang' was organised. It had six components (i) Performing art presentations (ii) Seminar on Cultural Heritage of Arunachal Pradesh, (iii) Two special periodical exhibitions entitled Arunachal Paridrishya- focussed on People and Culture of Arunachal Pradesh and Arunachal Ek Jahalak (iv) traditional art and craft demonstration cum sale and (v) the ethnic food festival. Nearly 150 folk and tribal artists of Arunachal Pradesh enthralled the people of Bhopal by their tremendous performances. On the other hand people also enjoyed purchasing traditional craft items of Arunachal Pradesh and testing delicious food items under the sub sections traditional art craft demonstration cum sale and ethnic cuisine respectively. (vi) A documentary film and a lecture on Tribes of Arunachal Pradesh by noted filmmaker Shri Moji Riba was organised on the occasion.

5.8. Museum Popular Lecture: Ms. Jarjum Ete, President, Indian Council of Child Welfare, Arunachal Pradesh delivered a lecture on "Efforts of the Tribal Women of North-East India towards Political Leadership: Cases from Patriarchal Arunachal Pradesh and Nagaland".

गुरुसदाय संग्रहालय, कोलकाता में ईशानी के दौरान मेघालय के कलाकारों द्वारा पारंपरिक नृत्य प्रस्तुति।
Traditional dance performance by the artists from Meghalaya during Ishanee at Gurusadai Museum, Kolkata.

गुरुसदाय संग्रहालय, कोलकाता में ईशानी के दौरान नागालैंड के कलाकारों द्वारा पारंपरिक नृत्य प्रस्तुति।
Traditional dance performance by the artists from Nagaland during Ishanee at Gurusadai Museum, Kolkata.

कोम जनजाति के पारंपरिक खेलों पर प्रलेखन कार्यशाला का एक दृश्य।
Documentation workshop on traditional games of Kom tribe.

ईशानी कार्यक्रम के दौरान गुरुसदाय संग्रहालय, कोलकाता में निदेशक, इंगारामासं द्वारा संबोधन।
Address by Director, IGRMS at Gurusadai Museum, Kolkata during programme Ishanee.

मणीपुर के कलाकारों द्वारा गुरुसदाय संग्रहालय, कोलकाता में ईशानी कार्यक्रम के दौरान थांग टा की प्रस्तुति।
Performance of Thang Ta by the artists of Manipur at Gurusadai Museum, Kolkata during programme Ishanee.

अरुणाचल प्रदेश के कलाकारों द्वारा अरुणाचल एक झलक सामयिक प्रदर्शनी का भ्रमण।
Visit to periodical exhibition 'Arunachal Ek Jhalak' by artists from Arunachal Pradesh

अरुणाचल प्रदेश सांस्कृतिक उत्सव के दौरान जनजातीय कलाकार द्वारा पारंपरिक भोजन निर्माण।
Preparation of traditional food by a tribal artist during Arunachal Pradesh Cultural Festival.

6

सुविधा इकाईयाँ
Facility Units

संग्रहालय के अधोसंरचनात्मक विकास, शैक्षणिक एवं आउटरीच गतिविधियों तथा ऑपरेशन साल्वेज से संबंधित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये इंगारामासं के क्यूरेटोरियल विंग के अतिरिक्त कई सुविधा इकाइयाँ है जो उनके लिये निर्धारित कार्यो को करती हैं। इसमे सम्मिलित हैं संरक्षण इकाई, छाया इकाई, सिने–वीडियो इकाई, रेखा कला इकाई, बागवानी इकाई, प्रतिरूपण इकाई, संन्दर्भ ग्रंथालय, सिरेमिक इकाई, जनसम्पर्क इकाई, अभियांत्रिकी इकाई, राजभाषा एवं कम्प्यूटर इकाई ।

6.1. **संरक्षण इकाईः** संग्रहालय में एक रासायनिक संरक्षण इकाई का विकास भारत के असमान जलवायु क्षेत्रों जैसे हिमाच्छादित हिमालय से लेकर राजस्थान के शुष्क क्षेत्र एवं अत्यंत नमीयुक्त समुद्र तटीय क्षेत्रों से प्राप्त संरचनाओं एवं प्रादर्शो के संरक्षण हेतु किया गया है। संग्रहालय द्वारा अपने स्थायी संग्रह में लगभग 26 हजार संग्रहालय प्रादर्शो को संजोया गया है। संग्रहालय की संरक्षण इकाई ने कीड़ों और फफूंद इत्यादि जैव संरचनाओं के आक्रमण से सुरक्षा हेतु संग्रहालय में ही सुविधा विकसित की है। प्रादर्शो को धूम्रीकरण, कीटनाशकों के छिड़काव, एवं चूहामार दवाओं आदि का छिड़काव कर उपचारित किया जाता है। प्रादर्श भंडार तथा अंतरंग प्रदर्शनियों में उचित आपेक्षित आर्द्रता बनाये रखने के लिये सिलिका जैल कणों का प्रयोग किया जाता है। समीक्षावधि के दौरान संरक्षण इकाई ने पीतल, लोहा, मिश्रधातु, लकड़ी, चमड़ा, बांस, जूट, टेराकोटा, घास, एल्यूमिनियम, व्हाइटमेटल, तांबा, अस्थियों, पत्तियों, ऊन, एवं वस्त्रों से बने हुए 3394 प्रादर्शो की सफाई ,संरक्षण, परिरक्षण, एवं जीर्णोद्धार किया। इकाई मुक्ताकाश प्रदर्शनियों के प्रादर्शों की भी देख–रेख करती है। अवधि के दौरान इकाई के सदस्यो ने दिल्ली विश्वविद्यालय के मानवशास्त्र विभाग में नृजातीय प्रादर्शो के संरक्षण पर एक कार्यशाला आयोजित की तथा 117 मानवशास्त्रीय प्रादर्शो का संरक्षण किया। इकाई संग्रहालय परिसर में स्वच्छ भारत अभियान का संचालन भी कर रही है।

6.2 **छाया इकाई :** वर्ष के दौरान संग्रहालय की छाया इकाई ने संग्रहालय की सभी गतिविधियों जैसे प्रदर्शनी, कलाकार शिविर, प्रस्तुतिकारी कला का प्रदर्शन, संगोष्ठियॉ, कार्यशाला एवं अन्य विशेष क्षेत्रीय कार्यक्रमों का छाया प्रलेखन किया। इकाई ने प्रदर्शनियों एवं विभिन्न प्रचार सामाग्रियों हेतु विभिन्न आकार के 577 प्रिंट तैयार किये। ईकाई ने विभिन्न घुमंतु एवं सामयिक प्रदर्शनियों को भोपाल स्थित संग्रहालय परिसर एवं भारत के अन्य भागों में संयोजित करने में भी सहायता की। इकाई के सदस्यो ने जम्मू, हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, ओडिशा, पांडिचेरी, कोलकाता, नई दिल्ली इत्यादि भारत के विभिन्न स्थानों पर संग्रहालयीन कार्यक्रमों, क्षेत्र की संस्कृति एवं समुदायों के प्रलेखन हेतु क्षेत्रीय दौरे किये। इकाई ने ओडिशा के अनूठे सेंड आर्ट फेस्टिवल तथा जैसलमेर के सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाले जन–समूहों का छायाप्रलेखन किया। इसके अतिरिक्त छायांकन कार्यशाला के प्रतिभागियों को प्रशिक्षण भी प्रदान किया।

To achieve the targets related to Museums infrastructural development, Education and Outreach activities and Operation Salvage other than the curatorial wing the IGRMS has a number of facility units which function for various works identified for them. These includes- Conservation Unit, Photography Unit, Cine Video Unit, Graphic Art Unit, Horticulture Unit, Modelling Unit, Reference Library, Ceramic Unit, Public Relation Unit, Engineering Unit, Official Language and computer unit.

6.1. Conservation Unit: Sangrahalaya has developed a chemical conservation unit to conserve the structures and objects collected from different climatic zones right from the snow bound Himalayas to arid zone of Rajasthan and highly humid coastal areas of India. Nearly 26 thousand museum objects have been acquired by Museum in its reserve collection. The conservation unit of the Museum has developed in-house facilities to prevent attack from bio-organisms like insects and fungus etc. The objects are treated by using fumigation, spraying of insecticides, applying rodenticides and by giving anti termite root level treatment etc. Application of silica gel crystals is being carried out to maintain proper relative humidity both at specimen store and indoor exhibitions. During the period under review conservation unit carried out cleaning, conservation, preservation and restoration of 3394 objects made of brass, iron, bell metal, wood, leather, bamboo, jute, terracotta, grass, aluminum/ white metal, copper, bone, leaf, wool and textiles . The unit also looks after the exhibits of open air exhibitions. During the period members of unit organised workshop on conservation of ethnographic specimens at Deptt. of Anthropology, University of Delhi and carried out conservation of 117 ethnographic objects. The unit is also coordinating the Clean India Campaign in the Museum premises.

6.2. Photography Unit: During the year Photography unit of the Museum carried out photo documentation of museum activities such as exhibition, artist camps, performing art presentations, seminars, workshops and also other special field events. The unit also prepared 577 prints of various sizes for exhibitions and various propagation materials. Unit also extended assistance in mounting various travelling and periodical exhibitions in museum at Bhopal and at other places of India. Members of unit carried out tour for documentation of museum event, culture and communities in various parts of country including Jammu, Himachal Pradesh, Madhya Pradesh, Rajasthan, Odisha, Pondichery, Kolkata, New Delhi etc. The unit carried out photo-documentation of unique Sand Art Festival, Odisha and of the ethnic groups residing in border area of Jaisalmer. In addition it also imparted training of photography to the participants of photography workshop.

6.3 **सिने विडियो इकाई :** वर्ष के दौरान संग्रहालय की सिने विडियो इकाई ने भोपाल एवं भारत के अन्य स्थानों में आयोजित संग्रहालय के विविध कार्यक्रमों एवं गतिविधियों जैसे संग्रहालय लोक रूची व्याख्यान, प्रस्तुतिकारी कलाओं का प्रदर्शन, प्रदर्शनियाँ, कलाकार शिविर, संगोष्ठियाँ, कार्यशालाओं, बैठकों एवं चर्चाओं आदि का दृश्य–श्रव्य प्रलेखन किया। इकाई के सदस्यो ने भारत के विभिन्न समुदायों की जीवन शैलियों के वीडियो प्रलेखन हेतु कई क्षेत्रीय दौरे किये। अवधि के दौरान कुल 354 घंटों की आडियो–वीडियो रिकॉर्डिंग की गयी।

6.4 **रेखा कला इकाई :** संग्रहालय की रेखा कला इकाई ने कुछ संग्रहालय प्रकाशनों के डिजाइन तैयार किये। इकाई के सदस्यों ने सभी कलाकार कार्यशालाओं के आयोजन, प्रदर्शनियों के संयोजन, चित्र कला/पोस्टर प्रतियोगिताओं, प्रस्तुतिकारी कला के प्रदर्शन एवं सूचना पट्ट तैयार करने में सहयोग किया। इसके अतिरिक्त रेखा कला इकाई ने भारत में भू–सज्जा के प्रतिमानो पर 'भू–रंजना' शीर्षक से एक कलाकार कार्यशाला भी आयोजित की। इकाई ने प्रदर्शनियों के संयोजन एवं कार्यशाला के आयोजन हेतु जबलपुर, ग्वालियर व चित्रकूट, (मध्यप्रदेश), मैसूर (कर्नाटक), जगदलपुर (छत्तीसगढ़), भुवनेश्वर (ओड़िशा), सवाई माधोपुर (राजस्थान), तथा नई दिल्ली का क्षेत्रीय दौरा भी किया।

6.5 **बागवानी इकाई :** इकाई ने परिसर में विभिन्न प्रजातियों के फलों एवं फूलों का रोपण जारी रखा एवं संग्रहालय के विभिन्न भागो मे लैंडस्केपिंग कार्य, पौध हस्तांतरण, औषधि उपवन का संधारण, घास कटाई, बीज संग्रह, जैव कीटनाशकों का उत्पादन तथा पुनीत वनों का संधारण कार्य भी किया। इकाई ने परिसर मे दो दिवसीय पुनीत वन महोत्सव का आयोजन किया तथा 4000 पौधों का रोपण किया।

6.6 **प्रतिरूपण इकाई :** संग्रहालय की प्रतिरूपण इकाई ने विभिन्न प्रदर्शनियों के संयोजन एवं कलाकार कार्यशालाओं के आयोजन से संबंधित कार्य किये। इकाई ने ओड़िशा, राजस्थान एवं छत्तीसगढ़ के पाषाण शिल्पियों की एक कार्यशाला भी भोपाल व मैसूर में आयोजित की। इकाई ने संग्रहालय की विभिन्न प्रदर्शनियो एवं शैक्षणिक कार्यक्रमों के आयोजन में भी सहायोग किया। इकाई ने संग्रहालय दुकान के माध्यम से विक्रय हेतु पेपर मेशी के मुखौटो की प्रतिकृतियाँ भी तैयार कीं।

6.7 **सन्दर्भ ग्रंथालय :** इस वर्ष संग्रहालय के सन्दर्भ ग्रंथालय ने 172 नवीन पुस्तको, 297 भारतीय एवं 142 विदेशी शोध पत्रिकाओं के अंकों की अभिवृद्धि की। अवधि के दौरान पाठ्को को पुस्तकों/पत्रिकाओं का निर्गमन किया गया तथा संदर्भ सेवाएँ प्रदान की गईं। इकाई ने 225 पुस्तकों का वर्गीकरण, 1395 पुस्तकों की कैटलॉगिंग, 15365 आइटम्स का सूचीकरण इत्यादि किया। इकाई इमेल के माध्यम से नवीन अधिगृहणों तथा समाचारों की झलकियों की जानकारी भी उपलब्ध कराती है।

6.8 **सिरेमिक इकाई :** सिरेमिक इकाई ने विकलांग दिवस के अवसर पर अरूषि, भोपाल के सहयोग से 'मिट्टी के दोस्त' शीर्षक से आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में शारीरिक बाधाग्रस्त बच्चों को व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया। लगभग 40 शारीरिक बाधाग्रस्त बच्चों ने भाग लिया और मिट्टी में कलाकृतियाँ तैयार कीं। इकाई ने फरवरी से मार्च, 2015 तक कुम्हार कार्यशाला 'शिल्पायन' का भी आयोजन विभिन्न चरणों में किया। इकाई मिथक पथ प्रदर्शनी के विकास एवं रख–रखाव में कार्यरत रही। इसके अतिरिक्त इकाई के सदस्य विभिन्न कलाकार कार्यशालाओं तथा सामयिक प्रदर्शनियों में सक्रिय रूप से संलग्न रहे।

6.9. **जनसम्पर्क इकाई :** संग्रहालय की जनसम्र्पक इकाई प्रिंट एवं इलैक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से संग्रहालय की गतिविधियों एवं कार्यक्रमो की सूचना उपलब्ध कराने में संलग्न रही। एस एम एस तथा इमेल द्वारा भी आमंत्रण भेजे गए। इकाई ने लगभग 223 प्रेस विज्ञप्तियां, स्थानीय एवं राष्ट्रीय समाचार पत्रों में प्रकाशन हेतु तैयार किये और भेजे।

6.10. **अभियांत्रिकी इकाई :** संग्रहालय परिसर के सामान्य रख–रखाव के अतिरिक्त इकाई विशाल दशहरा रथ के प्रदर्शन हेतु प्लेटफॉर्म, वीथि संकुल में पार्किंग क्षेत्र तथा प्रदर्शनी क्षेत्रों तक पहुँच मार्ग के निर्माण में रत् रही।

6.11. **राजभाषा :** समीक्षा अवधि के दौरान संग्रहालय की राज भाषा इकाई ने कार्यालयीन कार्यो में हिन्दी के लोकप्रियकरण तथा कार्यान्वयन हेतु चार त्रैमासिक बैठकों का आयोजन किया। स्टाफ सदस्यों के लिये प्रतियोगी गतिविधियों के साथ 'हिन्दी पखवाड़ा' शीर्षक से एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संग्रहालय की राजभाषा इकाई ने हिन्दी तथा विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु विशेष कार्यक्रम भी आयोजित किये । इंगांरामासं की उपलब्धियों के मुकुट में एक रत्न वर्ष 2013–14 के लिये इन्दिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार के द्वितीय पुरस्कार के रूप में जुड़ गया। श्री ए.के. श्रीवास्तव, प्रभारी निदेशक, इंगांरामासं ने भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी से पुरस्कार प्राप्त किया।

6.12. **कम्प्यूटर इकाईः** संग्रहालय की कम्प्यूटर इकाई माह का प्रादर्श श्रंखला के अंतर्गत प्रदर्शित प्रादर्शों के सूचना पेनल्स के आकल्पन और मुद्रण में रत् रही। इंगांरामासं की कार्यालयीन वेबसाइट एचटीटीपीः//आईजीआरएमएस.कोम का संधारण इकाई द्वारा किया जाता है। इंगांरामासं अपनी गतिविधियों का प्रसारण तथा वर्चुअल दर्शकों के साथ संवाद फेसबुक/ग्रुप्स, ट्विटर, ब्लागर, फ्लिकर तथा यू–ट्यूब जैसी सोशल वेबसाइट के जरिये करता है। इकाई सभी अनुभागों को संगोष्ठियाँ/व्याख्यानों में संधारण सेवा के साथ–साथ इंटरनेट सुविधा हेतु भी सहयोग करती है। विभिन्न प्रदर्शनियों में मल्टीमीडिया गतिविधियों हेतु रखे सभी कियॉस्कों को संधारण भी किया जाता है। विभिन्न प्रदर्शनियों में मल्टीमीडिया गतिविधियों हेतु रखे सभी कियॉस्कों को संधारण भी किया जाता है। यह दीर्घाओं, प्रादर्शो, संग्रहालय से संबंधित प्रकाशनों जैसे पोस्टर, लेबल्स, फोल्डर, लीफलेट, पेनल, प्रमाण पत्र, वार्षिक प्रतिवेदन, न्यूज लेटर इत्यादि का प्रारूप तथा आकल्पन करती है। इंगारामासं, भोपाल में AEBAS उपस्थिति प्रणाली सुविधा 26 जनवरी, 2015 से शुरू की गयी है।

6.3. Cine Video Unit: During the year the Cine video unit of the Museum carried out the audio video documentation of various activities and programmes of Museum like, Museum Popular Lectures, programmes of performing art presentation, Exhibitions, Artist Camps, Seminars, Workshops, Symposia and Discussions etc. organised at Bhopal and at other places in India. Members of the unit also made several field visits for video documentation of life ways of different communities of India. Altogether 354 hrs of audio video recording were made during the period.

6.4. Graphic Art Unit: The Graphic Art unit of Sangrahalaya prepared designs for some of the museum publications. Members of the unit extended assistance in the organisation of all the artist workshops, mounting of exhibitions, painting/poster competition, programmes of performing art presentations, preparation of signages etc. In addition Graphic Art unit also organised an artists workshop entitled 'Bhoo Ranjana' based on patterns of floor decoration in India. They also made field visit to Jabalpur, Gwalior and Chitrakoot(Madhya Pradesh), Mysore(Karnataka), Jagdalpur(Chhattisgarh), Bhubneshwar (Odisha) Sawai Madhopur(Rajasthan) and New Delhi with regard to mounting of exhibitions and organisation of artist workshops.

6.5. Horticulture Unit: The Unit continued plantation of various species of fruits and flowers in the campus and it also undertook landscaping work in different areas of museum, transplanted seedling, maintained medicinal garden, to cut the grass, collected seeds, productions of bio-pesticide and maintained the sacred groves plantations. It also organised two day sacred grove festival in Museum premises and transplanted 4000 plants in the campus.

6.6. Modelling Unit: Modelling unit of the Museum attended the works related to mounting of various exhibitions and organisation of artist workshops. Unit also organised an artist workshop of Stone carver from Odisha, Rajasthan and Chhattisgarh at Bhopal & Mysore. Members of the unit also extended assistance in organising various exhibitions and education progerammes of the Museum. The unit also prepared replicas of masks in papermachi for sale through Museum shop.

6.7. Reference Library: This year the reference library of the Museum added 172 new books, 297 volumes of Indian and 142 volumes of foreign journals. During the period books/journals were issued and reprographic services were provided to readers. The unit carried out classification of 225 books, cataloging of 1395 books, Indexing of 15365 items etc. It is also providing information of new acquisitions and news clippings through email.

6.8. **Ceramic Unit** : Ceramic unit gave hands on training to Physically challenged children in the special programme entitled 'Mitti Ke Dost' on the occasion of World Disabled Day in collaboration with Arushi, Bhopal. Around 40 physically challenged children participated and created art forms in clay. The unit also organised potters workshop 'Shilpayan' from February to March, 2015 in phase manner. The Unit was engaged in the development and maintenance work of the exhibition Mythological Trail. In addition to this member of the unit were actively involved in the organisation of various artist workshops and periodical exhibitions.

6.9. Public Relation Unit: The public relation unit of the Sangrahalaya has been engaged in imparting and disseminating information about the programmes and activities of the museum through the use of print and electronic media. Invitations were also sent through SMS and email. The unit also prepared around 223 press notes for publication in local and national newspapers.

6.10. Engineering Unit: Other then the general maintenance work of the Museum premises the unit had been engaged in construction of display platform for huge Dusehra Rath, widening of parking area at Veethi Sankul and approach roads to the exhibition area etc.

6.11. Official Language: The official language unit of the Museum organised four quarterly meeting and workshops of official language for implementation and popularisation of Hindi in official works during the period under review. A special programme entitled 'Hindi Pakwada' was organized for the members of staff in which a number of competitive activities were held. The Official language unit of the Museum also organised special programmes for conservation and dissemination of Hindi and various regional languages of India. A feather in the cap of IGRMS, achievements had been added with award of IInd prize of Indira Gandhi Rajbhasha Puraskar for the year 2013-14. Shri A.K. Shrvastava, Director-incharge, IGRMS received the award from Honourable President of India Shri Pranab Mukherjee.

6.12. **Computer Unit:** The computer unit of the Museum had been engaged in designing and printing of information panels for exhibits displayed under the series of the exhibit of the month. IGRMS official website http://igrms.com is maintained by the unit. IGRMS disseminates its activity information and interacts with virtual visitors via social websites like Facebook/groups, Twitter, Bloger, Flicker and You Tube. Unit provides maintenance service to all the sections, support in seminars/lectures, as well as Internet facilities. All the kiosks kept in various exhibitions for multimedia interaction are maintained. It also layouts and designs galleries, exhibits, Museum related publications such as poster, labels, folder, leaflets, panels, certificate, annual reports, newsletter, etc. AEBAS attendance system started at IGRMS, Bhopal from 26th January, 2015 onwards.